॥ धर्मना द्रवाजाने जोवानी दिशा अथवा तत्त्वाऽतत्त्व विचारः

श्रीमदानंद विजय सूरीश्वर (मसिद्ध नाम श्री मदात्मारामजी) लघुत्रिष्येन अमरमुनिना संकालेतः॥

प्रसिद्ध करनार, मुनि अमरविजय जैनपाठशाला. गाम सीरशाला-तालुका आमलनेर. (जिल्ला खानदेशः)

सत्यविजय प्रेस,-पांचकुवा नवा दरवाजा,-अमदाबाद.

वीर संवत २४३४

संवत १९६४.

सने १९०७.

कींमत आना पांच.

॥ अनुक्रमणीका—॥

प्रकरण त्री जुं.

विषय	पृष्ट.
१ प्रंथोनी स्तुतिरूप मंगलाचरण दुहा.	و
२ सम्पक्त एटले साचाने साचु जाणवुं ते.	C
३ समिकतना नवभेद अने तेनो विचार.	6
४ नवभेदनी अयोग्यतामां जीवना भेदोतुं उदाहरण.	9 9
५ सम्यक्त्वना भेदो विषयमां श्लोकोथी स्वरूप.	१२
६ वाडीलालना लेखनो आपस आपसथी विचार.	१६
७ व्यवहार समिकत अने तेनो विचार.	१८
८ दीपक समिकित अने तेनो विचार.	२१
इति मकरण त्रीजानो विचार.	
हवे प्रकरण चोथुं२१ बोलतुं.	२३
९ पचीश (२५) बोलनो सामान्य विचार.	२४
० पचीश बोलना केटलाएक नमुना.	ર ઉ
१ ते केटलाएक नमुनानो विचार.	হ্ভ
२ ते पचीश बोलमांना ममाण विषयनो विचार.	ĘĘ
२ ते पचीश बोलमांना नयोना त्रिषयनो विचार.	३७
४ चार निक्षेपना विषय संबंधी वाडीलालनोज लेख.	88
५ निक्षेप संबंधी ढूंढकना लेखनो विचार.	५०
६ प्रथम नाम निक्षेप सूत्र अने तेतुं छक्षण.	५१
७ वीजो स्थापना निसेप, सूत्रपाठ अने तेनुं लक्षण.	લુ લુ
८ तृतीय दृष्य निश्लेष, सूत्रपाठ अने तेनुं स्रक्षण.	46
९ चतुर्थ भावनिक्षेप, सूत्रपाठ अने तेनं छक्षण.	5 ?

ર્રે૦	ढूढके बतावेला प्रथम नाम निक्षेपनी विचार.	63	
२१	ढुँढके बतावेला द्वितीय स्थापना निक्षेपनो विचार.	७०	
२२	दृंढके वतावेला तृतीय द्रव्य निक्षेपनो विचारः	6,0	
	ढूँढके बतावेला चाथा भाव निक्षेपनो विचारः	९८	
ર્પ્ર	चार निक्षेपना विषयनो तात्पर्यः	900	
२५	ढूंढकना सूत्र विषयिक चार निक्षेपनो विचार.	१०५	
२६	निक्षेपाना वोधना माटे किंचित् विचारः	900	
२७	सामायिक उपर घटावीने बतावेछ। चार निक्षेपोतुं स्वरुपः	११८	
२८	चार निक्षेपना विषये शंकित पुरुषनो पूर्व पक्ष.	१२५	
२९	हवे ते शांकित पुरुषतुं समाधानः	१२६	
0 5	फरीथी बीजी शंका अने तेनुं समाधान.	१२८	
3 %	वधीदुनीया पण चार निक्षेप माने छे. तेनो सामान्य		
	विचार.	१३१	
३२	दूंढक अने मूर्तिपूजकनो निक्षेपोना विषये संवाद.	४६१	
\$ 3	ने सिद्धांतोमां वर्णन करेली क्रियाओना निक्षेपोतुं		
	स्वरूप.	\$ 30	
६४	ढूंढके अगडं बगडं रूपे लखेलुं सात नयोनुं स्त्ररूपः	१५६	
३५	जिन मतिमा उपर स्तवन वे	१६७	
३६	सम्यक्त्वना ६७ वोलनुं प्रकरण ५ मुं.	१६९	
३७	एन वोल्नो सिद्धांत अने ढूंढकना लेखना मुकावलो		
	करीने वतावेलो छे.	16?	
३८	मिथ्यात्व नामना पकरण सातमानो विचार.	१८९	
३०	दृंढकना दया नामना धुव तारानुं स्वरूप.	१९६	

॥ ॐ नमो वीतरागायः॥ ॥ प्रस्तावनाः॥

पाठकवर्ग ! पार्वती नामनी ढूंढनीए, अनुयोगद्वारसूत्रनो किंचित् मात्र पण आशय समज्या वगर, गणधर महाराजाओथी विपरीत थइने, आपणी मतिकल्पनानी जाल पाथरवाने, सत्यार्थ-चंद्रोदय नामना पुस्तकनी रचना करी, अनेक लोकाने अंधाकुवामां नाखवानो उपाय कर्यो हतो. । ते पुस्तक मारा वांचवामां आववाथी, भव्य पुरुषोना हितमाटे तेतुं, किंचित् मात्र दिग्दर्शन थवा उत्तर लखी रह्यो हतो. । एटलामांज फरीथी एक बीजू पण पुस्तक जोवामां आव्युं, तेनुं नाम जोतां, सम्यन्क, अथवा, धर्मनो दरवा-जो, परंतु विचार करी जोतां, जैनमतना क्रम विना, तत्वना विष-योथी अस्त व्यस्तपणे घणेक ठेकाणे रचायछुं होवाथी, केवल भ्रम-चक्रमांज पाडी दे तेवुं मालम पडयुं. । आ पुस्तकनो रचनार कोन हुन्ने तेनी तपास करतां, प्रकाशक होवो जोइये, एम अर्पणपत्रिका विगरेथी निश्रय थयो. । केमके त्यां रुखेटुं छे के, पूज्यपाद श्रीं मणिलालजी महाराज म्हारी दक्षिणनी मुसाफरी वखते आप श्रीनां द्र्शन थतां आपे, सम्यन्क, विषयमां म्हारी केटलीक शंकाओनुं समाधान करी म्हने ते विषय उपर स्वतंत्र लेख लखवा शक्तिमान कर्यों, त्हेना स्मरणार्थे आ न्हानकडुं पुस्तक आप श्रीनेज सर्विनय अर्पण करवानी रजा लउंछं. इत्यादि

आभारी बाल, वा. मा. शाह,

आ अर्पणपत्रिका उपरथी स्पष्टपणे समजाय छे के, मकाशक अने ग्रंथनो योजक एकज पुरुष छे. । जणाववानुं एज छे के, अ-मारा ढूंढक श्रावको पण लखाण करवाने सर्व महा पुरुषोथी निरपेक्ष थई घणा आगल वधवाने जाय छे, परंतु एक पण वातना विचार पुक्तपणाथी कयी विना जैन सिद्धांतोथी, तेमज जैन ग्रंथोथी तदन विपरीतपणे मोटा मोटा विचारो करवाने उत्तरी पढे छे. । अने परमार्थ समज्या विना महान महान आचार्योने, तेमज गणधर महापुरुषोने पण, दूषित करीने जे मनमां आवे छे ते बकी कहाडे छे. । जेमके सत्यार्थचंद्रादेय पृष्ट ७५ ओ. ७ मां ढूंढनी पार्वतीए बकी काहडें छे के. स्त्रोंमें टाम टाम जिन पदार्थोसे हमारा विशेष करके आत्मीय स्वार्थभी सिद्ध नहीं होता है उनका विस्तार सैंकडे पृष्टों पर लिखवरा है.

अहीं विचार करवानी एटलोज छे के, गणधर महाराजाओथी पण, दृंढनी पार्वतीनी बुद्धि, केटली बधी आगल दोडीने गइ छे.। केमके शास्त्रोमां तो अेवुं लखेलुं छे के, एक सूत्रनो अर्थ पण अनंत छे, एवी महा गंभीरवाणीथी गणधर महाराजाओए सूत्रनी गुंधनी करेली छे, ते महा गंभीरवाणीने, सैंकडो पृष्टोंपर निरर्थकपणे कहेतां, ढूंढनीओ कांइ पण विचार कर्यो होय तेम जणातु नथी. । ते ढूंढनी पार्वतीतुंज अनुकरण, शाह वाडीलाल मोतीलाले पण कर्यु होय एम जणाय छे, परंतु आपणा दरजानो विचार बिलकुल कर्यो नथी, अने जे मनमां आव्यं ते बकी काहडी, केवल समज्या विना अडटा हु भइडी काहडयुं छे. । परंतु एक पण महापुरुषनो आश्रय लड़ ले-ख करवामां उतरेला होय एम जणातु नथी.। केमके तेओज उपोद-घातना पृष्ट. १२ मां लखे छे के, ज्ञाननो दरवाजो केम खोलवो रहेने माटे तेओ कुंचियो मुकता गया छे, एम लखी. पृष्ट. १३ मां लखे छे के, वाचक ए महाजनोनां नाम पुछवा इछा करशे, परंत ज्यां सर्व महाजनोनी नोंध एक सरखी छे त्यां कोनं नाम देवं। एम कही छेवटमां कहे छे के जो वाचकने नामनो कहोवाट न होय

तो ते नाम जैन छे, अने हुं तो वीतरागनी नोंघ ए नामथी ओल-खाववुं वधारे पसंद करुं छुं.

हवे आ लेखथा विचार करवानों ए छे के, ज्यारे जैननी के वीतरागनी नोंध करीने बताववी छे तेमां, वाडीलाल शाहने ग्रंथोतुं के सिद्धांतनुं नाम आपतां कोनी चोरी हती अने वाचकने नामधी कहोबाट थवानुं पण शुं मयोजन हतुं? केमके पुस्तकनुं नाम, सम्य-क्क, अथवा धर्मनो दरवाजो राखेलुं छे.। अने पृष्ट. १३ ना अंतमां शाह. वाडीलाल पण लखे छे के, धर्मरूपी मेहलमां प्रवेश करवा माटे. प्रथम सम्यक्तनो दरवाजो खोलवो जोइए, ए दरवाजेथीज महेलमां प्रवेश थाय छे, आ बात कोण कबुल नहीं राखे।

हवे आ लेख उपरथी पण विचार करो के, जे जैनधर्मरूपी मेह-लमां प्रवेश करवा माटे सम्यक्तरूपी दरवाजा खोलवाने तत्पर थवुं छे, ते कांइ जेवी तेवी वात नथी, केमके प्रथम दरवाजानीज खबर न पडे तो पछी महेलमां ते प्रवेश शी रीते थइ शके ! वास्ते सूत्रतुं के ग्रंथनुं नाम अवस्य बताववुंज जोइतुं हतुं. । केमके टाम टेकाणुं जाण्या विना सम्यक्तना लाभने माटे पाठकवर्गने कइ दिशामां फांफां मारवां.

अने जे जैन नाम आप्युं छे, तेमां पण विचार करवा जेवुं छे.। केमके जैनमां श्वेतांबर, अने दिगंबर, आ वे संपदाय घणा बखतथी जूदा पडेळा छे.। अने दृंढीया, तेमज तेरा पंथी, जे छे तेतो मूळ विनानी एक डालरूपे छे.। वास्ते सम्यक्तरूपी धर्मनो दरवाजो जोवाने, सूत्र अथवा महापुरुषोना ग्रंथरूपी दिशानुं अवलोकन जरुर थवुंज जोइतुं हतुं?

अगर तमो दिगंबरने कवृत्त न राखतां श्वेतांवरने कवृत्तराखता हशो तो ते मूर्तिपूजकोज छे ! अगर तमो जोरा जोरी कदी एम कहेवा मागशो के सनातन श्वेतांतरतो अमोज छीये ? तोपण अमो, सम्यक्त, अथवा धर्मना दरवाजानी कुंचीयोना कहेवा पालानां नाम, अने ते सिद्धांतनां नाम तो, अवश्यज एछीशुं ?

केमके जे आ कुंचीयो छे ते, अमारा जाणवा प्रमाणे दृंढकोए मानेलां बत्रीश सूत्र छे तेमां छेज नही ? तो पछी क्यांथी बतावी शकवाना छो ? वली आश्चर्य तो एज छे के, जेना घरनुं यत्रिकेचित लेंड भागो छो, तेनो मेल (अर्थात् हिशावे) तमाराथी मली सकतो नथी एटले, यद्वा तद्वा वकी तेमनेज चोरीनु आल मुकवा प्रयत्न करो छो, तो पछी तमारा जेवा गंठीछोडा ते बीजा कोने गणवा? केमके तमो प्रष्ट. २११ मां एम लखो छो के, मस्तानी भैशोए सूत्रोना शुद्ध जलने, ग्रंथोरूपी शींगडांथी डोइली कादवमिश्र कर्य छे.।।परंत आ अमारा किंचित मात्र करेला विचारथी, विचार करी जूवो के, मस्तानी भै-शोनं आचारण करवा वाला, तमारा ढंढको छे के बीजा कोइ छे ? केमके पथम तो ढुंढनी पार्वतीए, गणधर महाराजाओथी पण विप-रीत थइने, मस्तानी भैसनुं आचारण करी जैन सिद्धांतोना सैंकडो पृष्टोंना छेखने निरर्थक ठराव्याः । अने आ सम्यन्क नामना पुस्त-कनी रचना करी बधाए जैन तत्त्वोतं विपरीतपणं करवाथी तमो भैसान आचरण करवा तैयार थया छो ? केमके सर्व जैना चार्योने तुछ समजी, आपणी मृदमतिनेज आगल मुकवा तैयार थया छो.। माटे तमारी जैनतत्वो समजवामां बुद्धिनी प्रवलता केटली छे, अने तमो जैनतत्वोना विषयमां शं समजेला छो, तेतं दिगदर्शन थवा माटे, सूक्ष्मविचारोने छोडी दइ, केवल स्थूल विषयोनो विचार करी बताववा, क्रमाक्रम पणानो पण विचार छोडीने सूची धराना न्यायथी विचार करवाने उत्तरी पडीशः ॥ के जेथी वाचकवर्गने वांचतां अने समजतां पण कंटालो आवे नहीं.।

॥ धर्मना दखाजाने जीवानी दिशानु शृद्धीषत्रकः॥

पृष्ट. ओली. अश्रुद्धः श्रुद्धः ५-२१ सम्यक्तः सम्यक्तः ६--६ हिशावे हिशावः ११--६ सम्यत्कः सम्यक्त्व

आ सम्यक्त्व शब्द ज्यां आवे त्यां समजी लेवा अमी फरी श्रुद्धी पत्रकमां दाखल करता नथी।

पंचेडी पंचेद्री 23-28 करेलाज करलोन 2:-99 उप 2?-16 ऊप समासओ समासउ शैर्छाने शेलीने ४२---६ तेनाथी तनाथी 83=20 खरेखरा खरखेरा 85-98 मोहनघरमां मोहघरमां 89-6 जीवस्सवा जीवरसवा ६१-२१ हब्बावस्सयं दन्त्रावस्सयं 46-98 सूत्रपाठ **62-20** सत्रपाठ गद्धताए 84-90 गभ्दताए \$ --- \$ 3 ऋपभ रूपभ

एवी रीते ''ऋषभ" शब्द वधे ठेकाणे समजी छेवो वारंवार अमो नोंध करता नथीः

६६-२० युक्तपणाथी पुक्तपणाथी ६९-१६ यकाय ज्ञकाय ७३-१७ तिर्थक निर्थक

4	अनत	अनंत
१०३-१६	आवश्यकथा	आवश्यकथी
555-50	थयला	थयेली
9819\$	नो पाठ बेवडो थ	येलो छे ॥
? 80-? ?	ऋजुसूत्र	४ ऋजुसूत्र
१४७-११	आ ४ जे	आ जे
१५२—३	हयमां	हृद्यमां
१५२–२५	तरत मताना	तरतमताना
₹ ₹? −?∘	रू जुसूत्र	ऋजुसूत्र
१७१–२१	ह्रेस्वनो	लेखनो
१७६-१८	त्यारे ज्यारथी	त्यारे
\$68 5	गौत	गौतम
१९५-छेली	समाप्तोजातः	समाप्तीकृतः

जे सहजपणाथी समजी सकाय तेवा शब्दोनी नोंध अमोए शुधी पत्रकमां ग्रहण करवानी उपेक्षा पण करी छे त्यां पाटक वर्गने-ज सुधारीने वांचवानी भलामन करुछुः ॥

॥ ॐ नमो शांतमूर्त्तये ॥ ॥ धर्मना दुरवाजाने जोवानी दिशा. ॥

॥ मंगलाचरणः ॥

दुहा.

वीतराग वाणी नमुं, सूत्र समुद्र अगाध।
प्रवेश करवा तेहमां, प्रकरण नही छे बाध ॥१॥
परंपराना ज्ञाननो, छे जेह मांहि माल।
छोडी कुमित तेहने, चाले अपणी चाल ॥२॥
गोतां मारे तेहमां, मारि हाथ चउ फेर।
कुर्कट दरपणनी परें, मनमां बांधे जेर ॥३॥
साचेक्कं जूटा कहें, जूटेकु कहे साच।
अरथ अनथ मितथी किरि, नाचे बहु विध नाच॥४॥
माटे तत्त्व दिशा ग्रही, ग्रही वली गुरुना पाय।
भणे भणावे तेहनो, दुःख सब दुर पलाय॥ ५॥
समिकत निथ मिथ्यात्व छे, जिहां नही शुद्ध विचार।
दरवाजो नथी धरमनो, छे चउगितनुं द्वार ॥ ६॥
एम जाणी हुं आदरु, समिकत तणो विचार।
दिशावलोकन कारणे, लिख्युं बोल दुचार ॥ ७॥

१ सूत्ररूप समुद्रमां गोतां मारवाथी, अमारा ढूंढक, भाइयो प्रक-रणो जूवे छे तेनो पण आशय, गुरु विनाना समज्या वगर, दर्पणमां प्रातिबिंब जोवावाला अज्ञानी कुकडानी परे, प्रथकारो प्राति जेर बांधे छे, परंतु योग्य विचार करी सकता नथी. । दूहो. ३

॥ धर्मनो दखाजो, प्रकरण तीजानो विचार ॥

वाडीलाल--पृष्ट. ३४ ओ. ३ थी लखे छे के, गुरु पासेथी मेलववातुं हुं होइ शके ? समिकत, अथवा सम्यक्त, सम्यक् एटले रुडा प्रकारे जाणवापणुं ते. एनो सरल अर्थ एटलोज के साचाने साचा तरीके ओलखबुं ते, आ वात लखवानुं प्रयोजन ए छे के, साचाने साचुं जाणवुं तेनुं नाम सम्यत्क छे. ए वात सत्य छे. परंतु धर्मनो दरवाजो ए नामधी पुस्तकना छखवा वालाए, साचे साचुं समजेलुं छे के नहीं ते वातनी विचार अमारा लेखथी वाचकवर्ग करे ते वास्ते आ वात प्रथम टांकी बतावी छे, एमां विशेष विचार-वातं ए पण छे के, अक्षरना अर्थनी भूल हशे ते सामान्य मात्र के-इवाशे, परंतु जैनतत्वना विषयने, उलट पालटपणे कड़ी, केवल स्वदुराग्रहने स्थापित करवा प्रयत्न करेलो इसे तो ते, तदन विप-रीतरूप होवाथी, महा मिथ्यात्वज गणाशे. ते वात उपर वाचकव-र्गने, विशेषपणे ख्याल करी लक्ष राखवानो छे. प्रथम हमारा ढूंढक भाईयी, अक्षरोनो सामान्य मात्र अर्थ पण, उल्टरपणे समजे हे तो पछी तत्वना विषयने केवी रीते समज्या हुशे ! जुवो मकरण ३ जे, पष्ट ३६ ओ ११ मांथी तेमने लखेली गाथा अने अर्थ.

निध्य चरित्तं समत्त विहूणं, दंसणे उ भइयव्वं ॥ समत्त चरिताई जुगवं, पुव्वं च सम्मत्तं १

अधः-समिकित विना चारित्र (मुनिपणुं तेमज श्रावकपणुं) नथी, दर्शन अथवा समिकित ज्यां छे त्यां, उभय (समिकित अने चारित्र विना युगलमां प्रथम समिकित आवे छे.

हवे ए गाथानो खरो अर्थ हां छे ते स्रखी बतावीये छे. जूबो उत्तराध्ययन छापानुं, पृष्ठ ८९०। अध्ययन २८ मां.। सम्यक्त विना चारित्र न होय, तेमज सम्यक्त होता छतां पण चारित्रनी भजना, अर्थात् होय अथवा ना पण होय. जो कदापि सम्यक्त अने चारित्र एक साथे थयेछु होय, तो पण पूर्वमां सम्यक्तज थाय, अने पछीथी चारित्र माप्त थाय. एवा अर्थ टीकाकारे, तेमज टब्बाकारे, करेलो छे. तेन समज्या वगर कंइतुं कंइ लखी मार्थु छे. दर्शन कहो अथवा सम्यक्त कहो एकज अर्थ छे, तेने जुदा रूपमां मुकी केवल गोटालो वाली दीथो छे. अने ''दंसणोड मङ्घटवं'' अर्थात् दर्शने सित तु भजना, एम अर्थ करवानो हतो तेनो उभय छे, एम अर्थ करी देखाडेलो छे. आ एकज गाथाना अर्थमां केटलो बधो गोटालो छे, ते पाटक वर्गने विचार करवाथी जणाई आवसे. एज प्रमाणे, बधा जैन तत्वोने, विपरी तपणे लखी गोटालो वाली दीधो छे, ते अमारा स्थूल मात्रना विचारथी पण वाचक वर्ग सारी रीते समजी सक्ते, एवी आज्ञा राखी आ लेखनो पारंभ करेलो छे. ॥

हवे तत्त्वपणाना फरकनो विचार करवाने उतरी पडीये छे. वाडीलाल-पृष्ट ३८ ओ. ५ मीथी लखे छे के,

समिकतना ९ भेद छे॥

१ द्रव्य समिकतः । २ भाव समिकतः । ३ निश्चय समिकतः । ४ व्यवहार समिकतः । ५ निःसर्ग समिकतः । ६ उपदेश समिकतः । ७ रोचक समिकतः । ८ दीपक समिकतः ।।

विचार-प्रथम वाडीलाहने, अमो एटहुंज पुछीये छे के, जे तमोए आ त्रिजा मकरणमां, सम्बन्धना नव भेद हरूया छे ते अने प्रकरण पांचमामां, सम्बन्धना ६७ बोल हरूया छे ते तमारा मान्य करेला क्या सूत्रथी अथवा मान्य करेला क्या प्रकरण ग्रंथथी हरूया छे. अने तमोए ते सूत्रनुं अथवा प्रकरण ग्रंथनुं नाम कम बताउं

नथी, तेनं कारण कांड समजायुं नहिः शं तमोए तमारी अकलथी टरुया छे के मृत्तिंदूजकोना ग्रंथनी चोरी करीने टरुया छे, तेनुं वाचक वर्गने शं समजवं ? अमारा जाणवा मुजब तो, तमोए मृर्ति-पुजकोना प्रथमीज चोरी करीने लख्या होय एम जणाय छे. केमके तमाराथी थरेली मोटी मोटी भृहयो जोदामां आवे छे. अने भूल पण त्यांज थाय के, जे बीजाना घरनी चोरी करीने साहुकार बन-वाने जाय. अगर तमो सूत्रथी, अथवा तमारा मान्य करेला प्रकरण ग्रंथथी, लख्या होय तो तेने सर्वथा प्रकारथी मान्य राखी नाम प्रगट करो ? अगर तमो हरवसो के, अमोए अमारी अकलथी छस्या छे. के गमे त्यांथी टस्या छे. तमने पुछवानी शी जरुर छे. तो तेमां जणाववानुं एटटुंज के, धर्मना द्रवाजाने जोवानी इच्छा तो, सर्व पाणीमाइने होय छे, तेम ते धर्मना द्रवाजाने, जोवानी अमीने पण पूर्ण अभिलाषा थयेली छे. तेथी टाम टेकाणुं पछवानी जरुरज छे. तमो कहे सो के, अमोए तो अमारी अकलथी लख्या छे. तो तमारा अने अमारा जेवा अल्पमितना पुरुषो, आ जैनधर्म-नो दरवाजो बताबी शके निह, एवा निश्रय करी तमारा तुछ लेखनी उपेक्षा करी छोडी देइशुं. अने ते जैनधर्मना दरवाजाने जोवा सारु, सागर बुद्धिना महापुरुषोने ज, आश्रित थइशुं. अने तमो जेना घरनी चौरी करोछो तेमनेज, तुछकार करी, विचार शक्ति पामेलानी पंक्तिमां, दाखल थवा जावोछो, ए कांइ तमारु, सज्जन-पणातु रुक्षण जनातु नथी. आ अमारा करेला विचारने, एकांतमां वैसी निःपक्षपातपणे, विचार करी जोसो एटले मालम पडशे. अने जो खलपणुज धारण करी, वांकी नजरथी जोसो तो, उलटुज मालम पडशे. तेमां तो तमारी शकृतिनोज दोष गणाशे.

हवे मूलना विचार उपर आवीये छे.।। तमोए जेवी रीते

सम्यक्तना, नव भेद कर्या छे, तेवी रीते कोई दिन पण बनी शके नहीं, अने तेवी रीतना नव भेद, कोई आचार्योए कर्या पण नथीं, केमके तमारा करेला, छ भेद शुधी शास्त्रकारोए, विवक्षाना वश् थईने, जूदी जूदी रीते बबे भेदज करीने बतावेला छे. परंतु एकज विवक्षाथी सम्यक्तना, छ भेद करीने बतावेला नथीं, अने तेम बनी पण शके नहींज. केमके द्रव्य सम्यक्त, अने भाव सम्यक्तमां, जेटला सम्यक्तना भेद कर्या होय, तेटला बधाए भेदोनों, समावेश करी शकाय छे, तेथी बीजा बधाए भेदों, तेना अदांतर भेदोंज गणाय, माटे द्रव्य सम्यक्त, अने भाव सम्यक्त, ए वे भेदज, विवक्षाना आधीनथी न्यारा गणाय, केमके द्रव्यसम्यक्तमां भाव सम्यक्तनो समावेश न थई शके. अने भावसम्यक्तमां, द्रव्य सम्यक्तनो समावेश न थई शके. अने भावसम्यक्तमां, द्रव्य सम्यक्तनो समावेश न थई शके. माटे विवक्षाना वश्थी, सम्यक्तना ए बे भेदोज, गणाय छे.

जमके विवक्षाथी, जीवना बवे भेट करीये, जीव १ संसारी अने २ मुक्तः । अथवा ३ सृक्ष्मः अने ४ बाद्रः । अथवा ५ त्रस अने ६ स्थावरः । आ जे जीवना छ भेद छे ते, ववे भेदनी न्यारी न्यारी विवक्षाथी, करीने बताच्या, तेने, जीवना छ भेद कहीने, खीचडो करी शकाशे ! कोइ दाहाडो ५ण, छ भेद नहीं कही शकाय मात्र विवक्षाथी ववे भेदज, कह्या जाय, ५ण एवी रीतना विवक्षाथी करेला ववे भेदोनो, एक ठेकाणे खीचडो न करी शकायः अगर जो तेम थतुं होत तो, ववे भेदैं न्यारा पाडीने न कहेतां, एकज जगोपर छ भेद करी बतावतां, शास्त्रकारोने, शुं अडचण पडती

[?] अनेक प्रकारथी शिष्यने, बोध करावव नी इछाना आधिन थई नाना प्रकारथी करेला भेदो समजवा.। आ प्रकारे सर्वेच समजी लेवं.।

हती. ? इस वास्ते तमारो हेख विचार पृर्वकज नथी। ॥ जुवी शा-स्नकारोनो अभिमायः

> सम्यत्कं चैकधाजीवे, तत्त्व श्रद्धानमेवच ॥ निश्रय व्यवहाराभ्यां, दुर्शनंच द्विधामतं. १॥

अर्थः—तत्त्वना श्रद्धान मात्रनी विवक्षाथी, सम्यत्कनो भेद एकज गणाय. अने निश्चय, अने व्यवहारनी विवक्षाथी, तेज सम्यत्कना, वे भेद पण करी शकाय छे. ? ॥ एमां समजवानुं ए छे के,
वेतना छक्षणथी जेम जीवनो एक भेद गणाय. तेम श्रद्धान मात्रथी,
सम्यत्कनो पण, एकज भेद गणाय. केमके ज्यारे चेतना छक्षणथी
जीवनुं, ओछखाण कराववा मांडयुं. तो तेमां सर्व जीवोनो, समावेश थइ जवाथी, एकज भेद गण्यो. तेमज श्रद्धान मात्रना छक्षणमां
पण, सर्व सम्यत्कना भेदोनो, समावेश थइ जाय छे. ॥ तेवीज रीते
निश्चय अने व्यवहारना सम्यत्कमां पण, वधाए सम्यत्कना भेदोनो,
समावेश करी शकाय छे. जेम संसारी अने मुक्तः अथवा सृक्ष्म
अने वादर. अथवा त्रस अने स्थावर. जीवोमां जूदा जूदा प्रकारना
विवेचनथी सर्व जीवोनो समावेश करी शकीये छे. तेवीज रीते,
आ सम्यत्कना विषयमां पण, जूदी जूदी विवक्षाथी, छ भेद शुधी,
बवे भेद, भिन्न भिन्न पणे समजवाना छे. परंतु अडद मगने भेगा
भइडी काहाडवाना नथी.

हवे जूवो निःसर्ग अने गुरूपदेश सम्यत्कना पण, वे भेद, विवक्षार्थी भिन्नपणेज वताव्या छे. यथा--

> तीर्थकृत्योक्त तत्त्वेषु, रुचिः सम्यत्कमुच्यते ॥ लभ्यते तत्स्वभावेन, गृरूपदेशतो यथा ॥ १ ॥

अर्थ:-तीर्थकर भगवानना कहेला, तत्त्वोमां जे रुचि, तेतुं नाम सम्यत्क छे. अने तेनी प्राप्ति, वेज प्रकारथी थवानो संभव छे. परंतु त्रिजा प्रकारथी, प्राप्ति थवानो कोइ रीतथी पण संभव नथीः एक तो स्वभावथी पण, सम्यत्कनी प्राप्ति थाय छेः अने वीजी रीते, गुरु महाराजना उपदेशथी प्राप्त थाय छे. ॥ १॥

हवे एमां विचारवानुं ए छे के, सम्यत्कना, तमो गमे तेटला बीजा भेट, विवक्षायी करो, पण आ वे प्रकारथी त्रिसरा प्रकारे पाप्त थवानुज नथी. आ वे भेट, जे बताव्या, ते पाप्तिनी विव-क्षायी करीने बताव्या छे. परंतु तमारी तरें स्वीचडो रांध्यो नथी.

हवे गुणनी विवक्षाथी, त्रण भेट, फरीथी पण, करी वतावे छे. ॥ यथा.

सम्पक् दर्शनमेतच, गुणतिस्त्रिविधं भवेत् । रोचकं दीपकं चैव, कारकं चेति नामतः । ? ॥

अर्थ:—आ सम्पक् दर्शनना, गुणपणानी विवक्षाथी, त्रण मकारना भेट पण, करी शकाय छे. १ रोचकः । २ दीपकः । अने
कारकः ॥ १ ॥ एमां समजवानुं एछे के, जेम, स्त्री, पुरुष, अने
नपुंसकः, । एम जीवना त्रण भेट करतां चोराशीलाख जीवयो।निना,
जीवोनो समावेश करी शकाय पण जीव, एक वहार रहे नहीं. तेम
आ त्रण प्रकारना सम्यत्कमां पण, सम्यत्कना जेटला भेट अवांतरथी करीये, ते बधाए भेटोनो समावेश थइ जायः ॥ इहां शधी
तमारा नव भेद वतावेलानु, सामान्य स्वरूप कही बताव्युं ॥ हवे
एज विषयमां किंचित स्पष्ट करी बतावीये छे. ॥ जेमके जीवनो
एक भेद—चेतना लक्षणथीः ॥ जीवना वे भेद—-१ संसारीने २
मुक्तः । अथवा सूक्ष्म । ने वादरः । अथवाः त्रस ने थावरः ॥ जीवना
त्रण भेद—-१ स्त्रीः । २ पुरुषः । ३ नपुंसकः ॥ जीवना चार भेद
-१ देवताः । २ मनुष्यः । ३ तिर्थंदाः । ४ नारकीः ॥ जीवना
पांच भेदः । — एकेंद्रीः । वे इंद्रीः । तेरेंद्रीः । चोरेंद्रीः । पंचेंद्रीः ॥

जीवना छ भेट्---१ पृथ्वीकायः २ अप्कायः । ३ तेउ कायः ४ वाउकायः । ५ वनस्पतिकायः । ६ त्रसकायः ॥

हवे आजे छ प्रकार सुधीमां, न्यारी न्यारी विवक्षाथी,जीवोना भेद करी बताच्या, ते बधानो सर्वालो करीने, जीवना २५ भेद करी शकीशुं! अने एवी शेते जीवना २५ भेद हरूतां योग्य पण थड शक्ते ! कोड दिन एम रुखी पण न शकाय. अने रुखवाथी योग्य पण न थाय. अने कोइ समज्या वगर स्रखे तो ते जैनमार्गनी शैलीथी विपरीतज गणाय. तेमज सम्यत्वना नव भेदमां पण थयेलुं छे. जुवो के. प्रथम श्रद्धान मात्रनी विवक्षार्था, सम्यत्कनो एकज भेद, शास्त्रकारोए बताव्योः ॥ फरीथीः निश्चयः अने व्यवहारनी विवक्षाथी, सम्यत्कना वे भेद, करीने वताच्या. वली पाप्तिनी विव-क्षाने लड्ने पण, वे भेद, न्याराज कही वताव्या,। जेमके. १ निःसर्ग सम्यत्कः । २ अने गुरूपटेश सम्यत्कः ॥ एज श्माणे १ द्रव्य सम्यत्कः २ भाव सम्यत्कः ॥ अने एज सम्यत्कने, गुणनी अपेक्षा-थी, त्रण प्रकारथी कहुं. जेमके. १ रोचक सम्यत्कः । २ दीपक सम्यत्क. । ३ कारक सम्यत्क । अने एज सम्यत्कना, विवक्षार्थी, पांचभेट पण करी बतावेला छे, ते पांच भेट्ने, तमोए पृष्ट. २१८ थी सम्यत्कनी स्थिरता नामना ९ मा प्रकरणमां, भित्ररूपे, सम-ज्या विना वर्णव्या छे. ॥ यथाच श्लोकः

> आटावोपशमिकंच, सास्वादनमथाऽपरं क्षयोपशमिकं वद्यं क्षायिकं चेतिपंचधा ?

अर्थ:--१ औपशमिक सम्यत्कः । २ सास्वादनः । ३ क्षयो-पशमिक सम्यत्कः । ४ वेदकः । ९ क्षायिक सम्यत्कः ।

आ पांच भेद पण, विवक्षाथी सम्यत्कनाज करेला छे. तेनो परमार्थ हुं छे, तेनुं कांड पण तमो समज्या नथी, तेथी स्थिरता नामनुं ९ मुं प्रकरण जुदू पाडी, अडद, मग भेगा भइडी जवा जेवुं करी मुकेछुं छे ।। केमके तमोए पृष्ट. २१८ मानी नीचेनी पंक्तिमां एवं लख्यं छेके.। सास्वाटन समकित, एक भवमां, उत्कृष्ट पांच वार फरसी मिथ्यात्वमां पडे.। आ लखाण तमारुं केवल समज्या वगरनंज छे, कारणके मोक्ष जता सुधी जे जीव, अर्द्ध । पुरुगल पराव-र्त्तन संसारमां भ्रमण करे, ते जीवने त्यां सुधीमां पांचज वार सा-स्वादन समिकतनी फरसना थायः एवो शास्त्रकारोनो स्पष्टपणे लेख छे, परंतु एक भवमां, पांचवार फरसे एवो छेख नथी, अने ए सा-स्वादन समकिवालो जीव, अर्द्ध पुद्गल परिश्रमण करे, एवं तो तमो पण लखो छो, त्यारे विचार करो के, एक भवमां पांचवार फरशे तो पछी अर्द्ध पुरुगल कालमां केटली वार फरसे, तेनो पण कोई नियम तो होवोज जोड़ये ! अने पृष्ट. २१९ मां, लखो छो के, क्षयोपशम समाकित, एक भवमां, उत्कृष्ट असंख्यवार आवे.। ए हेख पण तदन विपरीतज छे, केमके क्षयोपशम सम्भितवाहो जीव, मोक्ष जता सुधी जे अनंत संसार भ्रमण करे: तेमां असंख्यबार ते जीवने ते क्षयोपशम समिकत उत्कृष्ट्रपणे आवे, परंतु एक भवमां असंख्यवार आवे, एवो सिद्धांतमां हेख नथी। माटेज अमो कही ये छे के, सम्यत्कना धिषयमां, सद्गुरुनी प्रसादी ठीधा वगर, मू-त्तिंपुजकोना ग्रंथोनी चोरी करीने, तमो सम्यत्कना विषयने हेई भाग्या छो. तेथीज तमाराथी, कडीबंध बेसती थई सकती नथी. तोपण आपणे आपतो सम्पत्कधारी थई वेटा छो. अने जे मुर्त्तिप-जकोना ग्रंथोनी चोरी करी लेख लखो छों, तेमणे तो चोर ठराववा प्र-यत्न करो छो, ते तो तमो मोटामां मोटं साहासिकपणुंज धारणकरो छो, हवे तमाराज लेखथी परस्परनो विचार पण आ सम्यत्कना विषयमां किंचित मात्र करी बताबीये छीये.।

जूबो के. पृष्ट. ३९-(१) पेहलु द्रव्य समिकत-श्री वीत-रागदेव अगर तेमनी आज्ञानुसारी मुनिराजनो, बोध सांभली कोइ माणस, मात्र श्रद्धाथी तेने सत्य माने. इत्यादि.।। पृष्ट. ४९ मां--(६) दुं उपदेश समिकत-गुरु आदिना उपदेशे करीने मलेलुं समिकित ते.॥ पृष्ट. ३९ मां-(२) शिजु भाव समिकित. जीव अजी-वादि नवतत्व काइया आदि पचीश क्रियाए विगेरे अनेक भेद जाणी, शुद्ध अंतः करणथी सर्दहे ते.। पृष्ट. ४० मां-(३) त्रिजु निश्चय समिकित, ज्ञान दर्शन-चारित्र-तपः ए चारने विषे, निश्चय व्यवहारादि २५ बो-लनुं स्वरूप जाणे तेवा माणसनुं।।—

प्रथम आ बवे भेदनो विचार करीए छे के तमोए, १ ला द्रव्य सम्यत्कमां, अने ६ टा उपदेश सम्यत्कमां फरक करी बताव्यो ! तमो एज कहेसो के, बीतराग देव अने मुनिनो बोध, द्रव्य सत्यस्कमां । अने छठा भेदमां, एकछा गुरुनो उपदेश होय, तो शुं आ छठा भेदमां वीतराग देवनो बोध काममां आवतो नथी के ? जे भेद करीने बतावो छो. अने हुं वीतराग देव गुरुपणामां दाखल करी क्षकाशे नहीं के ? ते पण छट्टा उपदेश स-म्यत्कमां, आदिपदथी तमोए दाखल तो करेलोज छे. तो पछी तमारा लेखथी द्रव्य सम्यन्कमां, अने उपदेश सम्यत्कमां, श्रो भेट करीने बताववाने मागो छो ? तेनो विचार तमोज एकांतमां वेसी ने करी जुवो, के तमारुं छखाण तमाराथी योग्य रीते, जैनमार्गनी शैली प्रमाणे, थयेऌं छे के नहीं ?। आवी रीते विचार विनानो हेख हस्वी, विचार शक्ति पामेलानी पंक्तिमां तो भलवाने जावो छो, अने जे दृक्षनी डाल उपर वैसी आराम भोगवो छो, तेन आपणी अल्पबुद्धिनो कुहाडो, हाथमां लेइ कापवानै तैयार थया छो. पछी कया विचारवाला पुरुषोनी पंक्तिमां भलवाने मागो छो।

कोइ मुंडित होत तो वधारे शिक्षानां वचन कहेतो. तमने तो मात्र एटलुंज कहुं छु के, विचार पुक्त कर्या वगर, लांबां लांबां जे पगलां भरोछो ने, दुर्भवी अभवी आदि वचनोने वापरो छो, ते तमाराज आत्माने दुःखदाइ थरो. बीजा कोइ दुर्भवीने अभवी थवाना नथी. आ द्रव्य सम्यत्क, अने उपदेश सम्यत्कनो, विचार किंचित्मात्र करी बताच्यो। हवे भाव सम्यत्क. अने निश्चय सम्यत्कनो, विचार तमाराज लेखथी किंचित् मात्र करीये छे. ।। भाव सम्यत्कमां जीवादि नव तत्त्वः अने पचीश क्रिया विगेरेने जाणीने सर्दहेः ॥ अने निश्चय सम्यत्कमां, ज्ञान, दर्शन, चारित्र तपः ए चारने विषे, निश्चय व्य-वहारादि २५ बोलतुं स्वरूप जाने। एमां विचारवातुं ए छे के, ए बे सम्यत्कना विषयमां तमोए भेद शो करी बताव्यो, ते कांइ समजायुं नहीं तमो एज केहशों के, भाव सम्यत्कमां नव तत्वादिकने सर्दहे. अने निश्चय सम्यत्कमां ज्ञानादिक चारना स्वरूपने जाणे, तेम कहे-वाने तमोने अवकाश नथी. केमके भावसम्यत्क्रमां पण नवतत्त्वादिक जाणी शुद्ध अंतःकरणधी सर्दहे एम टखेटुं छे अगर तमी एम कहेशो के, प्रथमना भाव सम्यत्क्रमां सर्दहवापणुं छे अने निश्रय-सम्यत्कमां सर्वहवापणं अमोए छल्यं नथी, ते पण कही शकाशे नही. केमके ज्यां सर्देहवापणुं नही होय त्यां समिकतपणुं नथी रेहतुं, तो निश्चय सम्यत्कपणुं क्यांथी रहेशे. छेवट तमो एज केहशो के निश्चय सम्यत्क आव्या पछी पाछुं जतुं नथी, अने भावसम्यत्क पाछुं जतुं रहे छे, ते पण तमारु केहवं समज्या वगरनंज छे. । केमके भाव-सम्यत्कमां, अने निश्चय सम्यत्कमां, उपशम सम्यत्क, क्षयोपशम सम्यत्क, अने क्षायिक सम्यत्क, ए त्रण मुळ भेडोनो समावेश थाय. तेथी भाव सम्यत्कमां, तेमज निश्चय सम्यत्कमां, एक शायिक सम्य-त्क विना, बीजा सम्यत्कनो एवो निश्चय नथी थइ शकतो के, आ-

वेलुं जायज नहीं. मात्र एटलोज निश्चय करी सकाय छे के, ते जीव अंते मोक्षगामी जरुरज थाया। वास्ते जे भाव छे, तेज निश्चय छे, अने निश्चय छे तेज भाव छे. मात्र नामना भेदथी तमोए समज्या वगर कटी मारेलुं छे. एमां विशेष ए छे के, द्रव्यसम्यस्कनी साथ भाव सम्यस्क जोडेलुं छे.। अने निश्चयसम्यस्कनी साथे, व्यवहार सम्यस्कने विवक्षाना आधीन थइ जोडीने बतावेलुं छे.। परंतु बन्ने प्रकारनी विवक्षामां अर्थभाये एकनो एकज निकलवानो छे. मात्र विशेष ए छे के, निश्चय वस्तु शुं चिज, अने भाववस्तु ते शुं चिज छे, तेना परमार्थनी तमने खबर न पडवाथी, आपणा मन गोठतो अर्थ करीं, पंडिताइ मगट करी छे.। परंतु एटलो शोच न कर्यो के, एवी जुटी पंडिताइ कोण चालवा देशें.॥

वाडीलाल. पृष्ट. ४३ मां ४ धु व्यवहार समिकत, संबेगादि पांच लक्षणथी प्रवर्त्तवुं ते. (एक पुस्तकमां लख्युं छे के-६७ बोलमांना ६१ बोलना गुणे करी सहित उपश्चम. अने क्षयोपश्चम. समिकती जीवतुं जे समिकत ते व्यवहार समिकतः।

विचार-आ लेख पण प्रकाशकनो समज्या वगरनोज छे, केमके नतो व्यवहार सम्यत्क समज्या छे, तेमज नतो निश्चय सम्यत्कने समज्या छे, तेमज नतो सम्यत्कना लक्षणनो अर्थ पण समज्या
छे.। केमके, उपश्चम सम्यत्क, अने क्षयोपश्चम सम्यत्क, ए वन्ने भेद
व्यवहारसम्यत्कना घरना नथी तेतो निश्चय सम्यत्कना घरना कहो,
आर भाव सम्यत्कना घरना कहो, तो पण अर्थ तो एकनो एकज छे.
परंतु जुदापणुं कांइज नथी.। कारण के जैन सिद्धांतोमां मुख्यपणाथी
जीवना निज गुण रूप उपश्चम, क्षयोपश्चम, अने क्षायक, ए त्रणज सम्य
त्क छे.। एने भाव सम्यत्क कहो अगर निश्चय सम्यत्क कहो। परंतु
उपश्चमादि श्रण भाव सम्यत्क सिवाय मुख्यपणाथी सम्यत्कनो चोथो

भेदज नथीं। अने बीजा ज जे भेदो शास्त्रकारोए करेला छे ते पण वि-वक्षाना वश्यी थयेला छे, तोपण व्यवहार सम्यत्कना छोडीने, उप-शमादिक लक्षण पूर्वक जे सम्यत्कना भेदो छे ते बथाए भेदोने समावेश ए त्रण सम्यत्कमांज थाय छे। जूबो तत्त्वार्थ महासूत्रं—-औपशासिक क्षायिको भावो सिश्चश्च जीवस्पस्वतत्वं

अर्थ-अपश्चमिक, क्षायिक, अने मिश्र ए त्रण तत्त्व क्षयोपश्चमथी, थयेला अथवा कर्मना क्षयंथी थयेला ए जीवना स्वतत्वरूप भाव छे, अने एज रूप सम्यत्क छे. अने एज रूपथी चारित्र पण छे. अने ज्ञान छे ते वे भावधी छे, एकतो क्षयोपशामिक, अने बीज क्षायिक भावथी, वास्ते भावरूपथी, के निश्चयरूपथी, उपश्वमादिक रुक्षण पूर्वक. जे जे दर्शन (सम्यत्क) ना भेदो अने भावरूपथी, के निश्चयरूपथी, जे जे चारित्रना भेटो वर्णवेला छे.ते बधा.ए त्रण भावमांनाज भेटो छे.। अने ज्ञानना जे जे भेटो छे ते क्षयोपाशमिक अने क्षायिक मात्र बेज भाव रूपना छे.। परंतु ज्ञान दुर्शन अने चारित्ररुप जे-जीवना निज गुण छ ते चोथा भावथी छेज नहीं, । आ वधु कहेवातुं प्रयो-जन ए छे के, उपशम, अने क्षयोपशम, सम्यत्क छे, ते व्यवहार् सम्यत्क नथी परंतु निश्चय सम्यत्क छे, अने संवेगादि पांच लक्षण छे तेतो, निश्रय सम्यत्कने जणाववावालां तेना चिन्हरूपे छे, जेमके, धुमाडाना गोटा निकलवाथी जाणी शकीय के, अहीं आग्ने बली रही छे, परंतु धमाडानेज अग्नि नहीं कही शकीये, तेम संवेगादि पांच लक्षणने, सम्यत्क पण न कही शकाय. ॥ अने ए पांच लक्ष-णो पण, जेने निश्रय सम्यत्कमांतुं एकाद सम्यत्क प्राप्त थयुं होय, तेनेज ए चिह्नरूपथी प्रगट होय, परंतु व्यवहार सम्यक्त वालाने जरुर पगटक्षपे होय, एम कोइ दाहाडो पण निश्रय न करी शकाय.। हवे मृलना विषयपर आवीये छे. ॥ जे तमो संवेगादि पांच लक्षण- थी पवर्त्तवुं कहीने, व्यवहार समिकत कहो छो. तेतो धुमाडान अग्निरूपथी वर्णन करवा जेवं कर्यु छे, केमके धमाडाना रुक्षणथी तो अग्निनो निश्चय करवानो छे, कांइ धुमाडो अग्निरूपे यइ जवानो नथी. तेम अग्निरूपे करी देवानो पण नथी. । मात्र संवेगादि पांच लक्षणथी, जे निश्चय रूपथी त्रण प्रकारनां सम्यत्क कहेलां छे, तेमां-थी एकाद सम्यन्क पण प्राप्त थयेलुं होवं जोइये, एम अनुमान करवानं छे. जेमके धुमाडो निकले छे. माटे आग्ने होवीज जोइये. तेमज संवेगाटि पांच लक्षणथी सम्यन्कपणानी प्राप्तिनं अनुमान करी लेवातुं छे. ॥ वली एमां विचारवातुं ए छे के, ज्यारे ६७ बोलमांथी. ६१ बोलने तमारा करेला सम्यक्षना नव भेदमांथी, मात्र एक व्यवहार सम्यव्कमां, दाखल करो छो, तो पछी सम्यव्क-ना पाछल रह्या आठ भेट, अने बोल तो रह्या छे छो, तो तेतमारा करेला आठ सम्यःकना भेदमां, छो बोलने, केवी रीते वहेंचीने आपशो, अरे देवानां पिय ? महापुरुषोनी आशातना करी जे वि-परीत थयेला होय, तेमनी पासे पुछवाथी, आ जैनमार्गनी सूक्ष्म शैलीतुं ज्ञान, कोइ दिन पण न आवे. अने ज्यां ज्यां विचार करवा बेसीठां त्यां त्यां विपरीते विपरीत, जोवामां आवशे. ॥ इहांजे ६७ बोलमांथी. ६१ बोलने, व्यवहार सम्यक्तमां आचार्योए कही बता-व्या छे. ते निश्चय, अने व्यवहार नामना, वे भेट्नी विवक्षाना आधीन थइनेज कह्या छे. अने वाकीना छ बोलने, निश्रय सम्य-कमां समावेश करी टीधा छे. । एवीज रीते द्रव्यः भावमां, पण ६७ बोल्तुं वहेंचण करवातुं होय तो ते महा पुरुषोज करीने बताये.। अथवा रोचक, दीपक, कारकमां पण करी वतावे. । वहेंचणी करी आपवी ते तो महापुरुषोनुंज काम छे, पण अपणा जेवा अल्पमित-थी बहेंचण न करी शकाय. इहांपर समजवातं घणुं छे, पण थोडामां

ज विवचन करी, आंगना विचारोने तपासी<u>श</u>ुं.

हवे जूवो-पृष्ट. ६७ ओ. ९ मी थी-९ दीपक समिकत-दीवो वीजा उपर मकाश नाखे पण पोतानी तलेतो अंधारूज रहे तेम, दुर्भवी, अने अभवी, जीवों अन्य जनोने मितवोधी मोक्षनां साधनो बतावे, पण पोताने, गंडी भेद, थाय नहीं, संयम लइ द्रव्यक्रिया करे पण अंतर को रंज रहे, एवा पुरुषतुं समिकत ते 'दीपक' समिकत गणाय छे. '' अमो तो परमेश्वरने खोले बेटेला लीए " एवं समजनारा खुद जैन वर्गनाज केटलाक साधुओं-सफेद वस्त्रवाला, पीलां वस्त्रवाला, तेमज दिशा वस्त्रवाला साधुओं, पण दीपक समिकती होय छे।।

विचार—आ तमारा लेख उपरथी विचार करतां तमा कड पंक्तिमां छो ते कांइ समजात नथी, केमके, तमारा मान्य करेला सू-त्रोमां तो आ भेटोज नथी, अने जे. दीपक सम्यक्त वाला होय, तेपण जैनना चालता धोरी मार्गमांज होवानो संभव छे, केमके बीजा जीवोने प्रतिबोधी मोक्षनां साधनो बतावनार पुरुष, पोते अंतरशी धर्मनी श्रद्धा रहित कोरोकडक होय तापण, अथवा गंठीभेट न थयो होय तोपण, प्रथम आपणे आप लोकदेखाव पृति पण जैननी श्रुद्ध क्रिया करी, बीजाने बताव्याविना, तेमज श्रद्धरूप जैनमार्गनो ऊप-देश आप्याविना, मोक्षनां साधनो वत्रावेछे, एम कहीशकायज नही. ते कोण हसे अने कोन नहीं, तेनो निश्चय, ज्ञानी महाराज जकरी-सके. । अने तमोए जे सफेत बस्रवाला, पीला बस्रवाला, तेमज दिशा बस्तवालामां, निश्चय करी बताब्या, तथी अमीतो एमज कहीये छे के, आ दुनीयामां तमारा जेवो कोइ बीजो महापुरुषज नही होय, कमके, आ महागृढ विषयमां वहेंचण करीने वतावी दीधी ! अमो पुछीयेछे के, तमोए तमारा पक्षना ढृंढक साधुओने, कइ पंक्तिमां दाखल कर्या ? कंमके जे दीपक समकितवाला होय तेपण, जैननी

श्रुद्ध चालती कीया करवावालामां, तेमज श्रुद्ध महूपणा करवावालामांज, होवानो संभव करीसकाय । परंतु तमो ढूंढकोतो तेमनाथी (अर्थात् चालती श्रुद्ध क्रिया करवावालाथी अने श्रुद्ध महूपणा करवावालाथी) भिन्नपणे थइने वात करोछो तथी ते श्रुद्ध क्रियावालानी अने श्रुद्ध महूपणा करवावालानी पंक्ति मात्रमां पण दाखल थइक्षकता नथी ते माटेज पुछ्वं पड्यं छे. आवा मृद्धपणाना लेखमां तमोने अमारे कहेवं शुं! विचार कर्याविना स्वछंदपणे आवा अनुचित लेख लखी फोगट हास्यना पात्र क्या वास्त वनोछो. अने एवा अनुचित लेख लखवाथी कांइ तमोने धनना गठडा मलीजाय एम समजवं नही. तेतो न्याय मारगना लेखथीज मलसे. तेम परभवना कार्यनी सिद्धि पण न्यायनाज लेखथी थसे. परंतु विपरीत लेखथी थवानी नथी एम खास विचार करवानो छे इत्पल माधिकलिखनेन ।।

इतिश्री मदिजायानंद सूरीश्वर लघुशिष्येनाऽमरमुनिना धर्मना दरवाजा संबंधि सम्यक्तनाम्नस्तृतीय मकर्णे तःवाऽतत्व विचारः संकलितः ॥

के चिन्मूलातुकूलाः केतिचिद्पिपुनः स्कंध संबंध भाजः छाया मायांतिकेचि त्प्रतिपद्मपरे पल्लाबातुल्लबंति पाणौ पुष्पाणि केचिद्दधित तद्भपरे गंधमात्रस्यपात्रं वाग्वलेशिकंतुमूढाःफलमहह नहि द्रष्टुमप्पुत्स-हेते ॥ १ ॥

॥ हवे. प्रकरण. ४ थानो विचार. ॥

।। पचीश दृष्टि. (पचीशबोल) पृष्ट. ४९ थी.

तथा पृष्ट. ५१ थी. ५२ सुधी.। पचीशबाल नीचेप्रमाणे.

(१–२) निश्चय. अने व्यवहार.	(?)
(३-४) द्रव्यः अने भावः	(?)
(५-६) विशेष. अने अविशेष.	(\$)
(७-८-९-१०) नाम निक्षेप,स्थापना निक्षेप.	
द्रव्य निक्षेप. भाव निक्षेप.	(8)
(११-१२-१३-१४) द्रव्यः क्षेत्रः कालः अने	
भाव.	(4)
(१५-१६-१७-१८) मत्यक्षममाण. अनुम	ान
प्रमाण. उपयाप्रमाण. अने आगम प्रमाण.	
(१९-२०-२१-२२-२३-२४ २५) नैगमन	ाय.
संग्रहनयः व्यवहारनयः ऋजुसूत्रनयः शब्दनयः	सम-
भिरूदनयः अने एवंभूतनयः	(७)

।। इति पचीशदृष्ठि. ऋयवा. पचीश बोल, ॥

।। पचीश दृष्ठि (पचीश बोल) ॥

विचार--जे २५ बोल दरेक चीज उपर लागु पाडवातुं लखो छो ते लखाण यथायोग थयेलुं नथी. । केमके ते पचीश बोलने, सात घडाथीज शास्त्रकारोए वहेंचण करी आपेला छे, अने ते सात धडायीज दरेक चीजनी, अने दरेक बाबतनी वहेंचण करवानी छे. परंतु. एकज वखतमां, अने एकज विवक्षाना वश्रथी, एक चीज उ-पर ए २५ वोलोने लागु पाडवाना नथी, तेम लागु पण पडी श-कता नथी, । अने तमोएजे लागु पाडीने बताव्या छे. तेतो तमोए तमारी मूढता प्रगट करी बतावी छे.। केमके ते साते घडाथी भिन्न भिन्नपणे, अने जूदी जूदी विवक्षाथी, ते ते विषयोधी सर्व पदार्थीने, ते ते विभागमां वहेंचण करीने विचारवाना छे. जेमके.। निश्चय अने व्यवहारनी विवक्षाथी निश्चयः अने व्यवहारमां, पदार्थोनी वेहचन करवानी छे. । अथवा विवक्षित एक चीजमां निश्चय, अने व्यवहारनी, अपेक्षाने आधीन एवो विचार करवानो छे के, ए चीज निश्रयना घरनी छे के, व्यव-हारना घरनी छे, एवी रीते भिन्न भिन्न पणे अने भिन्नभिन्न विवक्षाना आधीन थइ, सात घडाना रूपथी सर्व पटार्थीनो विचार करवानो छे. अने तेज प्रमाणे. प्रकरण रत्नाकर, भाग पेहलामां पाछलना एक मकरणमां, पचीश बोल्थी भिन्न भिन्न विवक्षाना आधीन थड़ नव तत्व उपर उतारीने बतावेला छे, पण एकज विव-क्षाना आधीन थइ ते पचीश बोलने बतावेला नथी. । तेनो यथार्थ परमार्थ सद्गुरुनी कृपा वगरना तमो, किंचित् मात्र पण समज्या वगर, अमचक्रमां पडीने, भिन्न भिन्नपणे समजवाना पचीश बोलने, एकज विवक्षाथी जोडीने बताबो छो, तेतो जैन धर्मना निर्मलतत्वोने दुषितज करीने बताबो छो. एम स्वासपणाथी विचार करवानो छो. कारण के, एकज वखतमां, अने एकज विवक्षाथी, एकज पदार्थनी

साथे, २५ बोल रूपे, अथवा २५ दृष्टिथी विचार करवानो नथी, अने तेम कोइ दिन थइ सकतो पण नथी, अने तेम करवुं एवी जैनशा- स्रकारोनी शैली पण नथी. । एमां दृष्टांत ए छे के, जीवनो एक भेद, चेतना लक्षणथी ।। जीवना बे भेद, संसारी अने मुक्तिना। अथवा सूक्ष्म अने वादर. । अथवा त्रस ने थावरः ॥ जीवना त्रण भेद-स्त्री, पुरुष, नपुंसक, ॥ जीवना चार भेद-देवता. मनुष्य. तिर्थेच्. नारकीः ॥ जीवना पांचभेद-एकेंद्री, वे इंद्री, तेरेंद्री, चडरेंद्री, पंचेंद्रीः ॥ जीवना छ भेद-पृथ्वीकाय, अप्काय, तेषकाय वाषकाय, वनस्पतिकाय, अने त्रसकाय. ॥

आ लेखथी विचार करवानो ए छे के, चेतना लक्षणथी ज्यारे जीवोनो विचार करवा बेठा त्यारे सर्व जीवोमां चेतना लक्षणनेज तपासी छेत्रानो छे. ॥ अने जीवना संसारी, अने, मुक्तिना, वे भे-द्नी विवक्षाना वश थइ विचार करवा बेटा त्यारे, संसारी जीवोनो थडो अलग करवो, अने मुक्तिना जीवोनो धडो अलग करवो. । अथवा वे भेदनी विवक्षाने आधीन थई कोई पुछे के, अमुक लक्षण-नो जीव, संसारी के मुक्त, तो ते जे विभागमां दाखल थतो होय ते विभागनो बताववोः । एज श्माणे सृक्ष्म, अने बाद्रसी, विवशा-मां विचार करवानों छे. । सृक्ष्म जीवोनी वहेंचण सृक्ष्ममां दाखल करवी, अने वादर जीवोने वादरपणेना धडामां बताववा. ॥ अगर एकनी अपेक्षाथी विचार करवो छे तो, सूक्ष्मने सूक्ष्मपणे विचारवो, अने वादर होय तो तेने बादर कहेवो. ॥ एज प्रमाणे, त्रस अने थावरनी विवक्षाथी त्रस अने थावरनो विचार करवानो छे. ॥ एज प्रमाणे, त्रण लिंगनी विवक्षाथी सर्व जीवोने, त्रण लिंगमां वहेंचण करी देवा. एज प्रमाणे, चार गतिनी विवक्षाथी, चार गतिमां सर्व जीवोनी वहेंचण करी लेवानी छे। ।। पांच इंद्रियोनी विवेक्षार्थी,

पांच इंद्रियोगां. ॥ अने छकायनी विवक्षाथी, छकायमां पण सर्व जीवोनी वहेंचण करी शकाय छे. ॥ परंतु, रुक्षणनी विवक्षानो एक भेद. । अने संसारी मुक्त । सूक्ष्मः वादरः । त्रस थावरः ए वे प्रकारनी विवक्षाना ६ भेद, । अने लिंगनी विवक्षाना त्रण, । गाति-नी विवक्षाना चार, । इंद्रियनी विवक्षाना पांच, । कायनी विवक्षा-ना छ भेद, ॥ १ । ६ । ६ । ४ । ५ । ६ ॥ आ सर्व मलीने २५ नो आंक थाय छे, तेनो पचीश बोलथी, एकज वखतमां, अने एकज विवक्षाथी, अने एकज पदार्थनी साथे, घटावी न शकाय. । अने कोइ घटाववाने पयत्न करे तो, ते जैन शैलीथी विरुद्धज गणा-य. । यद्यपि एकैकमां एकैकन्तुं अनुगतपणुं जोवामां आवे छे,जेमके, चेतना सक्षण, वधाए भेदोनी विवक्षामां जोइ शकाय छे, तेम सुक्ष्म बादरपणुं पण जोइ शकाय छे, त्रस थावर पणार्थी पण अजानने भ्रमित थवा जेवं जणाय. छे अने हिंगपणाथी पण भ्रमित थवाय छे, अने गतिनारूपथी पण भ्रमितपणुं थाय छे, अने इंद्रियोना विचारशी पण अमितपणं थाय छे, तेम कायनी अपेक्षार्था पण आमि-तपणुं थाय छे, केमके एकनी विदक्षामां, वीजी विवक्षाना स्वरूपनुं अतुगतपणुं रहेवाथी, अजान वर्गने श्रामित थवा जेवुं मालम पडे छे, परंतु, सूक्ष्म दृष्टिथी वारिकपणे विचार करी जोतां ते २५ वोलथी करेली विवक्षा, जैन तत्वोथी, अने जैन मार्गनी शैलीथी, तदन विपरीत मूढपणाथीज करेली छे, एम स्पष्टपणे जणाइ आवे छे. ॥

जूबो. पृष्ट. ८१ थी ज्ञान उपर उतारेला २५ बोलना नमुना रूपथी लखी बताबुं छुंगी

१ सम्यत्क सहित अंतरंग (अभ्यंतर) भावे यथा तथ्य जीवा-दिकतुं जाणपणुं तेः निश्चयज्ञानः ॥

२ गुण सहित पदार्थनुं यथा तथ्य प्रकाशवुं, ते शुद्ध भावः

व्यवहारज्ञान. ॥

३ शुद्ध सर्दहणा रहित मिथ्यावीनुं जे ज्ञान ते द्रव्यज्ञानः । तेमज आ लोकमां कीर्त्ति मलवा अर्थे भणवुं ते पण द्रव्यज्ञानः।।

४ जिन आज्ञाः अने शुद्ध सर्दहणा सहित एकांत निर्जराने अर्थे ज्ञान भणवुं ते भावज्ञानः ॥

हवे. पृष्ट. ८२ थी–द्रव्यः क्षेत्रः कालः भावः आचारमांनाः द्रव्यः अनेः भावः

११ द्रव्यज्ञान-षद द्रव्यतुं यथा तथ्य स्वरूप जाणतुं. तथा प्ररूपतुं. ते. ॥

विचार—आ ज्ञान विषयना लेखमां, नंबर. ३—११ मामां, द्रव्य ज्ञान. । अने नंबर, ४—१४ मामां, भावज्ञान. । आ एकेको शब्द वेबे वार, । एकज विषयमां, अने एकज प्रसंगे, तमोए जे लख्यों ते हुं योग्य रीते लख्यों छे के. १ विचार करों के, जेना शब्द मात्रमांज किंचित फरक नथीं, तेनो फरक एकज ज्ञानना विषयमां, अने एकज प्रसंगे, केवी रीते थइ सकसे. १ । कदाच तमो निश्चयज्ञान, अने भावज्ञाननों, अर्थ एक छतां, शब्द मात्रना फरकथी अजान वर्गने भ्रामित करी सकसों, परंतु, द्रव्यज्ञान, अने भावज्ञान, ए वे वाक्यने एकज ज्ञानमात्रना विषयमां, अने एकज वखतमां वेबे वार कथन करीने तो, अजान वर्गने पण भ्रामित करी सकवाना नथीं के केमके तेओ पण सामान्य पणाथी एटलो विचार तो जहर करसे के, जेना शब्द मात्रमां पण किंचित फरक नथीं,

^{*} नीचे टीपमां लखेलु. ते. अजीवना भाव. वर्ण. गंध. रस. फरस. । जीवनी भाव. उपयोग. एटले. ज्ञान. दर्शन. चारित्र. तप. सुख. वीर्थ.

तेवा शब्दोथी एक ज्ञानमात्रना विषयमां, ववे वारी कथन करी फरक शीरीते करी सकाय. ? अगर विषय भिन्न होय तो फरक पण करी सकाय, परंत एक ज्ञानमात्रनाज विषयमां, एकज शब्दन बबेबार वापरी फरक करवो एतो दोडडायोज करी सके, परंतु थोडो घणो विचार करबावालो तो नज करी सके, एवा विचार वाच-कवर्ग करी लेड. अमारा तरफथी थयेला बीजा प्रकारना विचारे(-मां जरुर उत्तरसेज. ! एम अमो पूर्ण खातरी राखीये छे. । यद्यपि तमोए लखेला सात प्रकारना घडा, विवक्षानावश्रथी, प्रसंगने अनु-सरी, एक पदार्थनी साथे, विचार करवाना छे, अने करी पण स-काय छे, परंत, एकज प्रसंगने अनुसरी, अने एकज विवक्षानावश थइ, २५ बोलना रूपथी, अथवा २५ दृष्टिना रूपथी, एकज पदार्थ-नी साथे, लागु पाडी आपनार, अथवा किखबनार, जैन मार्गनी शैळीथी तो अजान, अने गुरु परपराना ज्ञानथी रहित, जैन मार्ग-ना तत्वोनो चोरज टरसे. । परंतु जैन मार्गना तत्वोनो जाण छे, एम कोइ दिनपण सिद्ध थइ सकवानुं नथी. । केमके जो कदी एक वखते, अने एकज विवक्षाथी, अने एकज प्रसंगने अनुसरी, तमो जेवी रीते एक पदार्थनी साथे लागु पाडवा उतरी पडेला छो, ते प्रमाणे २५ बोलधी, गणधर महाराजाओ, तेमज महान् महान् आचार्यो, एकज वखते, अने एकज विवक्षार्था, अने एकज प्रसंगने अनुसरी, लखी बताववामां कदी पण चुक करताज नहीः। अगर तमारी तरां २५ वोलना, अथवा २५ दृष्टिना रूपथी, कोइ पण महापुरुषे, कही बताच्या होय तो. तेनुं नाम पगट करो। अमो पण तेनो विचार करवा उतरी पडीसुं. । बाकी कोइ अर्द्धदग्ध पुरुषे, स-मज्या वगर, भिन्न भिन्न विवक्षाथी समजवाना प्रकारनो संग्रह करी, २५ बोल उराच्या छे ते तो जैन मार्गनी शैलीथी तदन वि-

परीतज छे, । एम अचुक कही सकी स्युंज ।। आ जनमार्गना महागंभीर तत्वो छे, अने एनो विस्तार पण समजावनार प्रकरण ग्रंथोज छे, अने ते प्रकरण ग्रंथोना परमार्थने समज्याविना, महान् महा
न आचार्योने निंदी कहाडवाने जे कमरकसो छो, ते ता तमो एवं
करो छो के, गंदीखालनो देडको, समुद्रना देडकानो अनादर करी,
आपणी गंदीखालनेज समुद्रमानी राखे, ते प्रमाणे तमो करो छो। ।
परंतु तेम कोइ दाहाडो पण बनी संके नही, समुद्र छे ते तो समुद्रज
छे, अने गंदोखाल छे ते तो गंदोखालज गणासे, पण समुद्ररूप तो
न गणाय मात्र गंदीखालना देडकाना ग्वंपणानुंज विशेष गणाय।।।

हवे तमाराज लेखमां ज्ञानना विषयमां परस्परनो वि-चार जुबो

? निश्चय ज्ञान-सम्यत्क सहित अंत रंग भावे यथा तथ्य जीवादिकनुं जाणपणुं. ते.

४ भाव ज्ञान-जिन आज्ञा अने शुद्ध सर्वहणा सहित एकांत निर्जराने अर्थे ज्ञान भणकुं. ते.

आ वेमां फरक शो छे १ तेनो विचार करो, मने तो एटलॉज फरक लागे छे के, तमोए वे चार ओलीना छटापर लख्यो छे, ते शिवाय बीजो कांइ पण फरक जोवामां आवशे नहीं। । कटाच तमो कहेशो के, जाणपणानो अने भणवा रूपनो, फरक छे, ते अमोए लखी बताव्यो छे, तेतो तमोए धिटाइ पकडीने अजान वर्गने भ्रमित करवाने शब्द मात्रनो भेद करेलो छे, वास्तिवकमां किंचित मात्रनो पण भेद नथीं। । अगर निर्जरा शब्दथी भेद कहेशो तो, निश्चय ज्ञाननी माप्तिथी निर्जरा, शुं ! थती नथीं। ! निश्चय ज्ञाननी प्राप्तिथी निर्जरा नथीं थती, एम जैन मार्गनो जाण गुरु तो, कटी पण नहीं भणावे। । आ विषयने वथारे न छंबाबतां एटलुंज कहींथे छे के.

जे निश्चयज्ञान छे, तेज भावज्ञान छे, अने जे भावज्ञान छे, तेज निश्चय ज्ञान छे, ए शिवाय बीजो अर्थ करीने बताववो, तेतो जैन मार्गनी शैक्षीथी भिन्न पडीने, महापुरुषोना आश्चयने समज्या वगर, भसवा जेवंथाय छे.

अने, नंबर, २ तुं व्यवहार ज्ञानः । ३ जातुं द्रव्य ज्ञानः । तेमज नंबरः ११ मा तुं द्रव्य ज्ञानः जे तमोए भिन्नरूपथी वर्णन करी बतात्युं छे, ते पण अजान वर्गने अमितज करवातुं करेष्ठं छे। । केमके त्रीजा नंबरमां, द्रव्य ज्ञान, अने अगीयारमा नंबरमां पण, द्रव्य ज्ञान, शब्द पण एक, अने विषय पण एक, तेमां फरक केम करी शकाय १ अने वस्वत पण एक, तो पण अर्थमां फरक करीने बताववो आते धिटाइ कया प्रकारनी गणवी १। ते कांइ समजातुं नथी. । शुं १ समज्या वगरज मोटा मोटा हेस्व करवा मंडि पडेला छो के ! अमो तो एज कहीये छे के, आ लेखनो लखनार, तेमज बतावनार पण, जैन मार्गनी शैलीथी तदन अजाण अने अर्ध दग्ध थयेलाएज जैन मार्गथी विपरीत थइ, आपणी मृहपणानी चातुरीज प्रगट करेली छे।।

आ विषयोगां समजवानुं ए छं के, ज्ञानी पुरुषो, ज्यारे तत्वोनो विचार करवामां उतरी पडता हता, त्यारे विवक्षाना वज्ञ थइ, निश्चय शब्दनी साथे व्यवहार शब्दने जोडीने, निश्चयना पदा-थोंने निश्चयमां, अने व्ययहारमां दाखळ करवाना पदाथोंने व्यवहारमां, दाखळ करी, सर्व पदार्थोंने बन्ने रूपमां भिन्न भिन्नपणे करीने मुकी देता हता. । अने एज ममाणे, द्रव्य शब्दनी साथे भाव शब्दने जोडीने, द्रव्य रूपना पदार्थोंने द्रव्यमां, अने भावरूपना पदार्थोंने भावमां, वहंचण करीने मुकी देता हता, । अने ज्यारे विशेष अविशेषना विचारमां उत्तरी पडता त्यारे, विशेष कया, अने

अविशेष पदार्थों कया, एम बन्ने रूपमां भिन्न भिन्न पणे वहचन करीने मुकता हता। । अने ज्यारे, द्रध्य, क्षेत्र, काल, अने भाव, आचारनी विवक्षाथी, पदार्थीनं विवेचन करवा वेसता, त्यारे, सर्व पदार्थीनं विवेचन आ चारज रूपमां करी लेता। अने ज्यारे, चार निक्षपना विचारमां उत्तरी एडता त्यारे, जे जे निक्षपमां जेनो समावेश थतो होय तेने पण करीनेज बतावता, जुवो आ विषयमां अनुयोगद्वार नामनं सूत्रः । अने ज्यारे, प्रमाणना विषयमां उत्तरी एडता त्यारे, सर्व पदार्थीनं, प्रत्यक्ष,अने परोक्ष, ए वे प्रमाणथी स्व-रूपने जोइ लेता हता, जुवो आ विषयमां नंदी सूत्र, अथवा विशे-पावश्यक सूत्रः । अने ज्यारे, सात नयोना विचारमां उत्तरी पडता त्यारे, जे जे विषय जे जे नयमां उतारवानो होय, तेने, ते ते नयमां उतारीने बतावता, जूवो आ विषयमां सूचनामात्रथी अनुयोगद्वार, विशेषपणाथी सम्मतितर्क, अथवा नयचक्र, आदि महान म्हान् प्रंथोः

आ विषयमां विचार घणा लंबान रूपे छतां पण दंक द्रष्टां तथी कही बतावां ये छे. ॥ जेमके, जीवनो एक भेद, चेतना लक्षणथी, आ चेतना लक्षणथी सर्व जीवोने पण जोइ सकीस्युं, तेमज आगल करेली जीवनी बीजी विवक्षाओंनो समावेश पण आ एकज विषयमां पण करी सकीस्युं, जेमके, संसारी अने मुक्तिना जीवों शुं श चेतना लक्षणथी जूदा छे ? जूदा कोइ दाहाडो पण नहीं यह सके. । तेमज सूक्ष्म. अने वादरपणानी विवक्षाथी पण जूदा पढ़ी सकसे नहीं. । तेमज, त्रस अने थावरमां पण चेतना लक्षण, अनुगत पणज रहेलुं छे. । अथवा त्रण लिंगनी विवक्षाथी जीवना भेद करीस्युं, तो पण चेताना लक्षण, ज्याह पणज रहेलुं छे. । अने चेतना लक्षणमां आ त्रण हिंग पण, ज्याह पणज रहेलुं छे. । अने चेतना लक्षणमां आ त्रण हिंग पण, ज्याह पणेज रहेलुं छे. । अने चेतना लक्षणमां आ त्रण हिंग पण, ज्याह पणेज रहेलुं छे. अथवा

चार गतिनी विवक्षाथी जीवना चार भेद करीस्यं तो पण, चेतना लक्षण, चारे गातिमां व्याप्त पणे जोइ सकीस्यं, अथवा चेतना लक्ष-णमां, आ चार गतिने पण जोइ सकीस्युं, एम, जे जे प्रकारनी वि-वक्षाओ शास्त्रकारोए करी छे, ते ते विवक्षाओमां, एकेकनुं एकेक-मां, अनुगतपण जोवामां आवे छे, अने ते एक जगोपर वतावीने, अजान वर्गने श्रामितपण करी सकाय छे. परंतु यथायोग्य विचार करतां, ते जैन तत्वोमां जगो जगोपर पुनरुक्तपणु तथा संकीर्णताप-णुं थवाथी, जैन मार्गना निर्मल तत्वोने दूषित करी आपणी महा मूर्खता पगट करवा जेवुं थाय छे, अने जैनमार्गना तत्वोथी अष्टपणुं थवाय छे, पण तत्वपणाने माप्त थवातुं नथी. । जूवा के एक ज्ञा-नना विषयमां २५ बोलने भेगा करी उतारतां द्रव्यज्ञान, ए अब्द बेवार आववाथी पुनरुक्तता थइ छे, तेमज भावज्ञानना शब्दनी पण, _पुनरुक्तता थयेली छे.। एवीज रीते वारिक विचारमां उतरी जोतां, जे २५ बोलथी, अथवा पचीश दृष्टिना नामथी खीचडो क-रीने लखायलो लेख छे ते, जैनमार्गनी शैलीथी तो विपरीत, अने आपणी मूर्वताइथी जैनतत्वोने दृषित करवा रूपज लेख लखायलो छे. । परंतु जैनमार्गने पुष्टि थवारूपे लखायलो नथीज, एम खास विचार करवानो छे ॥ अगर जो ते सातधडाने, एकंटर करीने २५ बोलघी. अगर पचीश दृष्टिथी, केहवाना होत तो, गणधर म-हाराजाओ, तेमज आचार्य महाराजा, ग्रुं ? कहीने बतावता नही. ? परंतु तेम करवाथी योग्य रीते थइ शकतुंज नथी, वास्तेज तेओए, सात घडाना स्वरूपथी वर्णन करीने बतावेटुं छे. । आविषयने इहां-पर समाप्त करीने, प्रथम प्रमाणना विषयने हाथ धरीये छे.।



प्रमाण विषयनो विचार.

|। पृष्ट. ५२ मां. मृल रूपे. | अने पृष्ट. ७३ मां अर्थरूपे. (१५-१६-१७-१८) प्रत्यक्ष प्रमाण. | अनुमान प्रमाण. | उपमा प्रमाण. | अने आगम प्रमाण. |-ए मूलरूपथी छे. ||

विचार-वाडीलाल शाहने, प्रथम अमी एटलुंज पुछीए छे के, आ चार प्रमाण जैन मतावलंबीने मुख्यपणाना स्वरूपथी प्रमाण रुपे छे एवुं तमो कोनी पासेथी भण्या ? अथवा उपोद्घातना पृष्ट. १५ ओ. १२ थी तमो एलस्युं छे के, । सनातन जैन मतावलंबी, मुनिश्री मािी-लालजी महाराज, (लिंबडी समुदायना पूज्य श्री मोहनलालजी स्वा-मीना शिष्य वर्ष) एमने आ पुस्तकमां जे किमती मदद करी छेते माटे तेओश्रीनो अंतःकरणथी आभार मानुंछुं. । तेमज अहमदनगरमां वसता श्रावक, रायचंद्रजीए मारी घणीएक शंकाओना खुलासा करी जे उपकार कर्यों हे ते भूलाय तेवो नथी. एम लखीने जे उपकार मान्यो छे, तेमनी पासेथी आचार प्रमाण धारण कर्यो इसे ! अथवा तमोए तमारी बुद्धिथी टब्घां हसे ! एमां आश्चर्य ए थाय छे के स-नातन जैन मतने तो अवलंबन करवावाला श्री माशालालजी महा-राज, अने तेमना भक्त श्रावक रायचंद्रजी, आ वंत्रेमांथी एकेने. खबर पड़ी नहीं, अने तभने पण एटली खबर न पड़ीके, जैनमतमां प्रमागा केवीरीते मानेलां छे एजमोटं आश्चर्य जेवुं लागे छे. कंमके जैनमतमां तमारां छखेछां चार प्रमागा, कोइ सूत्रमां, अथवा पकरण 🏒 प्रथमां पण, मुख्यतारूपे मानेलांज नथी, परंत गौणतारूपथी प्रकारां-तरमां वर्णन करेलां कोइ कोइ प्रसंगे जोवामां आवे छे, जेमके श्री त्र्यनुयोगद्वार सूत्रमां, सामायिक अध्ययन विषये, उपक्रम, निक्षेप,

अनुगम, अने नय. । आ चार अनुयोगथी व्याख्या करतां, प्रथम उपक्रमनी व्याख्यामां, बीजा मकारथी क्र भेदना अंतरभूतमां, प्रमागा नामनो त्रिजो भेद बताव्यो छे, ते प्रमाण रूपना त्रिजा भेदमां, द्रव्य प्रमाण, क्षेत्र प्रमाण, काल प्रमाण, अने चोथो भाव प्रमाण, कहेलो छे, तिमां चोथा भाव प्रमाणना त्रण भेद करेला छे, १ गुणप्रमाण, २ नयमगण, । ३ संख्याप्रमाण, । ए त्रणमां जे गुणप्रमाण छे, तेने जीवना ज्ञान, दर्शन, अने चारित्र गुणमांथी, ज्ञानगुणप्रमाणनुं वर्णन करतां तमारां लखेलां चार प्रमागा कहेलां छे, पण ते तो प्रसंग ज जूदी प्रकारनो छे, तेथी तमारो लखेला अथोगपणे थयेलो छे, पण प्रमाणना विषयमां प्रमाणरूपे थयेलो नथी. तेम दिगंबरोना ग्रंथोमां पण तमारां लखेलां चार प्रमाण मानेलां नथी. । आवाथूल विषयमां पण जे आटली मोटी भूल थाय, तेतो वासीदामां सांबेहं घसडइ जवा जेवुं थाय. । अने जैन मतानुयायी सिवाय, सर्व दर्शन संग्रहना कर्त्तो माधवाचार्य पण, जैन दर्शननुं वर्णन करतां लखे छे के,

ज्ञानं पंच विधं तत्राद्ये परोक्षं प्रत्यक्ष मन्यत् .

एम कहीने प्रमाण विषये एक श्लोक पण लखे छे के.

विज्ञानं स्वपराभासि प्रमाणं बाध बार्जितं;

प्रत्यचंच परोचंच द्विधामेय विनिश्चयात् . १
अर्थ-जैनोए, ज्ञान पांच प्रकारनुं म्नानेलुं छे. तेमां आद्यनां वे ज्ञान, परोक्ष

अर्थ-जैनोए, ज्ञान पांच प्रकारतुं मानेलुं छे तेमां आद्यनां वे ज्ञान, परोक्ष प्रमाणमां गणेलां छे, अने पाछलां त्रण ज्ञान प्रत्यक्ष प्रमाणमां गणेलां छे. ॥ हवे श्लोकनो अर्थ-विज्ञान छे ते आपणुं अने बीजातुं प्रकाश करे एवुं बाध रहित प्रमाण छे मेयना वे प्रकारमां, निश्चयथी ते, प्रत्यक्ष अने परोक्ष छे ॥ अने छेवट एम लखे छे के अंतर्गत सूक्ष्म भेद आगमोमांथी जोइ लेवा जुवे सर्व दर्शन संग्रह पृष्ठ ३२ मां। तेमज शंकराचार्य, जैमनी ऋषी, व्यास ऋषी, नैयायिक वगेरे जे वेद मतानुयायीओं छे, अने जेओने आपणे जैन मतना तत्वोथी अजान कहीये छे, तेवा परमतना आचार्यो पण एटछुं तो जरुर छखता गया छे के, जैन मतवाला, प्रत्यचा, अने परोत्त, ए वे प्रमाणविना त्रीजुं प्रमाण मानता नथी. अने तमो सनातन जैन धर्मना अवस्रवनपणानो दावो कर-वा छतां, वेप्रमाण ने छोडी, चार प्रमागा रुखी बतावो छो, ते तो गर्दभने श्रृंग बताववा जेवुं करी बतावो छो. ।। ज्यारे तमो जैन नी स्थूल मान्यता रूपनां, वे प्रमाण ने, समज्या वगर, चार प्रमारा, लखीने अधार वालो छो, तो पछी बीजा जैनमतना सूक्ष्म चारोने, समज्या वगर, अंघारुवाली तेमां ते नवाइ थवा जेवुं शुं समजवुं. ? एटछुं तो एक न्हानुं छोकरु पण विचार करी सकसें.। अने, एवी रीतना जैन मार्गथी विपरीत लेख लखी, भस्मग्रहना ढोषितपणाना पात्ररूप आप छतां, महान् महान् आचार्योने दृषित करवानो प्रयत्न करो छो, तं तो एक नवीन प्रकारनी चातुरीज पगट करी बताबो छो. । अमो एटछुं तो कही सकीय छे के, 'त-मारा ढूंढकोए ' जैन तत्वोथी, तेमज जैनशैलीथी, विमुख थइ पंथ चलाच्यो, तेज कारणथी, जैन तत्वोनी, अने जैन मान्यतानी पण, तमोने खबर पडती नथी, तो पण जोराजोरी करीने, सनातन श-ब्द जोडी लइ, जैनमार्गने कलंक भूतकरो छो. । नही तो स्युं ? सनातन जैनमतना मोटा मोटा पूज्योने, जैननां वे प्रमाणरूप स्थूल विषयनुं भानज न रहे ? आते केवो गजबः ॥ देखो प्रमाण विष-ये नंदी सूत्रजीनो पाठः

।। नागां पंचिवहं पन्नतं तंजहा. स्राभिगा वोहि-

यनागां. १ । सुयनागां. २ । मोहिनागां. ३ । मनपज्जन-नागां. १ । केवलनागां. ५ ॥ तं समासउ दुविहंपन्नत्तं तंजहा. पचल्खंच १ । परोल्खंच २ । सेकिंति पचल्खं। पचल्खं दुविहं पन्नत्तं तंजहा. इंदिय पचल्खं नो इंदिय-पचल्खं। सेकिंतं इंदिय पचल्खं २ पंचिवहंपन्नत्तं सोइंदिय श्राइ. । सोकिंतं नो इंदिय पचल्खं. श्रोहि श्रादि. ।

सेकिंतं परोख्खंनाणं दुविहं पन्नतं तंजहा, श्राभिणि वोहियनाणं परोख्खं च, सुयनाणं परोख्खच.। जथ्य श्रा-भिणि वोहियनाणं तथ्य सुयनाणं । जथ्य सुयनाणं तथ्य श्राभिणि वोहियनाणं ।। इत्यादि.॥

अर्थ-भगवंते ज्ञान पांच मकारतुं कहुं छे, आमिनि बोधिक ज्ञान, १। (मितज्ञान) श्रुतज्ञान, २। अवधिज्ञान, ३। मनप्यवन् ज्ञान, ४। अने, केवलज्ञान, ६।। ते ज्ञान संक्षेपथी वे मकारतुं छे,। एक प्रत्यच्च ज्ञान, अने बीजूं परोच्च ज्ञान,। ते कयं प्रत्यच्च ज्ञान तो के मत्यक्षज्ञान वे मकारतुं छे,। एक इंद्रिय मत्यक्षज्ञान, अने वीजूनो इंद्रिय मत्यक्षज्ञान,। ते इंद्रिय मत्यक्षज्ञान पांच मकारतुं छे, श्रोत्रेंद्रिय आदि पांच इंद्रियोथी जाणवुं ते.। अने नोइंद्रिय मत्यक्षज्ञान ज्ञान त्रण मकारतुं छे, अवाधिज्ञान, मनप्यवज्ञान, अने केवलज्ञान.।। परोक्षज्ञान वे मकारतुं छे, आभिनि बोधिकज्ञान (मितज्ञान) अने बीजुं श्रुतज्ञान । ज्यां मितज्ञान छे त्यां श्रुतज्ञान छे ने ज्यां श्रुतज्ञान छे त्यां मितज्ञान होय छे।।।

अही समजवानुं ए छे के, जे मातिज्ञान आदि पांच ज्ञान छे, तेथीज प्रत्यच्च प्रमागा, अने परोच्च प्रमागानी, वेहचण थयेली छे. माटे जनमार्गमां मुख्यरूपे प्रमागा बेज मोनलां छे परंतु त्रीज ममान ण, माने हुं नथी। केमके, बीजां वधां प्रमाण, तेना पेटा भागमां समावेश थाय छे. माटे मुख्य पणे भिन्न रूपथी प्रमाण माने हुंज नथी तो पछी, वाडी लाल शाह, अने तेमनी शंका हुं समाधान करवावाला, मिशालाल जी महाराज, तथा रायचंद्र जी श्रावक, प्रत्यक्ष अनुमान, अने आगम, । एम चार प्रमाण मुख्यरूपे कया जैन सिद्धांतथी खोळीने लाव्या? ते कांइ समजा हुं नहीं। केमके हुं नथी धारतों के, जैन शैळीथी लखायेला लाखों प्रथाथी पण, तमारां लेखेलां, चार प्रमाण मुख्यरूपथी मली आवे।। आ लेख उपरथी विचार करों के, जैन तत्वों विषे तमारी समज केटली छे, अने तमारी हद पण केटली छे, तेनो विचार कर्याविना एक दम महापुरुषोंने निदी कहाडों छो, ते तो तमो तमारी पात्रतापणाने प्रगट करों छो, अमारे ते वधारे लख हुं स्युं. आ लेखमां विचारों घणा स्पुरायमान थाय छे परंतु ते न लखतां आ विषयने इहांपर समिति करिने, नयोना विषयमां थयेली गफलता बतावीये छे।।

॥ इति चार प्रमाण विषये तत्वाऽतत्व विचारः॥

॥ हवे नयोना विषयमां तत्वाऽतत्व विचार करी बतावीये छे.॥

पृष्ट. ७८ ओ. १० मीथी.—वाडीलाल लखे छे के ५-६-७ प्राब्दनय, समिस्त्हनय, अने, एवं भूतनय, --ए त्रण नयवाला माणस, नाम, स्थापना, द्रव्य, ए त्रण निक्षेपने अवथ्थं (अवस्त)माने छे पृष्ट. ८४ थी ते. ८६ तक ज्ञान उपर सातनयो उतारी वतावी ते.॥ विचार—तमोए लख्युं के, शब्दादि त्रण नयवाला माणस,

? नाम, २ स्थापना, अने ३ द्रव्य एत्रण निक्षेपने अवस्तु माने छे, ए तमारु लखेलुं अमो कबूल करीये छे, परंतु १ नैगमनय, २ संग्रहन-य,३ व्यवहारनय, अने ४ ऋ जुसुत्रनय,ए चार नयवाला माणस तो, नाम, स्थापना, अने द्रव्य, ए त्रण निक्षेपने वस्तूरूपथी माने छे, एम सिद्ध पणे तमारे पण मानवुंज पडशे. ए सिवाय बीजी गतिज नथी. । .अगर जोर पहेली चार नयो. १ नाम, २ स्थापना, अने ३ द्र^{व्य}, ए त्रण निक्षेपने अंगीकार करनारी न होततो, शब्दादिक त्रण नयथी, त्रण निक्षेपनो निषेध न करतां, नैगमादि साते नययी निषेध, शास्त्र-कार करीने बतावताज, परंतु तेवी रीते न करवाथी निश्रय थयो के, पहेली नोगमादि चार नयोए, नाम,स्थापना,अने द्रव्य, ए त्रणे निक्षेपने मानी लीधेलाज छे. । ज्यारे प्रथमनी चार नयोने, नाम, स्थापना, अने द्रव्य, ए त्रण निक्षेपो कबृल छे. त्यारे तो जैन मतने अंगीकार करवा वाला पुरुषोने पण, मान्य करवाज पडशे, केमके जैनोने तो साते नयो प्रमागारूपे छे, जेमके डाबी. अने जमणी आंखमां निर-र्थक कयी, अथवा पांच आंगलियोमांथी कइ आंगुली निर्ध्वक. ए-मांथी निरर्थ एकपण गणाय नहि. तेम साते नयोमांथी एकपण नय, जैन मतवालाने निरंथेक रूपे नथी. । अगर निरंथेकपणे गणे तेने मिष्ट्यात्वप्गानी प्राप्ति थाय,परंतु सम्यक्तपणानी प्राप्ति छे एम सिद्ध नहीं थइसके. अने एज अर्थने पुष्टि करनारु श्री ऋनुयोगद्वार नाम-ना सूत्रना अंतमां सूत्रकहुं छे के, (तंसव्यनय विसुद्धं जंचरण गुण-हिओ साह)अर्थ-ते सर्व नय करके विश्रुद्ध जो चारित्र गुणमां रहेलो होय तेज साधु जाणवो आ. सिद्धांतना वचनथी पण, जैनमत अंगीकार करवावालाने। तो, साते नयो मान्यरूप ज छे.। तो पछी तमो पृष्ट. ६४ ओ. १ थी लखोछो के, श्री अनुयोगद्वार सूत्रमां कहुं छे के, पेहला त्रण निक्षेप, स्ववध्यु.। एटले उपयोग विनाना छे. छेलो चोथो ज आ लोकमां उपयोगी अने परमार्थमां साधनरूप छे.। एवं कथन कया हिसावथी कहीने आव्या ? केमके, पाललनी जे शब्दादिक त्रण नयो छे, तेन त्रण निक्षेप अवस्तुरूपे मानेला छे एमतो तमो पण लखीने बतावोछो, तथी सिद्ध थाय छे के, पेहली नैगमादिक चार नयोवाला माणसे तो, प्रथमना त्रण निक्षेपोने वस्तुरूपे ज मानी लीधेला छे, तो पछी उपयोगविनाना त्रण निक्षेप छे, एम कहीसकसोज केवीरीते ? स्यं प्रथमिनी चार नयो जैनमतवालाने मानिक नथी ? जे त्रण निक्षेपोने विरर्थक टरावोछो. अमो तो एज कहीये छे के, निक्षेपो तो निरर्थक नथी, परंतु परमार्थ समज्याविनाना तमारा मित कल्पनाना विचारोज, निरर्थकपणाथी करेला छे.। आ विषयने इहांपर न लंबावतां, चार निक्षेपना विषय उपर उत्तरी स्थं त्यारे जोइलड्स्यं.॥—

।। हवे तमोए जे ज्ञान उपर सातनयो उतारी छे० तेनो विचार किंचित स्थूलरूपथी करी वतावीये छे.−−

पथम जे ज्ञान छे, ते जीवनो गुण छे. अने सातनयो छे ते, वेविभागथी वेहंचाइली छे,पथमनी नैगमादिक चारनयो द्रव्याधिक छे.
(एटले द्रव्यपणाने अंगीकार करवा वाली छे)अने पीछली पाब्दादिक
त्रण नयो पर्यायाधिक छे.(एटले गुणादिकने अंगीकार करवावाली छे)
अगर तमोने, मारा कहेवा उपर भरोसो न आवतो होय तो, जूवो
सत्याधिचंद्रोद्य. एष्ट. ६ मां, ढूंढनी पार्वती पण लखे छे के,पहिली
चार नय द्रव्य अर्थको प्रमाण करती है. । अने पीछली त्रण पर्याया-

थिक नयने, सत्यनय करके कहेतीहै. ।। आथी विचार करवानी ए-छे के, ज्ञान छे ते तो आत्माना गुण पर्यायरूप छे, अने ते ज्ञानगु-ण, पीछली शब्दादिक पर्यायार्थिक त्रण नयोनी साथेज संबंध ध-रावे छे, ते एकला ज्ञानगुणने, द्रव्यार्थिक चार नयोमां पण उतारी-ने बतावी, छो ते केटलं वधं अयोग्यपणं छे ? तेनो विचार तमोज ए-कांतमां वेसीने करी जुवो केमके प्रथमनी नैरासादिक वार द्रव्यार्थिक नयो छे ते तो, जीवरुप द्रव्यने वलगीनेज आपनारी छे. परंत ज्ञानग्रण एकलाने वलगीने अर्थ प्रकाश करनारी नथी. ते तो पीछली शब्दादिक त्रण नयोज प्रकाश करशे.। जेमके, निक्षेपना विषयमां शब्दादिक त्रण नयो, भावने वलगीने, द्रव्यरूप अर्थने प्रकाश करवावाला शण निक्षेपोने अंगीकार नहीं कयी । अने नैगमादिक द्रव्यार्थिक चार नयोए, प्रथमना त्रण निक्षेपोने, मानी लीधा, अने भावरूप गुणमां छटी गइ हती. तेम अहिं एकला ज्ञानगुणने पण, द्रव्यार्थिक चार नय, अंगी-कार करवानी नथी. एम खासपणे समजवानुं छे. । अगर कोइ ए-कला ज्ञानगुणनी साथे लागु पाडवानो प्रयत्न करे, ते तो जैनमार्गनी शैलीथी तदन अजाणज छे. । परंतु जैनमार्गनी शैलीनो जाण छे एम कोइ दहाडो पण नही गणाय. आ जैनमार्गना सूक्ष्म विषयोने, सदगुरुनी पासथी भण्याविना, जैनमार्गनी शैलीथी विपरीत थयेला-ओने प्रजीने, पंडिताइ पगट न करी शकायः । वास्ते जे जे अ-र्थो, अने विकल्पो, एकला ज्ञान उपर, सात नयो उतारीने क-र्या छे ते, जैन मार्गनी शैलीथी विपरीत पणेज थयेला छे.। अगर जो तमो जीवनी साथे, ज्ञान गुणने, अभेद भावमानी, सात नयो उतारवा मागता इसो तो, तेपण तमारा करेला विचार प्रमाणे, ज़ठा-ज निवंड छे, केमके प्रथमनी नयो जे, नैगम, ?संग्रह, २व्यवहार, ३ अने

धंऋजुसूत्रं, ए चार द्रव्यार्थिक छे, तेथी ए चार नयोद्रव्यने वलगीने बोध आपनारी छे. छतां तमारा हेखमां ते प्रमाणे विचार थयेहो नथी. जूबो पृष्ट ८४ मां, (२०) संग्रहनय प्रमाणे ज्ञान-पांच प्रका-रतं ज्ञान छे तोपण समुचये एकज ज्ञान कहे ते, । आ संग्रहनय द्रव्या-र्थिक छतां जीवद्रव्यना आश्रयविना एकला पांच ज्ञानथी लखीबता-व्यां छे, । तेमज ऋजुसूत्र नयमां, छद्मस्थना चार ज्ञानने, एक ज्ञान कही निरर्थक ठराववा प्रयत्न करेला छे, केमके पृष्ट ८६मां, सम्यक्त सहित ९ तत्त्वनुं ज्ञान ते शब्दनय प्रमाणे छच्युं छे, तो एमां पुछ-वानुं एछेके शुं! ऋजुसूत्र द्रव्यार्थिक नयना, चार ज्ञानवालाने, सम्यक्त होतुं नथी, जे त्यां सम्यक्त शब्दजोडीने वताव्यो नही, केमके, चोधु <mark>द्याभ्यतिना बीजाने थतुंज नथी वास्ते द्रव्यार्थिक ऋजुसू</mark>त्र नयना चार ज्ञाननी व्याख्यामां सम्यक्त शब्द अवश्य जोडवानो हतो परंतु तमोए, तेमज ढूंढनी पार्वतीए,द्रव्यार्थिक चार नयोने जूटी,अने उपयोगिवनानी ठराववा भयत्न करेलो छे, केमके तमोए, तेमज ढूंढ-नीए, चार निक्षेपना विषयमां, द्रव्यार्थिक चार नयना विषयरूप प्रथ-मना त्रण निक्षेपने, अवस्तु अने उपयोगविनाना लखी बताच्या छे. परंतु तमो तमाराज लेखनो, परस्परना विचारथी, विचार करीजो सोतो, तमोने पण जूठे जूठज मालम पहसें,

जूबो के पृष्ट. ८२-मां, स्थापना निक्षेपे ज्ञान-ज्ञाननी स्थापना करवी ते, । अने द्रव्य निक्षेपे ज्ञान-रुखेरां पुस्तक पांना, ।

आ स्थापना, अने द्रव्यरुप, बन्ने निक्षेप, द्रव्यार्थिक नयना वि-पय वाला छे, अने आधार आधेयना भावथी वर्णन करीये तोज योग्य थाय, परंतु तमोए पृष्ट. ६३ मां, कागल मुकीने सूत्रनी स्थापना करवी बतावी, पण जो अक्षरोना आधाररूप कागल लख्या होत तोज योग्य थात, अने अही पण, ज्ञाननी स्थापना करवी, पण ते शी वस्तुथी करवी ते कांइ लख्युं नथी, । हवे द्रव्य ज्ञानमां लखेलां पुस्तक पांनां कहो छो, तो ते तीर्थ कर भाषित तत्त्वज्ञानथी लखेलां पुस्तक पांनां, अवस्तु छे अने उपयोग विनानां छे एम कही, आ द्रव्य निक्षेप, निरर्थक रूप छे एम जैनोथी केम कही शकाशे! हा कदाच म्ले छो तो भले निर्थक कहे, वास्ते नतो द्रव्यार्थिक नयो निर्थक छे, तेमज नतो त्रण निच्चेप पण निरर्थक छे, केवल जैननी शेलीने समज्या वगर, मूढताथी करेला तमारा विचारोज बधा निरर्थक ह्ये थयला छे, अमो एकेक बातनो जो विचार करता बेसीये तो, लखतां पण छेडो आवे नही, अने वाचकवर्गने समजवानुं पण ठीक पडे नही, एवो विचार करी, आ सामान्य मात्रना लेखथी दिग्दर्शन करावी, आ लेखनी समाप्ति करतां, एक वात याद आवे छे ते, प्रसंगो पात अहीयांज लखी बतानुं छुं.

।। ते वात ए छे के. ॥ वाडीलाल, पृष्ट. २२१ मां त्रखे छे के, निन्हव एटले, सात नय पैकी, एकज नयने वळगी रही, पक्ष ग्राही बने. (जमाली माफक)

।। आ लेख पण योग्य रीते थयेलो नथी, केमके सातनय पैकी, एकाद नयने, न मान्य राखी पक्षग्राही बने, तेनेज निन्हव कहेलो छे,। अने जे, सात नय पैकी, एकज नयने वळगी रही, पक्षग्राही बने, तेने तो कोरो मिथ्या दृष्टि कहेलो छे.।। तथाच काव्यं.

|| बौद्धाना मृजु सूत्र तो मतमभू द्वेदांतिनां संग्र-हात्, सांख्यानां तत एव नैगमनयाद् योगश्च वैशेषिकः॥ शब्द ब्रह्म विदोपि शब्द नयतः सर्वेर्नयैगूंफिता, जैनी दृष्टि रितीह सारतरता प्रत्यच मुद्धीक्ष्यते ॥ १॥

भावार्थ.-हठपणाथी क्षणिकवादी बौद्धमती छे, ते वर्त्तमान-

पणु छे,।अने ऋजु सूत्रनय, ते वर्त्तमानपणाने ग्रहण करनारी छे, तेथी बौद्धनो मत, ऋजु सूत्र नयथी उत्पन्न थयेलो छे. एम सम-ज्वुं. ।। अने "सर्व खिल्वदं ब्रह्म." एम सर्व संग्रहपणाना हटथी, वेदांती कहे छे, तेथी ते संग्रह नयने। मत छे. ।। अने आत्माने करवातुं कांइ नथी, एम सांख्यमतवाला कहे छे, ते पण संग्रहनयनो ज मत छे. ।। अने द्रव्य, गुणादि, सामान्य, विशेष, पदार्थी जुदा जुदा छे,एम हठपणाथी नैयायिक, अने वैशेषिकनामतवाला कहे छे, अने नैशम नयनो पण एज मत छे, तेथी, ए वे मत नैशम नयथी उत्पन्न थयेला छे एम समजवुं. ॥ अने सर्वज्ञ कोइ नथी, अने शब्द जे अनादि वेद वचन, तनाथीज सर्व प्रवृती चाली रही छे, एम मीमांसक (एटले जैमनि ऋषि) ना मतवाला कहे छे, अने ते शब्द नयनो मत छे, तेथी मीमांसकानो मत शब्द नयथी उत्पन्न थयेलो छे. ॥ अने जैनमत छे ते, सर्व नयोथी गृंथेलो होवाथी सर्व मतोथी श्रेष्टपणे अमो प्रत्यक्षपणाथी जोइये छे. ।। इतिका व्यार्थः ॥

हवे आ लेख उपरथी विचार करवानो ए छे के, जे जे मतवाला एकेक नयने वलगीने रह्या छे ते ते मतवालाने, शास्त्रकारे तो, मिथ्या दृष्टि कहेला छे, पण तेने 'निन्ह्व 'कहेला नथी. । अने निन्हव तो तेने कहेला छे के, जे जैन मतनी सर्व प्रकारथी, बीजी बधी मान्यता राखी, एकाद नयनी मान्यता न राखे तेनेज, शास्त्रकारे, निन्हव कहेला छे. ॥ अर्थात एकाद नयना विषयमां, श्रीमत थइ हठ प्रकडीने बेसे, अने समजाव्या पण समजी सके नहीं, जैमको, जमाली, सर्व जैन मतनी मान्यता राखवा छतां, तेमज जैननी सर्व क्रियामां उच पदने घारण करवा छतां, एकज नयना विषयमां, अमित थइ समजाववा छतां पण समजी सक्या नहीं, तेथी तेमणे निन्हपणामां गणी काहडचा । कहेवानुं ए छे के, जमाली जेवा महा तपस्वी, अने जैननी सर्व क्रियामां प्रवीण छतां, एक नयमां अमित थवाथी, तेमणे शास्त्रकारो ए निन्हव (अर्थात वीत-रागना वचन छोपी)कह्या । तो पछी, नाम निक्षेप, १ स्थापना निक्षेप, २ अने द्रव्य निक्षेपने, ३ मान्य राखनारी, जे नैगमादिक द्रव्यार्थिक चार नयोनो, छोप करवा बेठेछा, अमारा ढूंढक भाइयो छे, तेमणे अमारे शुं! निन्हव कहेवा? अथवा अर्द्धदम्ध कहेवा? केमके, निन्हव तो जे एकाद नयनो छोप करवावाछा होय तेने कहेवाय छे, अने अमारा ढूंढक भाइयो तो, आ निक्षेपना विषयमां, चार नयोनो छोप करवा बेठेछा छे, वास्ते अर्द्धदम्ध कहेतां पण विचार थइ पडे छे, वास्ते निर्णय करवानुं वाचक वर्गने सांपी दइ अमारा छेखने वंध करीये छे. ॥

॥ इति सप्तनय विषये तत्त्वाऽतत्त्व विचारः॥

[॥] हवे चार निक्षेप विषये किंचित तत्त्वा तत्त्व अवेचार करी बतावीए छे.

पृष्ट. ५४ थी. ते. पृष्ट. ७१ सुधीमां वाडीलाल शाह नो लेख नीचे मुजब

[[] ७-८-९-१०] चार निक्षेप * १ आचार निक्षेप जैन मतमां उपयोगी भाग भजने छे. एनी गेर समजथी निरारंभी जैन वर्गमां, एक मूर्त्ति पूजक पंथ उभी थयो छे, के जे मूर्ति पूजाके जेमां हिंसा मुख्यत्वे छे, अने धर्मके जेमां जीवदया मुख्यत्वे छे. ते

वेनो पर स्पर विरोध पण जोवानी दरकार करतो नथी। ।। श्रित्रे श्रापेशो * २ अरिहंत अने सूत्र ए वे शब्द उपर चार निक्षेप उतारी हुं अर्थात् लागु पाडी हुं। ।।

अरिहंत. ॥ पृष्ट. ५६ मां. जीवादिक वस्तुनुं अरिहंत एवं नाम आप्युं होय त्योरे ते वस्तु नाम निच्चेपना आधारे अरिहंत क-हेवाय. । भरवाडना छोकरानुं नाम इंद्र पांडे तो ते, इंद्र न होवा छतां नाम निक्षेपे, इंद्र कहेवाय. ॥

पृष्ट. ५७ थी. ॥ स्थापना निक्षेप-तेना वे भेद, सद्भाव, अने असदभाव,॥

- [१] सद्माव-फोटोग्राफ, बावलुं, भगवान देहधारी हता ते वखतनी आ वे हुब छवी बावलुं बनावी राख्युं होय तो
- [२] ऋसद्भाव-ते, १० दश प्रकारे कराय छे, गंठीने, प-रोवीने, जोडीने, चितरीने, लींपीने बनावे. ते. इत्यादि १० प्रकारे क-राय छे, अरिहंत प्रभुनो फोटोग्राफ (छवी) अगर वाबलुं न मल-वाथी, * रे पाषाणादि वडे आकार मात्र मल तो बनावी तेमां महावीर पणुं आरोपे एटले के तेने महावीर तरीके माने पूजे ए अ-रिहंतनो असद्भाव निक्षेप. ।।
 - ३ द्रव्य निक्षेप-तेना पांच भेद छे॥
 - १ जाणग शरीर द्रव्य, । २ भविय शरीर द्रव्य, । ३ लौकिक द्रव्य, । ४ कु पावचनिक द्रव्य, । ५ लोकोत्तर द्रव्यः।।
 - ? अरिहंत मोक्ष सिधाव्या, अने तेमनुं शरीर पड्युं होय ते शरीरने, जाणग शरीर द्रव्य निक्षेपना आधारे, अरिहंत कहे. ॥ ? ॥
 - २ प्रभु धर वासमां होय त्यारे, अरिहंत कहे ते,

भविय शरीर द्रव्य निक्षेपना आधारे कहुं,

- श्रेकिन विषे अञ्चने जीते, एटले चक्री, वासुदेव, राजा विगेरेने, लौकिक द्रव्य निक्षेपनी दृष्टिए, अरिहंत कहे.
- ४ हरि, हर, ब्रह्मा, आदि देवने, कुपा वचनिक द्रव्य निक्षपेनी दृष्टिए, आरिहंत, कहे.
- ५ जैन धर्ममां होय पण केवल ज्ञान पांम्यो न होय छतां पोताने अरिहंत कहे वडावे ते, लोकोत्तर द्रव्य अरिहंत. (गो सालाना दृष्टांते)

४ भाव निक्षेप केवल ज्ञानादि सहित जे वर्ते छे ते, भाव आरिहंत, खरखेरो अरिहंत तो तेज, अने वंदनिक पण तेज, बाकी नामनो माणसके पथ्थर कोइनु कल्याण करीसके नहीं ॥ पृष्ट. ६३ तकः ॥

इति त्रारिहंत उपर घटावेला चार निचेप, संम्यत्त्क. त्रायवा धर्मना दरवाजाणी लखी बताव्या छे. ॥

हवे पृष्ट, ६३ थी सूत्र उपरना लखीये छे ॥ ॥ सूत्रः ॥ १ नाम निचेप-कोइ पण प्राणी पदार्थनुं सूत्र एवं नामः॥

२ स्थापना निचेप-सुत्र तरीके कागल मुकी तेने सूत्र मानेः।।

३ द्रव्य निचेप-लखेलां पांना ॥

४ भाव निचेप-सूत्रोमांनां तत्वो. [वांचनार जे थ्रहण करे छे. ते. ॥

श्री अनुयोग द्वारमां कहां छे के, पेहेला त्रण निशेष "अवध्यु," एटले उपयोग विनाना छे, छेल्लो चोयोज आ लोकमां उपयोगी, अने परमार्थमां साधन रूप छे. ॥

पृष्ट. ६५ थी सूचना १ ली लोगस्समां जे तिर्थंकरोनां नाम छेत, नाम निच्चेप न कहेवाय पण 'नाम संज्ञा 'कहेवाय, तीर्थंकरोनुं नाम अन्य कोइने आपीए त्यारे ते, नाम निच्चेप १ कहेवाय ॥

सूचना -२ जी. खुद तीर्थंकर बीराजता त्यारे नाम तो हाल छे तेज धरावता पण ते " नाम निच्चेप " कहेवाय नाहि, भाव निच्चेप कहेवाय

सुचनाः ३ जीः मोह घरमां श्री मिल्लानाये पोतानुं आबेहुब मुवर्ण बावरुं मुक्युं हतुं, के जे कारणथी ऋ राजाने 'जाति स्म-रण ' झान उपन्युं हतं तो पण ए छ समिकती जीवोए बावलाने वाद्युं निह, जो के एक तो उपकारी पदार्थ-कारण भूत पदार्थ हतो वळी तीर्थकरनी सद्भाव स्थापना हती. ॥ निमराजा चुडीना कारणथी बूज्या । समुद्र पाल राजा चोरने देखीने बूज्या पण चुडीने के चोरने वांद्या पूज्या न हता. । भगवाननी मूर्ति देखवाथी भगवान याद आवे छे ते कारणथी मूर्ति पूजवी जोइए एदलील तहन पाया वगरनी छे. अने जिन प्रतिमा माननारा, जिन प्रतिमा जिन सारिखी कहे छे. पण द्रव्य के भाव एक पण रीते ते, जिन सारिखी थइ शकती नथी। । भगवान देह धारी हता ते बलतनी छवी के बावछुं होत तो कदाच द्रव्ये सारिखी कहि सकात. । वळी भगवाननो ज्ञान गुण, मूर्तिनो जड गुण, ते पण एक, सारिखी, कहेनारे विचारवा जेवुं छे. ॥ आतो धर्ममां आगल वधवानी तीव इछाने लीधे उन्मार्गे चडी जवा जेवुं थयुं. ॥ पृ. ६७ ओ १४ थी वैराज्य के ज्ञान थवानुं तो क्षयोपशम उपर आधार राखे छे ॥

खुद महावीर स्वामीना मुख्य शिष्य गौतम स्वामी जेवा तेमणे भाव तीर्थंकरनी भक्ति करी तोपण प्रभुनी हयाति शुधी तो तेमणे केवल ज्ञान' न थयुं, पण प्रभुनो वियोग दका वखतमां केवलज्ञान आप-नारो थइ पडयोः ।। साक्षात् वीतराग देव वीराजता त्यारे तेमणे वांदवा कोइए संघ कहाडया न हता। श्री विपाकसूत्र, तथा भाग वती सूत्रमां क्खुं छे के सुबाहु कुमारे, तथा उदाइ राजाए, एम भावना भावी के, भगवंत जो अहीं पधारे तो तेमणे वांदी हुं कृतार्थ थाउं, एटलो तीव्र भक्ति भाव छतां, अने खुद भगवाननां दर्शन थवानां हतां छतां, तेमज पोते लक्ष्मीवान होवा छतां, संघ कहाडीने 'वांदवा' न गया हता, तो पछी पष्ट्यरने भगवान मानी लड़, तेने बांदवा माटे संघ काढीने जवं एमां शं भगवाननी आज्ञा होय ?॥ ? अरेरे भस्म ग्रहना अमित आचार्योए मात्र पेटना कारणे, दुधमांथी पौरा वीणवा जेवुं काम करी, स्थापना निचेप, नो अवलो अर्थ लइ मूर्तिपूजाना अने ते अंगे थतां बीजां अगणित पापोमां, भोली दुनीयाने केवी डूबाबी दीधी छे ? अने डुबेला पाछा उठवाज न पामे, तेटला माटे तेमना उपर कपोल कल्पित ग्रंथोनी, केवी त्रासदायक ओढाडी दीधी छे ? ॥ पृ. ७० ओ. ७ थी भस्म संख्याबंध भूखथी आकृल व्याकृल थयेला आचार्यो, शास्त्रतं शस्त्र बनावी, तेवडे दुनीयानो शिकार करवामां फतेह पांमे एमां हुं आश्चर्य ? परंतु जेओने अंतर्च क्षु छे, तेमणे विचार करवा दो, अने पाप खाइमां धकेली देनार सामे मानसिक टकर लेवा दो. ॥

* आ प्रकारना चक्रथी नीचेना भागमां टीप आपेली छे. ते पृ. ५४-५५-५८ ना क्रमथी लखी बतावीये छे. ॥ चार निक्षेप * नी १। अत्रे आ प्रमाणे * नी २। प्रभुनो फोटोग्राफ (छबी) अगर बावलुं न मलवाथी * नी ३ जी.। एम त्रण प्रकारनी टीप लखी बतावीये छे.॥

॥ चार निक्षेप * १ । पृष्ट, ५४ मां-

क्षिप्=फेंकवुं. नि×िष्ट्=आपवुं. आरोपवुं. निक्षेप=आरोपवुं ते अथवा आरोहण. कोइ चीजमां बीजी चीजनो गुण आरोपवो ते. ॥ इति पथम चक्रनी.

त्रुत्रे द्यापरों *२। पृष्ट. ५५ थी-दुनीयामां जेटली चीज छे तेटली बधी कबुल करवा छतां, पूजवा योग्य होइ शके निह, तेमज नित्तेष चार छे ते चारने पूजे तोज, निक्षेष चार, कबुल राख्या एम साबीत थतु नथी-जैनो कहे छे के, केटलीक चीजो ज्ञेय. उपादेय. अने हेय. माटे निक्षेष एक वे नही पण चार छे, एम कबुल राखनारा माणसे स्थापना नित्तेषने उपादेय तरीकेज कबुल राखवो जोइए एवं कहेनारा मात्र पोताने ज टगे छे. ॥ ए बीजा चक्रनी टीपमां. –

॥ प्रभुनो फोटोग्राफ (छबी) ऋगर बावलुं न म-लवार्थी * ३ नी टीप. पृष्ट. ५८ थी.

॥ लोको ज्यारे पूर्तिने आगल करवा मागे छे तो पछी आ एक आश्चर्य वार्ता छे के, तेओ सदभाव छोडी ग्रसद्भाव स्थापना केम करे छे! जेतुं नामज असद्, एटले खोढ़ं, तेने ग्रहण करतुं ए हुं विचारशक्ति पामेला पाणीने शोभती वात छे!। श्री मिल्लिनाथजीनुं सुवर्णतुं बावलुं के विषयी राजाओ, तेने भेटवा तलपी रहा हता, जो मूर्तिपृजा ए रुडुं काम होत तो केम साचवी

रास्वजामां न आवत ! बली कारीकरों, आमेहव क्रवी बमाधनार हयाती धराववा छतां, कोइ पण तीर्थकरनी क्रवी के बावलुं केम न बन्युं, ए समजातुं नथी. भगवान तो जाणता हताज के, अमारा पाछल वस्तत आवो आववानो छे. । वली ते भविष्य का-लनुं वर्णन पण करी बतावता, तों शुं कोइ श्रीमंतो ते वस्ततमा न-होता के, जेओ भविष्यना करोडो जीवोना हितार्थे, हयात भग-वाननी छबी अने बावलां बनावी राखे ! एम थयुं होततो आजे " ऋसदभाव स्थापनामां " कोइने मुजाइ रहेवुं पहत नाहि. ॥

वली आपण विचारवा जेवुं छे के, सद्भाव अने असद्भा-व "स्थापना" ते रूपवंत वस्तुनी थइ शके, पण कांइ भाव—गु-णनी होइ शके नहीं. भगवान, पोताना उपरनो मेल दुर करी निज रूपमां भली गयेला आत्माज छे.। तेना गुण जे, ज्ञान, दर्शन, चा-रित्र, ते तो अदृश्य छे, तेनी 'स्थापना 'शी रीते थइ शके.! भकाशक.!

इति. पृष्ट. ५४ थी. ते पृष्ट. ७१ शुधी ढूंढकानो लखेलो लेख आलखींने बतावेलो छे. ॥

हवे ए विषय उपर अमारो विचार-चार निचेप उपयो-गी भाग भजवे छे,। एनी गेर समजथी-एक मूर्तिपुजक पंथ उभो थयो छेः॥

आ लेखथी विचार करवानो ए छे के, प्रथम प्रमागाना वि-षयमां, । अने पछी नयोना विषयमां, तमारी केटली बधी समज थयेली हती तेनु तो दिग्दर्शन अमोए करी बताव्युं छे; हवे चार निसंपमा विषयमां पण, तमारा ढूंढकोनी समज केटली थयेली छे तेनो विचार, ढूंढक हृदयनेत्रांजनमां, करी बताच्यो छे तेथी विचार करी ज़्वो के, तमारी समज केवा प्रकारथी थयेली छे, तेथी माल पड़को. ॥ तोपण स्थान शून्य न राखतां, अहियां पण सिद्धांतना पाठनी साथे, तेनां लक्षणो लखी तमारा लेखनो पण, परस्पर वि चार करी बतावीये छे, तेथी पण किंचित तमारी चातुरीनी खबर तमने पड़को.

|| जूबो अनुयोगद्वार नामनुं सूत्र, आवश्यक आदि सूत्रना निच्चेप करीस्युं, एम कहीने, प्रथम नीचे लखेली, गाथा कही बताबी छे. || तथाच ||

जथ्यय जं जागोजा निरूखेवं निरूखेवं निरवसेसं जथ्यविय न जागोजा चउकगं निरूखिवं तथ्य. ॥ १ ॥

त्र्ययः—ज्यां जे वस्तुमां, जेटला निक्षेप जाणवामां आवे त्यां, ते वस्तुमां, तेटला निक्षेप करवाः । अने जे वस्तुमां, वधारे निक्षेप जाणवामां न आवे, ते वस्तुमां चार निक्षेप तो जरुरज करवाः ॥१॥

।। ए गाथाने कहीने, आवश्यक सूत्रना, चार निक्षेपतुं उचारण करता, हुवा सूत्रकार प्रथम निच्चेपतुं सूत्र कहे छे. ।।

यथा. सेकितं त्रावस्सयं, त्रावस्सयं " चउविहं " पण्णात्तं तंजहा, नामावस्सयं १। ठवणावस्सयं २। दव्यावस्सयं ३। भावावस्सयं ४।

II सोकिंतं, नामावस्सयं २ जस्सण्यां जीवरसवा,

श्रजीवस्स वा, जीवागां वा, श्रजीवागां वा, तदुभयस्स वा, तदुभयागां वा, श्रावस्सए त्ति, नामं कजइ, सेतं, नामावस्सयं ॥ १ ॥

त्र्रार्य:—ते आवस्यक केटली प्रकारनो छे, तो के चार प्र-कारनो छे.। एक नाम आवस्यक १। बीजो स्थापना आवस्यक २। त्रिजो द्रव्यावस्यक ३। अने चोथो भाव आवस्यक ४॥

।। एम आवश्यकना चार निक्षेप वर्णन करेला छे. ।।

अहीयां ध्यानमां राखवानुं एटलुं छे के, षद आवश्यक क्रिया रूप वस्तुने, मनमां धारण करी, गणधर महाराजाओए, आ आवश्यक रूप क्रिया वस्तुना, "चार निक्षेप" जणाववाने, सूत्रनी रचना करेली छे. अने ते क्रियाने जणावनार सूत्र, अथवा साधु, ए बेज छे ते आगल सूत्रार्थथी स्पष्टपणे समजासे. ॥

केमके आवश्यक शब्दनो अर्थ एवो करेलो छे के, अवश्य करवाने योग्य ते, अथवा आत्माने गुणोथी वासित करे ते, अथवा गुणोने वश करे, तेनु नाम आवश्यक छे. ॥

।। अने एज अर्थ, ढूंढनी पार्वती पण, सत्यार्थ चंद्रोदय पृष्ट. २ मां करे छे के, "प्रश्न, आवश्यक किसको किहेंगे, उत्तर अवश्य करने योग्य, यथा आवश्यक नाम सूत्र. ।। एम ढूंढनी पण समज्या वगर लखे छे, केमके अथवा आवश्यक सूत्र, एम लखवुं जोइतुं हतु, कारण के आवश्यक क्रियाने पगट करनार साधु अथवा आवश्यक सूत्र छे, तथी अथवा शब्दथी लखवानु हतुं तेने ठेकाणे, यथा आवश्यक सूत्र लख्नुं छे. ।।

॥ हवे प्रथम नाम निचेप शब्दनो अर्थ किंचित् लखीये छे ॥

नाम निच्चेप शब्दनो अर्थ ए छे के, जे शब्दो व्याकरणादिक्षथी गुण पूर्वक सिद्ध थयेला छे, अथवा आपणा आपणा शास्त्रोना संकेतथी सिद्ध छे, ते शब्दोनो, यथार्थ भाव प्रगट करवा
वाली वस्तुमां, आरोप करवो, अथवा बीजी वस्तुमां आरोप करवो.
तेतु नाम, नाम निक्षेप छे. ॥ ते नाम निक्षेप जे जे
वस्तुमां करी सकाय छे, ते ते वस्तुने जणाववा, प्रथम
अनादि सिद्ध जो ' आवश्यक ' शब्द छे तेनो भाव
प्रगट करवा, जेमां जेमां ते नामनो निक्षेप करी सकाय छे, ते बताववाने सूत्रकारे सूत्र कहुं छे, तेनो आर्थ करीने बतावीये छे.

ते नाम आवश्यक शुं छे, ? तो के जे जीवनुं, अथवा अजीवनुं, वा घणा जीवोनुं, वा घणा अजीवोनुं अथवा जीव अजीव भेगी वस्तुनुं, अथवा घणा जीवो अने घणा अजीवो भेगी वस्तुनुं, 'श्रावश्यक ' एवं नाम आपीए, तेनुं नाम 'नाम स्रावश्यक ' थाय. ॥

इति त्रावश्यकना प्रथम नाम निचेपनो सूत्रार्थः

हवे अही नाम निक्षेपनुं लक्षण काहिये छे.

|| यह्रस्तुनोऽभिधानं, स्थित मन्यार्थे तदर्थ निर-पेत्तं । पर्यायाऽनऽभिधेयंच, नाम यादृक्तिकंच तथा. ॥१॥ अर्थ: 'नाम निक्षेप, त्रण प्रकारथी कराय छे,। ते एवी रितेषे, जे गुण क्रिया वाची अनादि सिद्ध शब्दो छे, ते शब्दोनो यथार्थ भाव प्रगट करवाने, यथार्थ गुणवाली वस्तुमां आरोप करवो, ते पहेला प्रकारथी नामनो निक्षेप जाणवो जेमके 'आवश्यक सूत्र 'लखाइने तइयार थया पछी ' आवश्यक 'एवं नाम आपीये ते ' आजीव वस्तुमां 'नाम निक्षेप, यथार्थपणे थयो । अथवा आवश्यक सूत्र भणवा वाला साधुनं नाम ' आवश्यक ' कहीये तो ते ' जीव अजीव रूप भेगी वस्तुमां पण ' यथार्थ पणे नाम आश्यकनो निक्षेप ' जाणवो ए पेहला प्रकारथी नामनो निक्षेप जाणवो, ॥ १ ॥

अने जे वस्तुमां, शब्दनो अर्थ यथार्थ तो होय निह, तेम तेनी पर्यायनां बीजां नाम होय ते पण वाफी शकाय नहीं, तेबी बीजी गुण विनानी वस्तुमां, नाम आप्युं होय ते, बीजा प्रकारथी नामनो निक्षेप गणाय छे, जिमको गूज्जरना पुत्रनुं नाम 'इंद्र' अथवा कुश्च, रामचंद्र, एवं नाम आप्या छतां पण, पुरंदर, सची-पति, आदि जे इंद्रनी पर्याय वाचीनां नाम छे ते बीजा नामानोनी प्रवर्त्ति, अथवा कुश्च पर्याय वाचीनां नाम छे ते बीजा नामानोनी प्रवर्त्ति, अथवा कुश्च पर्याय वाचीनां. अथवा रामचंद्र पर्याय वाचीनां, बीजां नामोनी प्रवर्त्तीं तो जे विमाननो अधिपति थयो होय ने तेमां इंद्र शब्दना नामनो निक्षप कर्यो होय तेमांज प्रवर्त्तीं करी श-काय. तेज प्रमाणे कुश्चमां, अने रामचंद्रमां पण, समजी छेवुं, ए बीजा प्रकारथी नाम निक्षेप जाणवो. २ ॥

अने व्याकरणथी तो शब्दोनी सिद्धि थइ होय निह, तेमज शास्त्रना संकेतना पण शब्दो होय नहीं, तेवा शब्दोथी आपणी इच्छा पूर्वक, बस्तुतुं नाम आपवुं जिसके गोछ मोछ आदि ते, बिन् जा प्रकारथी नामनो निक्षेप गणाय छे. ३ ॥ एम त्रण प्रकारना लक्षणथी नामनो निच्चेप थाय छे.॥

इति नाम निचेपनुं लचगा संपूर्णं ॥

॥ हवे बीजा स्थापना आवश्यकतुं सूत्र.

सेकिंतं ठवणावस्सयं २ जण्णां कठंकम्मे वा, पो - यकम्मे वा, चित्तंकम्मे वा, लिप्पॅकम्मे वा, गंथिकंम्मे वा, वेढिमे वा, पुँरिमे वा, संघाइमे वा, ऋख्वे वा, वराड ए वा, । एगो वा, ऋणोगो वा, सम्भाव ठवणा वा, ऋसम्भाव ठवणा वा, ऋावस्सएत्ति ठवणा ठविज्ञइ,सेतं, ठवणावस्सयं ॥ २ ॥ नाम ठवणाणंको पइ विसेसो, णामं आवक-हियं, ठवणा इतरिश्रा वा, आवकहिया वा. ।

॥ ऋषी-प्रथम आई समजवानुं ए छेके, आवश्यक सूत्रनी, तेमज आवश्यकनी क्रियाना करवा वाला साधुओ क्रिया कारकनो अभेद मानीने पण आवश्यकनी स्थापना करी सकाय छे, अने सूत्रकारनो पण एज अभिपाय छे।॥

काष्ट्रमां. १ चित्रमां २ पत्रादिना छेदमां. अथवा लेख मात्रमां ३ लेपकर्ममां ४ गूंथनीमां ५ वेष्ट्रन क्रियामां ६ धातुना रसनी पूणी मां ७ अनेक मणिकाना संघातमां ८ चंद्राकार पाषाणमां ९ को-डीमां १० ॥

ए दब प्रकारनी वस्तुमांथी गमे ते एक प्रकारमां स्थापना

बनांवी सकाय छे।। अहीं आवश्यकना विषयमां, सूत्रना अक्षरोनी, तेमज आवश्यकनी क्रिया करवावाला एक साधुनी स्थापना बनावो, अथवा अनेक साधुनी स्थापना बनावों, ते मरजी उपर बात छे॥

नाम निक्षेप, अने स्थापना निक्षेपमां, फरक एटलोज छे के, नाम यावत काल, (एटले एकवार पाडयुं के बस छे) अने स्था-पना, थोडा काल वास्ते पण करी शकाय छे, । अने यावत काल तक पण करी सकाय (एटले एकवार करी ते करी, फेर बदल करवानी कंइ जरुर नहीं.)

॥ हवे अहीयां स्थापना निक्षेपनो तात्पर्य कही बतावीये छे. ॥

आ स्थापना निक्षेपना सूत्रनी रचना करतां शास्त्रकारे, पथ-मथी ज आवश्यक सूत्र, अने आवश्यकनी क्रिया करवावाला साधुनी 'स्थापना ' पगट करवाना अभिषायथी ज, सूत्र रचनानी प्रवृत्ति करेली छे.। केमके काष्ट्रादिक जो दश प्रकार, स्थापना करवाना बताव्या छे तेमां, आवश्यक सूत्रनो लेख करवानी पण सवडता छे, अने साधुनी मूर्त्ति करवानी पण सवडता आवेली छे.। अने 'ए गोवा ऋगो गोवा ' ए सूत्रना वाक्यथी साधुनी स्था-पना ज प्रगट करवानुं जणावेलुं छे.!!

अमारा लेखथी ढूंढक भाइयो मनमां शंका लावशे, परंतु शंका करवानी जरुर नथी, !!

जूबो सत्यार्थ चंद्रोदय पृष्ट. ४ था मां, ढूंढनी पार्वती पण एज अर्थ लखी बतावे छे, परंतु समजी शकी नथी. ॥ मक्ष. स्था-पना आवश्यक क्या ? उत्तर, काष्ट्रपे लिखा, चित्रोमें लिखा, पोथी पे लिखा, अंगुछिसे छिखा "छेवटमां छखे छे के,। आवश्यक करने-वालेका रूप, अर्थात् हाथ जोडे हुए ध्यान लगाया हुआ, ऐसा रूप, उक्त भांति लिखा है.॥

आ ढूंढनी पार्वतीना लेखथी पण विचार करी जुनो के, आवश्यक सूत्र, अने आवश्यक क्रिया करवा वाला साधुनी, स्थापना करवाना अभिप्रायथी, सूत्रकारे सूत्रनी रचना क-रेली छे के निह ! अगर जो ए वसे प्रकारना अभिप्रायथी सुत्रनी रचना थयेली न होत तो, । ढूंढनी पण ॥ काष्ट्रपे लिखा, पोथीपे लिखा, विगरेनो अर्थ, । अने, हाथ जोडे हुये ध्यान लगाया हुआ, साधुनो अर्थ, कोइ दिन पण करी शकती निह अने आ निक्षेपना विषयमा शुं शुं फरक अमारा ढुंढक भाइयो करे छे, अने आ विषयमां केवी पहोच धरावे छे, तेनो विचार प्रसंगे प्रसंगे बतावता जइशुं ॥

इति त्रावश्यकना द्वितीय स्थापना निचेपनो सूत्रार्थः

हवे अही स्थापना निक्षेपतुं लक्षण कहीये छीए. क्टंद आर्या.

यत्तु तदर्थ वियुक्तं, तदऽभित्रायेण यच तत्करिण । लेप्यादि कम्म स्थापनेति क्रियतेऽल्पकालंच ॥ १ ॥

त्रर्थ:—जे मूल वस्तुमां गुण छे ते गुणथी तो रहित, अने तेनाज अभिप्रायथी (एटले के तीर्थकरादिकना अभिप्रायथी) ते-मना सदशपणाथी करिण (एटले तेमना जेवी करिण) अथवा अन्यथा प्रकारथी, एटले के तेमना जेवी आकृति विनाथी पण, लेप्पादिकना कर्मथी स्थापित करवी तेतुं नाम 'स्थापना नि-चेप 'मानेलो छे

तात्पर्य ए छे के, स्थापना निक्षेप वे प्रकारथी करी शकाय छे, एक सद्रूपथी, एटले के तीर्थकरोना पद्मासन विगरेनी आकृ-तिथी, अने बीजी असद्रूपथी, एटले के गणेशजीनो गोल पथ्यरो मुकीने लोको करे छे ते, अथवा संकेतित अक्षरोधी झान गुणनी स्थापना करवी ते, तेवी रीते असद्रूपथी पण थापना करी शकाय छे।

एम वे प्रकारथी स्थापनानिक्षेप करवातुं, मूल सूत्रकारे पण कही बताव्युं छे, अने लचागा कारे, पण एज अर्थने पगट करीने कही बताव्यों छे.

इति द्वितीय स्थापना निचेपनुं लचगा संपूर्ण. ॥

हवे आवश्यकना तृतीय द्रव्य निक्षेपनुं सूत्र लखीये छीए.

सेकितं हव्वावस्सयं २ दुविहं पण्णांत्त तंजहा, आगम श्रोश्र १ , नो श्रागम श्रो श्र २ । सेकितं श्रागम श्रो त्र २ । सेकितं श्रागम श्रो दव्वावस्सयं २ जस्सणं श्रावस्स एति पदं, सिख्लि श्रं, ठितं, जितं, मितं, परिजितं, नाम समं, घोस समं, यावत धम्मकहाए नो श्रणुपेहाए, कम्हा श्रणुवयोगो दव्व-मिति कट्ट ॥ १ ॥

सोंकितं ने। त्रागमत्रो दव्वा वस्सयं २ तिविहं पन्न-तं तंजहा, जागाग सरीर १ । भवित्र सरीर २ । जागा गभवित्र वितिरत्तं ३ । वितिरत्तं, तिविहं पन्नत्तं, । लोइत्रं, १ कुप्पावत्राणित्रं, २ लोउत्तरित्रं, ३ । इत्यादि ॥

त्र्यर्थ:—अहीं समजवानुं ए छे के, जो अतीत कालमां अथवा अनागत कालमां, कारणरूप, सचेतन अथवा अचेतन रूप ''बस्तु छे " तेनुं नाम द्रव्य मानेलुं छे, तेमां निक्षेप ते द्रव्य निचेप अहिं आवश्यक सूत्रनो वे प्रकारथी थाय छे. ॥

एक तो आगमयी, अने बीजो नो आगमयी, ॥

त्रागमणी द्रव्य त्रावश्यकनो निक्षेप उपयोग विना छ आवश्यकनो पाठ करवावाला साधुमां करेलो छे, ते ए छे के, जे साधु ए आवश्यक सुत्र सिखी लिखुं छे, स्थिर कर्यु छे, जिती लीखुं छे, प्रमाण युक्त भण्युं छे, सारी रीते परिपक्ष कर्यु छे, आपणा नामना याद प्रमाण याद करेलुं छे, अने उच्चारण पण बरोबर शुद्धपण करी लिधेलो छे, यावत् पुछी गाछी नकी करी धर्मकथा पण करवा मांडी छे, परंतु ते साधुनो तेमां उपयोग नथी तेथी तेनो आवश्यक छे ते आगमथी द्रव्य आवश्यक मान्यो छे, केमके, अनुपयोग छे तेथी तेने द्रव्य मानेलो छे.

॥ अने नो च्रागमयी द्रव्य च्रावश्यक त्रण मकारथी थाय छे.॥

प्रथम पूर्वकालमां जेणे आवश्यक सूत्र पढेलुं छे, तेवा पठित साधना भेतमां, आवश्यक सृत्र मानवुं ते, जा्गाग शरीर द्रव्य-रूपमां आवश्यकनो निक्षेप जाणवो १ ॥ अने अपरकालमां दीक्षा लइ जो आवश्यक सूत्र भणवावाला छे, तेवा पुरुषमां, आवश्यक सूत्रनो निक्षेप करवो ते, भविद्य श्रीर द्रव्यरूपमां आवश्यकनो निक्षेप नो आगमथी जाणवो. २ ॥

अने जाणग, तेमज, भविअ, शरीरथी व्यतिरिक्तमां मुख धोवं, दातन करवं, आदि लोकिक, अने जे चरकादिक साधुओं इंद्र. यक्षादिकनी पूजा विगरे करे ते कुप्रावचिनिक, २। अने जैन क्रियाथी स्थिल थयेला आवश्यकमां प्रवित्त करे ते लोकोत्तरिक, ३। एवी रीते संसारी जीवोनां अनेक प्रकारनां अवश्य कर्तव्योनो अने स्थिलाचारीओना कर्त्तव्योनो समावेश करीने बतावेलो छे.।। एम त्रण प्रकारे नो आगमथी द्रव्य आवश्यकनुं, वर्णन मृल सृत्रथी करी बतावेलुं छे.।।

इति त्रावर्यकना तृतीय द्रव्यनिचेपनो सूत्रार्थः

हवे तृतीय द्रव्यनिक्षेपनुं लक्षण कहीये छीए.

॥ छंद ऋार्या. ॥

भृतस्य भाविनो वा, भावस्य हि कारणं तु यल्लोके । तद्रह्यं तत्त्वज्ञैः, सचेतनाऽचतनं कथितं ॥ १॥

त्र्रर्थ:—आ लोकने विषे, जो अर्तात, अथवा अनागत, कालनी पर्यायनुं कारण छे तेनुं नाम द्रठ्य छे, । अने ते जीव, अथवा अजीवना, वस्तु रूपथी छे, । अथवा जीव अजीवना

१ व्यतिरिक्त, एउले ने शुद्ध स्वरूपवाला साधुमां, द्रव्यनिक्षेपना विषयरूप, छ आवस्यकनी किया, जणाववा, स्त्रकारे, सूत्रनी प्रश्ति करेली हती, ते नहीं, पण नाम प्रमाणे, बीजाज गुणवालो, आवस्यकनी कियानो, द्रव्यनिक्षेप समजवो एस्त्रकारना अभिप्रायथी लखी जणाव्युं छे.

भेगापणानी वस्तुरूपथी छे,। एवं तत्वना जाण पुरुषोए कहेतुं छे.।।

जेमके, इंद्रपदयी चवीने मनुष्य थयेलो होय अने तेने इंद्र कहीये छीए, अथवा मंत्रिपणाना पदथी भ्रष्ट थयेलाने मंत्री कहीये छीए. तेम,। अथवा मनुष्यपणाथी चवीने, इंद्रपणानी पदवीने माप्त थवावाला पुरुषने इंद्र कहीये ते, जेमके राजाना कुंवरने राजा कहीये तेम.।।

।। एमां समजवातुं ए छे के, अतीतकालमां, इंद्रपणे हतो, ते मनुष्य थयो, तो पण तेने इंद्र कहो, । अने जे मनुष्यपणाने छोडीन, इंद्रपदने प्राप्त थवानो छे, तेने जे इंद्र कहो ते अनागतकालनी अपेक्षा लइने कहो, । ते इंद्रपणाना 'जीव कर्ष द्रव्यमां, पूर्व-काल, किंवा, अपरकाल, नी पर्यायनो आरोप करीने, इंद्र कहो ते, "द्रव्यनिक्षेष" थी कहो।।।

एवीज रीते काष्टादिकथी उत्पन्न थयेली उब्बी आदि व-स्तुमां, काष्ट्रपणानो आरोप करवो, । अथवा काष्टादिकथी उत्पन्न थवा वाली वस्तुनो, काष्ट्रमां आरोप करी डब्बी आदिने मानी लेबी, ते अजीव रुप द्रव्यमां " द्रव्य निक्षेप " कहेवायः ॥ १॥

इति तृतीय द्रव्य निचेप लचगा स्वरुप संपुर्ण. ॥ ३ ॥

हवे आवश्यकना चतुर्थ भाव निचेप विषये सूत्र ॥ सेकितं भावा वस्सयं २ दुविहंपगात्तं तं जहा, त्रागमत्रो त्र १। नो त्रागमत्रो त्र २ ॥ सेकितं त्रागमत्रो भावा वस्सयं जागाए उवउत्ते, सेतं भावा वस्सयं १ ॥ सेकितं नो त्रागमत्रो भावा वस्सयं २ तिविहं पन्नत्तं, तं जहा,

१ डावडी.

लोइम्रं, कुप्पावयिग्रमं, लोग्रतिरम्रं, इत्यादि.

अर्थ:—भाव आवश्यक पण, आगमियी १, अने नो आगमिथी २, एम वे भकारथी छे.। आगमिथी भाव आवश्यक
तेने जाणवोके, जे साधु आवश्यकने शुद्धपणाथी परिपूर्ण पणे भणेलो होय, अने तेमां परिपूर्ण पणे उपयोग वालो पण होय, तेनुं
नाम आगमिथी 'भाव आवश्यक पणुं 'जाणवुं १। अने जे 'नो
आगमिथी "भाव आवश्यक पणुं छे ते त्रण भकारथी छे.।।
तेमां मथम, लोकिक भाव आवश्यक ए छे के, सवारनी वखते,
अने संध्याकालना समये, अन्यमतना लोको भारत अने रामायणनुं
अवण करे छे, ते. १।।अने कु प्रावचिनिक भाव आवश्यक ए छे
के, जे चरक आदिसाधुओ, होम, जाप, नमस्कारादिक, वखतो वखत
दिन दिन मतें करे छे ते. २।। लोकोत्तरिक भाव आवश्यक
ए छे के, जे शुद्ध जैनना साधुनुं, अथवा शुद्ध श्रद्धावाला श्रावकोनुं,
अवश्य कर्त्तव्य एटले वे वखतनुं प्रतिक्रमगा करवानुं ते, लोकोत्तरिक ''भाव आवश्यक छे " ३

आजे अमोए, चार " निच्चेप " नो अर्थ, करीने बताव्यों छे ते वधोए मूल सूत्रमां, गणधर महाराजाओएज करेलों छे, ते-मांथीज आ किंचित मात्र अर्थ करीने बताव्यों छे, पण अमारी मित-कल्पनाथी करेलों नथीं, अगर कोइने संदेह थाय तो बीजाना के-हवा उपर भरुसों न राखतां, कोइ पंडितनी पास, सन्त्रपाठ वंचावी, तेनों अर्थ पण सांभलीने, आपणा मनमां निश्चय करवों, अने जैन मार्गथी श्रष्ट होय तेमनो संग छोडी, शुद्ध जैन मार्गने आदरवों, ए अमारी सर्व भव्य जीवोंप्रति प्रार्थना छे.

इति त्रावदयकना चतुर्थ भाव निचेपनो सूत्रार्थः

हवे भाव निक्षेपनुं लक्षण कहिये छीए

ऋार्याः

भावो विवाचित कियाऽनुभुति युक्तो वै समाख्यातः । सर्वज्ञैरिंद्रादिवदि हें दनादि कियाऽनु भावात् ॥ १ ॥

त्रर्थ:—व्याकरणथी, अथवा शास्त्रना संकेतपणाथी, अथवा लोकोना अभिप्रायथी, जे जे शब्दोमां, जे जे क्रियाओ, मानेली होय, ते ते क्रियाना परिणाम यक्त वस्तुनु वर्त्तन थतुं होय तेने, सर्वज्ञ पुरुषोए 'भाव 'कह्यों छे । जेमके, परम ऐश्वयना परिणाम यक्त वर्त्तन करे, त्यारेज ते 'इंद्र 'कहेवाय, केमके इंद्रमां जे इंद्रपणानी परम ऐश्वयं रूप (अर्थात् परम ठक्कराइपणा रूप) नी क्रिया तेनो तेनामांज अनुभव होवाथी तेने 'भाव इंद्र पणु' गणाय ॥ १॥

अहीं शुधी अमोए, अनुयोगद्वार सूत्रनो मूल पाठ, अने तेनो अर्थ,। अने चारनिक्षेपनां लक्षण, जूदां जूदां कहीने बताव्यां छे ॥ इति आवइयकना चार निचेप विषये सूत्र, तथा तेनो अर्थ, अने तेने लगतां लचगा कहीने बताव्यां.

हवे धर्मना दरवाजा नामना ग्रंथभां, शाह, वाडीलाले जे, अ-रिहंत उपर, अने सूत्र उपर, चार निक्षेप, उतारीने बताव्या छे, तेमां सूत्रपणाथी जे विरुद्ध लेख थयो छे तेना, परस्परना मेलथी विचार करी बतावीये छीए ॥

वाडीलाल, सूचना—१ लीमां, लखे छे के। लोगस्समां

जे तीर्थकरोनां, नाम छे, ते नाम−निक्षेप, न क़द्देवाय पण 'नाम संज्ञा 'कहेवाय, अन्य कोइमां नाम आपीए त्यारे ते 'नाम नि-क्षेप 'कहेवाय, ॥

अने सूचना बीजीमां छखे छे के, खुद तीर्धकरो बीराजता त्यारे नाम तो हाल छे तेज धरावता पण ते 'नाम निक्षेप ' कहे-वाय नहि. 'भाव निक्षेप 'कहेवाय.

अने चार निक्षेपनी* प्रथमनी टीपमां छखे छे के, निक्षेप= आरोपवुं ते, अथवा आरोहण, कोइ चीजमां बीजी चीजनो गुण आरोपवो ते.॥

स्त्रे एमां विचार करवानो ए छे के, सूत्रकारे एक आवश्यक क्रियारूप वस्तुमां, जेवी रीते 'चार निक्षेप ' उतारीने बताव्या, तेवीज रीते 'सर्व वस्तुमां ' चार निक्षेप उतारवाना छे, ॥ अने सूत्रकारे प्रथम गाणामां पण तेज बताव्युं छे के, जो बधारे जाण-वामां न आवे तोपण 'चार निच्तेप ' तो वस्तुमां जरूर उतारवा, एम कहीने एक 'आवश्यक क्रियारूप वस्तुमां, उतारीने पण बताव्या, ॥ अने दुनीयामां जे जे, जीव, अजीवादिक, वस्तु छे, अथवा उत्पन्न थाय छे, तेनी समज तेमां नामनो निक्षेप थया पछीज थाय छे, । कोइक वस्तुमां तो नामनो निक्षेप ते शब्दना गुण पूर्वक थाय छे, । अने कोइक वस्तुमां शब्दना गुण विना पण नामनो निक्षेप करी शक्त छे, जेमके विमानना आधिपति थवावाला देवतामां 'इंद्र'नामनो निक्षेप करवो ते, शब्दना गुण पूर्वक नामनो निक्षेप छे, अने गृज्जरना पुत्रमां 'इंद्र 'नामनो निक्षेप छे ते, शब्दना गुण विना नामनो निक्षेप करेले छे, ।

परंतु केहवाशे बन्ने वस्तुमां नामनो निक्षेपज,। केमके 'हंद्रनुं'स्व-रूप साक्षात छे ते पण जीव अजीवरूप वस्तुज छे, । अमे गुज्जरनो पुत्र छे ते पण, जीव अजीवरूप वस्तुज छे—अने वस्तुमां ज, नामनो निचेप करवानो शास्त्रकारे बतावेलो छे, ॥

प्रथम जूबो के, तीर्थकरोनो जीव, अने अजीवरूप तेमतुं शरीर, ए वे मलीने जीव अजीवरूप एक वस्तु छे, तेमां तेमनां माता पीताए 'नामनो निक्षेप ' गुण पूर्वक करेलो छे, । अने कोइ कोइ तीर्थकरोमां, देवताओए पण 'नामनो निक्षेप करेलो छे, ।।

जूनो कल्पसूत्रनो पाठ, ॥ यथा. जप्पिन्हं चगां अम्हं एस दारए कुर्छिसि गद्धताए वकंते, तप्पिमिइंचगां अम्हे, हिरगोगां वामहो, जाव पीइ सकारेगां अइव २ वहुामो, जाए भविस्सइ तयागां गुगां गुगा निष्फगां नामधिज्जं करिसामो " वद्धमागुत्ति"

'अने आगे भगवानी बालक अवस्थामां, ॥
देवोहिंसे गाम कयं "समगो भगवं महावीरे "॥
ऋर्षः भगवान महावीर स्वामीना जन्म थया पहेलांज, मातापीताने, एवो विचार थयो के, ज्यारथी भगवान गर्भमां आध्या
छे, त्यारथी, अमो सुवर्ण, धन, धान्य, राज्य, विगरेनी द्यद्धिने माप्त
थयां छीये, वास्ते ज्यारे ए बालकनो जन्म थशे त्यारे अमो ए वालकतुं नाम 'वर्द्धमान, एवं पाडीहां, । अने बालकपणामां ज्यारे
भगवाने देवतानो पराजय कर्यो त्यारे ते देवताए 'श्रमगा भगवंत
महावीर, एवं नाम आपे छं छे. तेथी २४ मा तीर्थं करमां वर्द्धमान,

अते महावीर, ए वे नामनी निक्षेप गुणपूर्वक अयेलो छे. सम शास्त्रना संकेतथी जाणवामां आवे छे, ॥

हवे जूवो प्रथम तीर्थंकरतुं नाम 'रूषभ छे, ते रूपभ शब्द व्याकरणना संकेतथी बलदतुं नाम छे; ते पण अनादिथी सिद्धज छे, अने तेज रूपभ शब्दनो आरोप भगवाननी साथलोमां बळदतुं चिन्ह जोइ माता पीताए करेलो छे, अने शास्त्रना संकेतथी ते आ-पणे जाणी पण शकीये छीये, अने जीव अर्जावरूप वस्तुमांज थयेलो छे, तो पछी तीर्थंकरोनां नाम ते 'नामनिच्चिप'न कहेवाय एवुं क्रया सिद्धांतना आधारे कहो छो ? ते सिद्धांतनुं नाम प्रगट करो, अने जो अनुयोगद्वार सूत्रना, आधारथी नामनिक्षेपनी ना पाडता हशो तो ते, तमारु लखवुं तदन अयोग्यज छे, केमके ते स्-त्रमां तो जीव अजीवरूप एक वस्तुमां पण नामनो निक्षेप करवानो कहेलो छे, । अने तीर्थंकरो छे ते पण जीव अजीवरूप एक वस्तुज छे, वास्ते नाम छे ते नामनो निक्षेप नही एवं त्रण कालगां पण तमाराथी कही शकाशे नहीं, ॥

वळी पण दाखला जुवो के साधु, अने राजा, आ पण वे नाम छे, ते अनेक पुरुषोमां वखतो वखत अपायाज करे छे, अने कोइमां गुण पूर्वक होय छे, अने कोइ प्ररुषमां गुण विनातुं पण जो-वामां आवे छे, तो तेने नामिनक्षेप नहीं कहो तो बीजुं शुं कही शकवाना छो ? तेनो पण जरा युक्तपणाथी विचार करो, अने जै-नोना सिद्धांत साभी दृष्टि करों तमो आपणी मूर्खताइ तरफ लक्ष न देतां, लाखो आचार्यमां भूल बतावो छो, ए कया प्रकारनी तमारी मूर्खताइ गणवीं ! आ वातमां घणो पुक्तपणाथी विचार करवानो छे, केमके एतो तीर्थकरोतुं सिद्धांत छे, वास्ते विप्रतिष्णे जवाने जरा पण मार्ग रहेलो नथी ? अने परंपराना गुरुनी पासथी भण्या वगर ए गहन विषयोनुं ज्ञान पण थतुं नथी ? एम खासपणे मनमां लक्ष राखवानो छे. छेवटमां तात्पर्य ए छे के.

जे जे नाम पाडवाना शब्दो छे, तेतो आपणा आपणा गुणने जणाववा वाला अनादिकालथी, वस्तुथी भिन्नपणे सिद्धरूपेज थयेला छे, । अने वस्तुओनी उत्पत्तिनी साथे, कोइ कोइ वस्तुमां, व्याक्ररणना संकेतथी गुण पूर्वक, अने कोइ कोइ वस्तुमां शास्त्रना संकेतथी गुण पूर्वक, आरोपित करवामां आवे छे, तेज 'नामनिच्चेप छे, । अने तेनी पर्याय वाचीनां बीजां नाम होय ते पण, तेनी साथे लागु पाडी शकाय छे, जेमके आदिक्य, नाभि सूत आदि अने ते शब्दोनो गुण विनानी वस्तुमां ज्यारे लोको निक्षेप करे छे त्यारे, तेनी पर्यायवाचीनां बीजां नामनी महत्ति, ते वस्तुमां करी शकाय नहि, एज विशेषपणुं छे, पण नामनिक्षेपपणामां विशेषपणुं किंचित् मात्र पण नथीं, ?।।

आ विषयनो विचार करवावालाने, एक तो मूल सूत्र उपर लक्ष राखवाथी, अने लक्तकारना लक्षण उपर लक्ष देवाथी, यथा योग्य पण मालम पडके ॥ १॥

हवे अही वाडीलालना लेखथी पण विशेष विचार जूवो के, व्याकरण शास्त्रना नियमथी 'ऋरिहंत नामनो अर्थ, शतुने जीतवानो अनादि कालथी सिद्ध छे, ते नामनो अर्थ, रागादि शतुओने जित-वानो जैन शास्त्रना संकेतथी करी, तीर्थकरोमां 'अरिहंत नामनो नि-क्षेप, यथार्थपणाथी करेलो छे, अने अरिहंत शब्दथी, तीर्थकरोना जीव रूप वस्तु, जूदी नथी एम कोण कही सके एवं छे ? वास्ते अरिहंत शब्दना गुणनोज, तीर्थंकरना जीव रूप वीजी वस्तुमां आ-रोप करवाथी निक्षेप शब्दनो अर्थ पण तमारा लख्या ममाणे य-थार्थपणे ज लागु थाय छे, अने सूत्रमां पण जीव अजीवादिक वस्तुमां आवश्यक सूत्रनुं नाम आपवानुं वतावेलुं होवाथी, ते सत्य रूपथीज निक्षेप थयेलो छे, परंतु सद्गुरुना चरणनी मासादी मल्या-वगर तमोने म्रांति थयेली छे.

जूबाके, आवश्यक सूत्र, लखाइने तैयार थया पछी, आ-बश्यक एवं नाम आपीये ते अजीव रूप वस्तुमां नाम निक्षेप थयेलो गणाय, । अने जीव अजीवना पुतला रूप साधुमां, नाम आपीए ते पण यथार्थपणाथी नामनो निक्षेप गणायः ।। ए सिवाय बीजी बस्तुमां आवश्यकनां बीजां पर्यायवाची नाम सूत्रकारे आप्यां छे, तेनी प्रद्यति करी सकाय नहीं, मात्र आवश्यक सूत्रमां, अने अभेद-भाव मानीने शुद्ध साधुमांज, ते नामनी प्रदृत्ति करी सकायः

गाथा ॥ १ त्रावस्तयं, २ त्रवस्त करणियं, ३ घुवनिगाहो, ४ विसोही त्र, ५ त्रजयण इक वग्गो, ६ नात्रो, ७ त्राराहणामग्गो ॥ १ ॥ समगोगं सावएणय, त्रवस्त कायद्वं हवति जम्हा, ॥ त्रतो त्रहोनिसस्तय, तम्हा त्रावस्तयं नाम ॥ २ ॥

ऋर्थ:—सायु आदिने अवश्य करणे योग्य, । अथवा वश होवे कषायादि भाव शत्रुओ, । अथवा वश होवे ज्ञानादि गुण, । तथा एतुं नाम ऋावइयका छे १ ।। सायुओने तेमज श्रावकोने नियम पूर्वक करवाने योग्य होवाथी एतुं नाम ऋवइय करगीय पण छे, २। ध्रुव जे कर्म, अथवा संसार, तेनो निग्रह (अर्थान् नाश) कर- वावालो होवाथी एनुंनाम ध्रुव निग्रह पण कहीय, ३। आत्माना कर्ममेलनी शुधी करवावालो होवाथी एनुं नाम विशुद्धी पण कि हीये, ४। छ अध्ययन भेगां होवाथी एनुं नाम ऋध्ययन षट्वर्म पण कहीये, ५। जीव अने कर्मनो संबंध दुर करवावालो होवाथी एनुं नाम न्याय पण कहीये, ६। मोक्षनी आराधनानो मार्ग होवाथी एनुं नाम न्याय पण कहीये, ६। मोक्षनी आराधनानो मार्ग होवाथी एनुं नाम ऋाराधन मार्ग पण कहीये, ७॥ १॥ साधु अने आन्वकने पातःकाल अने संध्या कालना समये अवस्य करवाने योग्य छे, ते कारणथी एनुं नाम ऋावइयक राखेलुं छे॥ २॥

आ वे गायाच्ची आवस्यक सूत्रना चार निक्षेपना अंतमां आपेली छे, तेमां पहेली गाथामां आवश्यकनां एकंद्र सात नाम कह्यां, । अने वीजी गाथामां साध अने श्रावकने अवस्य करवानं कर्त्तव्य होवाथी एतुं नाम 'त्रावइयक ' छे एवं मगटपणे जणाव्युं छे, । वास्ते ए भाव आवश्यकनाज चार निचेप सूत्रकारे करीने बताव्या छे, ॥ मात्र विशेष एज छे के, बीजी वस्तुमां आवश्यक नामनो निक्षेप करेलो होय तो, तेनां वीजां रहेलां छ नाम छे तेनी महत्ति करी यकाय नहीं, पण त्रावश्यक सूत्रमां बीजां आवश्यकनां छ नामांनी पटति करवामां हरकत आवे नही, तेमज आधार अने आधेय एक मानीने साधुमां पण आवश्यक सूत्रनी प्रवृत्ति करी शकाय छे, अने तेज प्रमाणे सिद्धांतकार गणधर महाराजाओए करीने पण बतावेछी छे, जुओ स्थापनानिक्षेप सूत्र, अने तेनुं लक्षण पृष्ट ५५ थी ते ५७ सुधी ॥ अने तमो जे हयात तीर्थंकरोनां नामने 'भाव निच्चेप' कहोछो तेपण सिद्धांतथी, केटला बधा विरुद्धपणे गयालो, तेनो पण जरा विचार तो करो. ?

हुं! वस्तुना 'चार निचेप ' करवाना शासकारे बताच्या छे 'ते चारेने ' एकजरूप करी देवा धारो छे के! परंतु चार निक्षे-पने एक स्वरूपमां गणधर महाराजाओथी विपरीतपणे जड़ न करी सकाय.! अने तेवा प्रकारनो प्रयत्न करीये तो, आपणा जेवा अष्ट बीजा कोइ पण न गणाय.!!

॥ इति प्रथम नाम निचेपनो किंचित् तत्त्वाऽतत्त्व विचार संपूर्ण.

हवे दितीय स्थापना निक्षेपनो तत्त्वाऽतत्त्व विचार लखीये छे.॥

| वाडीलाल-सद्भाव स्थापना, फोटोग्राफ, अथवा, बाबछं, ।। असद्भाव स्थापना १० प्रकारथी कराय, ।। अने पृ. ६२ मां सूत्रना बीजा निक्षेपमां, कागल मुकीने 'स्थापना निक्षेप' करवानुं बताच्युं छे. ॥

॥ हवे एना उपर विचार,। प्रथम अमो एटलुंज पुछीये छे के,। १० दश प्रकारथी असदभाव स्थापना कराय छे, एवं क्या ग्रह पासेथी अथवा कया सिद्धांतथी भणीने आव्या! अने सूत्रनी 'स्थापना' कोरा कागलथी करवानुं बतावोछो तेपण, कया अकलवाला सिद्धांतना जाण पासेथी भण्या! केमके, सूत्रकार गणधर महाराजे तो, सद्भाव, अने असद्भाव, ए बन्ने प्रकारनी स्थापना दश प्रकारमांज, करवानो समावेश करी बतावेलो छे,। तो पछी दशे प्रकारने असद्भाव स्थापना कया हिशावथी कहोछो ? अने लखेला अक्षरोने आवश्यक सूत्रनी 'सद्भाव स्थापना' गणधर महाराजाओए मूल सूत्रमांज कहेली छे, तेने द्रव्य निक्षेपमां

कहोछो, तो ते कया गुरु पासेथी भणीने लखी बतावोछो ? केमके, ढूंढनी पार्वती छे तेपण, सत्यार्थचंद्रोदय पृष्ट. ४ मां, आवश्यक सूत्रनी स्थापनामां, समज्या वगर एटल तो जरुर लखे छे के, काष्ट्र पे हिखा पोथी पे हिखा. अंगुर्हीसें हिखा । यावत आवस्यक करनेवारेका रूप, अर्थात् हाथ जोडे हुये, ध्यान स्माया हुवा, ऐसा रूप इत्यादि, तो पछी तमो सूत्रनी स्थापना निश्लेपमां, कोरा कागल मुकवानुं, लखोछो, ते तो सूत्रथी पण विरुद्ध, अने ढ़ंढनी पार्वतीना लेखथी ५ण विरुद्ध,अने अनुयोगद्वार सूत्रमां, सूत्ररूप वस्तुनो द्रव्यनिक्षेप करतां शास्त्रकारे जे, नो आगमना भेदमां "पत्तय पोत्थय लिहित्रं ऋहवा सुत्तं पंचविहं पन्नत्तं ऋंडयं बोडयी कड्यं " इत्यादि लखेलुं छे ते पाठ देखीने जे भ्रांतिमां पड्याछो तेरण, अर्द्धद्रश्य गुरुनी पासें भणवाशीज पड्याछो, केमके,ते " पत्तय पोष्ट्यय लिहिय " नो पाठ छे ते, नो आगमपणाथी, जाणग शरीर, अने भविय शरीरथी, व्यतिरिक्तपणे, भावतं कारण मानीने, पाउने ग्रहण करेलो छे,परंतु मुख्यतारूपे सृत्रना निक्षेपनी भलामण तो आवश्यक सृत्रना निक्षेपनी साथेज क-रेली छे।। वास्ते एम अक्षर मात्र वांची जवाथी अनुयोगद्वारसृत्रनुं ज्ञान थतु नथी ? तेम अर्द्धद्रथ थयेला हृंढक गुरु पासे भणवाथी पणज्ञान थवानुं नथी? वास्ते परंपरागत गुरुना चरणनी सेवाथीज ते ज्ञान प्राप्त थरो ? अमो पण लखी लखीने क्यां सुधी समजावी शकवाना छीये? वास्ते निश्लेपना विषयमां तमारो छेख । कींचितुमात्र सत्य कृषे थयेछो नथी?।|आवी रीते पाया वगरना,गणधर महाराजाओथी पण विपरीतप-णे हेखो हखी, अने सर्व आचार्योने तुच्छ गणी, आपणे आप विचा-रशक्ति पामेलानी पंक्तिमां टाखल थवा मागो छो तो केवा प्रकार-थी थशो ? तेनो विचार तमोज तमारी मेळे करी जवो. ॥

ं वाडीलाल अत्रे आपणे * नी बीजी टीपमां छखे छे के 🕸

दुनियामां जेटली चीज छे तेटली बधी कबुल करवा छतां, पुजवा योग्य होई शके निह, तेमज निस्तेप चार छे ते चारने पूजे तोज निक्षेप चार कबुल राख्या एम साबीत थतुं नथी, । जैनो कहे छे के, केटलीक चीजो ब्रेय, उपादेय, अने हेय, माटे निक्षेप एक वे निह एण चार छे एम कबुल राखनारा माणसे, स्थापना निस्तेपने, उपादेय तरीकेज कबुल राखवो जोइए एवं कहेनारा मात्र पोतानेज ठगे छे. ।।

हवे एना उपर विचार, ॥ दुनियानी बधी चीजो पृजवाने योग्य छे एम कोइए कहुं पण नथी, तेम कोइ पृजतुं पण नथी, ए तमारो हेखज अयोग्य छे. । तेम बधी चीजोना चार निचेपने 'पूजवा एम पण कोइ शास्त्रकारे वताव्यं नथी, आ हे-खमां केवल समज्या वगरज आपणी अकलनो घोडो दोडाव्यो छे. । केमके, न तो शास्त्रकार सर्व चीजोना 'नाम निक्षेपने 'पूजवातुं कहे छे, तेमज न तो सर्व चीजना 'स्थापना निक्षेपने 'पूजवातुं कहे छे, तेमज न तो सर्व चीजना 'प्रव्या निक्षेपने 'पूजवातुं कहे छे, तेमज न तो सर्व चीजना 'प्रव्या निक्षेपने 'पूजवातुं कहे छे, तेमज सर्व चीजोना 'भाव निक्षेपने 'पण पूजवातुं कहे हो, । अने तेमज सर्व चीजोना 'भाव निक्षेपने 'पण पूजवातुं कहे होना नथी. । तो पछी शा वास्ते समज्या वगर आवा विपरीत लेखो लखी लोकोने अमित करो छो ? ते कांइ समजातुं नथी, शुं तमोने चीतराग देव उपरज द्वेष थवाथी आवा विपरीत लेख लखो छो ? ॥ जूबो शास्त्रकारनी मान्यता शुं छे तेनो विचार करो, ॥

शास्त्रकारनी मान्यता ए छे के, जे चीजनो 'भाव निचेप ' अमारे स्मरणीय, वंदनीय, अने पूजनीय छे, तेनो नाम निचेप

तो स्मरण करवाने योग्य छे, अने तीर्थंकर महाराजाओना नामने याद करी दिन दिन प्रति स्मरण पण करीये छीये,। अने तेज तीर्थ-कर महाराजा ओना स्थापना निच्चेप रूप मृत्तिने वंदन करवाना अधिकारीयो सार्खु वदन पण करे छे, अने वंदन, पूजन, करवाना अधिकारीयो श्रावको, वंदन, अने पूजन, ए बन्ने पण करे छे,। अने तेज तीर्थंकर पट्ने प्राप्त थयेला, प्रथम चोवीशीना तीर्थंकरोन ' द्रव्यनिचेपथी एण 'मान्य करी स्मरण आदि करीये छीये,। अने तेज तीर्थंकर पदने प्राप्त थवावाला तीर्थंकरोनी चोवीशीने, द्रव्य निक्षेपना आधारे स्मरण आदि सदा करीये छीये ,॥ अने ज्यारे ' भावनिचेपरूप तीर्थंकरोनो ' समागम थासे त्यारे ते-मनी पण भक्ति करवा चुकीस्युं नहीं. ॥ तेमां पण विशेष एज छे के, जेवी रीते आज तेमना नाम निक्षेप उपर मेम छे, अने तेमना स्थापना निक्षेप उपर भेम छे, अने तेमज तेमना 'द्रव्य निक्षेप ' उपर प्रेम छे, तेवी रीतनो प्रेम, तेमनी इयातमां रेहसे तोज भक्तिनो लाभ लइ सकी हुं. । अगर जेवी रीते आज तमो 'त्रगा निचेप ' उपर अभाव पणु कहीने बतावो छो, तेवी रीते अमो पण तेमणा त्रण निक्षेप तिरर्थक कहीने अभाव मगट करी बताबी हां तो ते, भाव तीर्थकरनी भक्तिनो लाभ पण मेलवी सकी शुं नहिज,। परंतु निश्चय थाय छे के, ज्यारे अमेनि तेमना 'त्रण निक्षेप' उपर भेम छे, अने तेमनी भाक्त करवाने तत्पर छीये, तो तेमना भाव निच्नेप नी भक्ति करवाने पण भाग्यशाली थइ सकीस्युं ?॥ परंतु तमारी तरां 'त्रण निक्षेपने ' ऋवध्यु ' कही चोथा भाव निक्षेपने पण अवथ्यु केहवानो प्रसंग आववा दइ ह्यं नही ? । वास्ते जे चीजनो

'भाव निर्त्तेष ' उपादेष तरीके मानीये छीये, तेमना बीजा 'त्रण निर्त्तेष पण ' उपादेष तरीके अंगीकार करीय छीये, । अने जे चीजनो 'भावनिर्त्तेष ' क्षेय रूपे मानीये छीये, ते चीजना बीजा 'त्रण निर्त्तेष पण ' क्षेय रूपे अंगीकार करीये छीये, । अने जे चीजनो 'भाव निर्त्तेष ' हेयतरीके मानीये छीये, ते चीजना बीजा 'त्रण निर्त्तेष पण ' हेयतरीकेज मानीये छीये, । तेथी कुतकों करिने पेटने आफरो चढाववाने जग्या छेज नहि. । विचार उपर आवसो तो तमने पण समज पडसे, अने हठ उपर जसो तो एक बात पण यथा योग्य समजी शकासे नही. ॥ वास्ते अमो ठगाता नथी, परंतु जे 'अवध्धु ' कहीने अनादर करे छे, तेज भगवाननी भक्तिना छाभथी ठगाय छे. ॥

प्रभुनो फोटोग्राफ, त्रगर बावलुं नमलवाथी * नी तीसरी टीपमां.

वाडीलाल—छोको ज्यारे मूर्तिने आगल करवा मागे छे तो पछी आ एक आश्चर्य वार्ता छे के तेओ 'सदभाव ' छोडी ' असद् भाव ' स्थापना, केम करे छे। जेनुं नामज, 'असद् एटले खोडं, तेने ग्रहण करवुं ए हां विचार शाक्ति पामेला पाणीने शोभती वात छे! श्रीमिञ्जिनाथजीनुं सुवर्णनुं बावलुं के विषयी राजाओ तेने भेटवा तलपी रह्या हता. जो मूर्ति पूजा ए रुडुकाम होत तो केम साचवी राखवामां न आवत। वलीकारीगरो, आबे-हुब छबी वनावनारा हयाती धरावतां छतां, कोइ पण तीर्थंकरनी छवी, के, बावलुं, केम न बन्धुं १ ए समजातु नथीः । भगवान ती, जाणता, हताज के, अमारा पाछल वस्तत आवो आववानो छे, वली ते भविष्यकालतुं वर्णन पण करी बताबता, तो ग्रुं कोई श्रीमंतो, ते वस्तमां नहोता के, जेओ भविष्यना करोडो जीवोना हितार्थे, हयात भगवाननी छवी, अने बावलां, बनावी राखे । एम थयुं होत तो आजे ' ऋसद्भाव स्थापनामां ' कोईने मुजाइ रहेंचुं पडत नहि। वळी आ पण विचारवा जेवुं छे के ' सद्भाव, अने असद्भाव ' स्थापना ते रूपवंत वस्तुनीज होई शके, पण कांइ भावगुगानी होई शके नहि। भगवान पोताना उपरनो मेल दूर करी निज रूपमां भळी गयेला आत्माज छे, तेना गुण जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र, ते तो अदृश्य छे, तेनी स्थापना शी रीते थई शके । मकाशक. ॥

हवे एना उपर विचार. ॥

वर्त्तमान कालमां पण जे पाषाणादिक वस्तुथी, वीतरागदेवनी "मूर्त्ती " बनाववामां आवे छे, ते मूर्ति असद्भाव नथी, परंतु सद्भावज छे. । केमके भगवान उपदेश देवाने बेसता हता त्यारे, प्रद्यासन लगावीने, अने नासिकां उपर दृष्टि दइने बेसता हता, । अने अंत अवस्था वस्वते पण तेथीज रीते ध्यानमां आरूढ थता हता, । अने हालमां पण तेज प्रकारथी मूर्तियोनी आकृति बनावववामां आवे छे, माटे असद्भाव नथी, परंतु 'सद्भाव स्थापनाज कर्राने पूर्जीये छीये । आ वातमां खेतांबर मूर्तिने वछो भीडावे छे, । अने दिगंबर ते सद्भावमां किंचित् वांधो उठावीने नम्नपणे मूर्ति स्थापित करे छे, । अने तमो दूंदको तो शास्त्रना पर

वित्र लेखोनेज उठावी देवानो प्रयत्न करो छो, पर्तेत एटलो बघां मोटो अन्याय करवाने जैन सिद्धांतोमां मार्ग नथी, एतो केवल त-मो धिठाइज करो छो.। वास्ते आश्चर्य तो एज वधारे लागे छे के, आटली वधी धिठाइ चलावीने पण पाछा विचारक्षक्ति पामेलानी पंक्तिमां प्रवेश करवाने तह्यार बनी जावो छो.

वळी भाइ साहेब टखे छे के, मूर्तिपूजा ए रुडु काम होत तो, श्रीमिल्लिनायजीतुं सुवर्णतुं बावछुं केम साचवी राखवामां न आवत!।

उत्तरमां जणाववानुं एज छे के, । भाग्यशार्ळी भक्त श्रावको तो एमज समजे छे के भगवाननी भक्ति करवी ए तो सदा रुडुज छे, । अने जे सुवर्णनुं बावलुं राखी मुकवानुं वतावो छो, ते तो शास्त्रथी निरपेक्ष थइ कुतर्कज करो छो, केमके ते तो स्त्रीरूपे, मो-इ, अने 'दुगंछा ' उत्पन्न करवा वास्तेज उभू करवामां आव्युं इतुं, परंतु पूजन करवा वास्ते उभू करवामां आव्युं न इतुं. । वास्ते ते बावलाने राखी मुकवानी जरुरज न इती, । तमोज लखो छो के, विषयी राजाओ तेने भेटवा तत्थी रह्या इता, तो पछी ते बाव-लाने राखी मुकवानुं केम बतावो छो। ॥

वळी ढुंढक भाइ लखे छे के, कारीगरी हयात छतां मूर्त्ति के बावलुं केम न बन्युं ?।।

एनो उत्तर एटलोज छे के, । ते वस्ततमां जैनसिद्धांतने जाणवामां 'श्राचार्यों ' पण महा कारीगरो हता, अने सलावटो
पण महा कारीगरो हता, तेमां सिद्धांतना कारीगरो गणधरादि आचार्यों हता, ते तो जगो जगो पर सिद्धांतमांज लखता गया, अने
सलावटो हता ते तो, पद्मासन सहित, नाशाग्रदृष्टियुक्त, अने समचोरस संस्थान पूर्वक, आवेहुब भगवाननी मूर्तियो, घडी घडीने पण
मुकताज गया हता, अने तेज नमुना पूर्वक छोटा मोटा श्माणपणा-

ना आकारथी तीर्थंकर महाराजनी प्रसन्न मूर्तियो तैयार थती चा-ली आवे छे, । परंतु जे महापुरुषोना, मिष्ट्यात्वरूप, तिमिर पड-दा, दूर थइ गया छे, तेओ यथावद्यणे तो सिद्धांतोनो पाठ जोइ, अने तेज प्रमाणे भगवाननी सृत्तियोनां दर्शन करी, परमानंदमां गरकाव थइ, अनत जन्मनां संचित अघोर कर्मोने दूर करी रहा छे, । अने जेओना महामिध्यात्वरूप तिमिर पडदा दूर नथी थया तेओ विपरीतपणे आचरण करी अवज्ञा करे छे. । तेओ अघोर पापना उदयथी नतो सिद्धान्तना पाठ थकी समजी शके तेम छे, अने नतो हजारो वर्षनी मृत्तियोनां दर्शन करीने पण समजी शके तेम छे,। अमो तो छेवट एम कहीये छीये के, जेओ वीतारागना वचनथी तदन विपरीत बनेला छे, तेओने तो साक्षात तीर्थकरो पण आवीने समजावी शकशे नहि, तो पछी ऋबीयो, अने बावलां मात्रना स्वरूपथी समजण क्यांथी थइ शकवानी छे. ॥ अने ते ज्ञा-नी पुरुषो भविष्यकालनुं वर्णन पण करताज गया छे के, मतिया घणा जागशे, अने शुद्ध चालता पंथमां भेदो पाडशे, अने तेज प्रमा-ण आपणे जोइ पण रह्या छीये. वास्ते स्थापनानिक्षेपरूप जिन मूर्त्ति असद्भाव नथी, परंतु निकृष्टकालना प्रभावथी तेते जीवोना अभाग्यने लीधे तेओना मनमां असद्भाव परिणामपणानी स्थाप-नाओ थयेली छे. । तेथी तेओ मुझाय छे. ॥

वळी आ विषयमां ढूंढक भाइ छत्ते छे के, आ पण विचारवा जेवुं छे के, सद्भाव, अने असद्भाव, ते रूपवंतनी होइ शके, पण भावगुणनी होइ शके निहा भगवान निजरूपमां भळी गयेछा आ-त्माज छे, तेना गुण जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र, ते तो अदृश्य छे, तेनी स्थापना शी रीते थइ शके !!

विचार-तमो लखोछो के, स्थापना रूपवंतनी होइ शके,

पण भगवान को निजरूपमां भळी गयेला आत्मा छे, तेना गुण जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र, ते तो अदृश्य छे, तेनी स्थापना शी रीते थइ शके. ?। आ लेख शुं तमारो विचारपूर्वक लखेलो छे के ? जरा आंख उघाडीने जुवो तो ? केमके जैन सिद्धांतोने तो आपणे भगवाननुंज ज्ञान कहीये छीये, अने ते भगवाननुं ज्ञानपण रूप विनानुंज हतुं. तो ते अदृक्ष्यरूप छतां क्यांथी तमारा जोवामां आन्धुं, १ अने पुस्तक पानां उपर केवी रीते चढी गयुं ? तेनो कांइ विचार कर्यों छे के ? जो थोडो पण विचार कर्यो होत तो, आवो बेढंगो लेख लखता नहीं, खेर हजी पण विचारश्रेणि उपर आवशो तो कल्याणनो मार्ग हाथ आवशे, । जूवो सत्यार्थचंद्रो-दय पृष्ट. ४ मां, ढूंढनी पार्वती पण लखे छे के, पश्च-स्थापना त्रावञ्चक क्या । उत्तरः काष्ट्र पै लिखाः, चित्रोंमें लिखाः, पोथी पै लिखा, अंगुलीसें लिखा,। छेवट एम पण लखे छे के, आवश्यक करनेवालेका रूप, अर्थात हाथ जोडे हुये, ध्यान लगाया हुआ, ऐसा रूप. ॥ एज प्रमाणे मूळ सूत्रकारे पण, अक्षरो रूपनी स्थापनाथीज भगवानना ज्ञान गुणने स्थापित करवानुं कहेऌं छे, । तेमज आवश्यक क्रिया कारक साधनी मूर्तिरूपथी पण आवश्यक-नी स्थापना करवानी कहेली छे, केमके पट् आवश्यकनी क्रिया छे ते कर्त्ता विना जाणी शकाती नथी, माटे आवश्यक क्रियानी स्थापनाना विषयमां साधनी मूर्ति पण करवातं कही बताब्यु छे. परंतु भगवानना, अदृश्यरूप ज्ञान गुणने तो, अकारादिक अक्षरो-ना स्वरूपथीज स्थापित करवानुं कहेतुं छे, अने ते ज्ञान, भगवान-नो अदृश्य गुणरूप छतां पण, कल्पनाथी करेलो छे संकेत जेमां, एवा जड भूत, अक्षरोनी, स्थापना रूपे थइ, अमोने बोध आपीने, परमपटने, पोहचाडवाने, समर्थ थाय छे, । तेवीज रीते भगवानना

श्रारानी पण, जढ पाषाणथी बनावेली मृतिं, स्थापना रूपे थर्ने, तेमना सर्व गुणोने याद करावी, भक्तजनोने परमपद प्राप्त करवाने समर्थज थाय छे. अने भगवाननी मृतिं देखवाथी भगवान याद आवे छे एम तो तमोए तेमज ढूंढनी पार्वतीए पण कबूल राखेलुंज छे. । तेथी जो तमारा आत्माना परिणाम बगडी जता होय तो ते तो तमारा दुर्भाग्यनुंज चिन्ह छे, एमां न तो अमारो दोष छे, तेम न तो भगवाननी मूर्तिनो दोष छे, वास्ते तमारी करेली कुतकों, अने तमारा जुटा लेखोज, तदन अयोग्यपणाथी लखायेला छे, परंतु वीतरागदेवनी मूर्तिरूपथी थयेली स्थापना अयोग्य नथी, ते तो आ दुनीयामां भगवानना ज्ञान गुणरूप अक्षरोनी स्थापनानी साथे सदा जयवंतीज रहेवानी छे. ।।

॥ वाडीलाल-सूचना ३ जीमां लखे छे के । मोहन घरमां श्री मिहिनाथे, पोतानुं आबेहुब सुवर्ण वावलुं मुक्युं हतुं के जे कारणथी ' क्र राजाने ' 'जातिस्मरण ' ज्ञान उपन्युं हतुं, तोपण ए क्र समिकती जीवोए बावलाने वांद्यं निह, जो के एक तो उपकारी पदार्थ, कारण भूत पदार्थ हतो, बली तीर्थकरनी सद-भाव स्थापना हती।।

'निमिराजा' चुडीना कारणथी बूड्याः ॥ 'समुद्रपाल राजा' चोरने देखीने बूड्या-पण चुडीने, के चोरने, वांद्या पूज्या न हताः॥

अहिं, 'मिल्लिनाथना ' बावला विषये, विचार करवानो ए छे के, ते मोहन घरमां (एटले मोह प्राप्त करवाना घरमां) राखे छं हतुं, अने ते छ विषयी राजाओने वोध करवा, ते बावलामां दुर्गधी पण भरी राखवामां आवी हती, अने ते दुर्गधीना कारणथी तेओ छ राजा, बोधने १ण माप्त थया इता, वली ते बावलुं गृहस्था वस्थाना चिन्हरूपथी बनावेलुं इतुं, परंतु वीतराग दशानी माप्ति थया पछीनुं बनावेलुं न होवाथी तेथी ते पूजन करवाने योग्य पण न इतुं, माटे ते विषयमां तमारी केवल कुतकों छे.। माटे वीतराग दशाने माप्त थयेला भगवाननी मृतिंने अयोग्यपणानो किंचित मात्र पण बाध आवे तेम नथी.।।

अने, जे चुडी, चोरने, वांदवा पूजवानु बतावो छो ते पण, आंख्यो मीचीने फांफां भारवा जेवुं करो छे, केमके यद्यपि जेटली दुनीयामां वस्तु छे ते बधीए, वैराग्यने प्राप्त थयेला ज्ञानी पुरुषोने तो, बोध आपनारीज थइ पडे छे, तेथी कांइ बधी बस्तुओ, वंदनिक, अने पूजनिक, गणाती नथी. । अने मूर्ख अज्ञानी जीवोने, जे मुख्य पणे आत्माना साधन रूप वस्तुओ छे, ते पण, तेओना विपरीत विचारथी, तेमने, महाकर्मना बंधन रूप थइ पडे छे, छतां पण, ते निंदानिक गणाती नथी. । एमां तो विशेष एज छे के, ते ते जीवोनी ज्ञानद्शा, अने अज्ञान द्शाज, तेमने साधक, बाधक, रूप थाय छे. । वास्ते वंदनिक होय ते निंदानिक न गणाय, । अने ज्ञेय, अथवा हेय, रूप वस्तुओ वोधनुं कारण थवा छतां, वृजनिक दण न थाय, मात्र अहिंयां तो ज्ञानी अज्ञानी पुरुषोना क्षयोपश्यमनीज विचित्रता छे. । अगर जो अमारा ढृंढक श्रावको, विचार उपर आवे तो, तेम-णेज चुडी चोरना दृष्टांतथी विचार करवानो छे के, जे चुडी, अने चोर न जेवी वस्तुथी, निमराजा अने समुद्रपाल राजा. बोधपणाने प्राप्त थया, तो पछी जे वीतरागदेव, अमारा परम उप-कारी, तेमनी मृत्ति देखतां अमोने परमानंद, अथवा परम वैराग्य, नी प्राप्ति थवी जोइए, ते न थतां जे अमोने, अभीति उत्पन्न थाय छे, तेथी न जाणे, अमारे केटलो लांबो संसार थवानो हशे ? एम

खासपणे विचार करवानो छे.। परंतु अज्ञानदशानो अंधार पिछोडो ओढी, जिन मूर्तिने जडरूप कही, अघोर कर्मना बंधननो हेतुरूप अन्नादर करवानो नथी।। केमके संकेतित जडरूप, अक्षरोथी, लखाय-छं, भगवाननुं ज्ञान 'स्थापनारूपे थइ ' अमोने बोध आपीने परम पद पहोचाडवाने समर्थ थाय छे, तो पछी तेमनीज अर्थात् भगव-तनी यादगिरीने आपनारी, तेमनीज साक्षात्रूप 'मूर्ति ' अमारा कल्याणने माटे केम नहि थाय! अर्थात् थशेज, एज विचार करी आपणा कल्याणनो मार्ग हाथ धरवानो छे, आगे तो जेनी जेवी भवितव्यता।।।

वळी ए त्रीजी सूचनामांज लखे छे के, भगवाननी मूर्ति देख-वाथी भगवान याद आवे छे, ते कारणथी मूर्ति पूजवी जोइए, ए दलील तद्दन पाया वगरनी छे. ॥

आ लेखमां कहेवानुं ए छे, के भगवाननी मूर्त्ति देखवाथी, अने तेमनी यादिगरी आववाथी, शुं! तेमनी अवज्ञा करवी! ए तमारी दलील पाया वाळी पंक्तिमां मुकवाने मागो छो के? ते कांइ समजायुं निह. । अमोने तो मूर्त्ति देखीने भगवान याद आववाथी, एवा भाव थाय छे के, एमनी भक्ति खेराद करवाथी करीये? के स्तुति (गुणग्राम) करवाथी करीये? के अमारा सर्वस्व अपण करीने करिये? एवा अलोकिक भावनी दृद्धि थाय छे, वास्ते 'मूर्त्तिने ' पूजवी ए दलील पाया वगरनी नथी, परंतु तमारी करेली कुतकींज पाया वगरनी छे. ॥

वळी एज सूचनामां रुखे छे, जिन प्रतिमा माननारा, जिन प्रतिमा, जिन सारिखी कहे छे, पण द्रव्य, के भाव, एक पणरीते ते जिन सारिखी थइ शकती नथी, भगवान देहधारी हता ते वख- तनी, छबी के, बावछं, होत तो कदाच " द्रव्ये सारिखी, कहीं शकात. ॥

आ विषयमां पण कहेवानुं एज छे के-भगवान उपदेश देता हता, तेज, ज्ञाननो सार, संकेतित जडभूत अच्चरोंनी स्थापना रूपे थइ, सिद्धांतो उपर लखाइने, आज पण अमोने, तेज प्रमाणे बोध आपनार निवडयो छे, वास्ते भगवाननुंज ज्ञान छे, एम अमो खास रीते मानीये छीये, अने तेमनी 'मूर्त्ति' तो तेमनाज जेवी आकृति वाळी होवाथी, तेमना सदशरूप वाळी होवे तेमां कांइ पण नवाइ सरखुं जणातुं नथी, अने सिद्धांतमां पण 'ग्रारिहंत पांडिमा' विगरेना लेखथी पण सरखी कहेली छे, तो पछी सिद्धांतथी विपरितपणानी तमारी करेली कुतर्को, तमारा कल्याणना माटे उपयोग रूप थवानी नथी. । अने स्थापना निक्षेप रूपनी मूर्तिने, द्रव्यपणुं करवानुं कही बतावो छो ते तो, तमो प्रथमथीज गोथां खाता खाना आवेला छो, ते तो अमारा लेखथी विचार करवानी टेव राखना। एटले, स्पष्टपणे मालम पडशे।।।

वर्ळी पण एज सूचनामां लखे छे के-भगवाननो ज्ञान गुण, मूर्तिनो जह गुण, ते पण एक सारिखी कहेनारे विचारवा जेवुं छे. । आतो धर्ममां आगळ वधवानी तीत्र इच्छाने लीधे उन्मार्गे चडी जवा जेवुं थयुं, वैराग्य के, ज्ञान थवानुं तो, क्षयोपशम उपर आधार राखे छे. ॥

॥ आ लेखमां पण विचार करवानो ए छे के, सिद्धांतोमां लखायेला संकेतित अक्षरो छे ते पण,जड स्वरूपनाज छे,अने ते अक्षरो, भगवानना ज्ञान गुणने याद आपनारा छे, एम आपणे मानीय पण छीए, अगर जो तमारा जुटा विचार प्रमाणे विचार करवा बेसीये

तो, ते जडरूप अक्षरोधी, भगवानना ज्ञान गुणनी पण याद ने थवी जोइये, अने भगवाननुं ज्ञान छे एम पण कहेवुं न जोइये, परंतु जेनी विपरीत मित थयेळी होय तेज, जडरूप अक्षरोमां पण, भगवानना ज्ञान गुणनी याद नथी थती एम माने, परंतु अमो तो ते जडरूप अक्षरोमां पण, एमज मानीये छीये के, खरेखरु ए तो भगवानतुंज ज्ञान छे, परंतु जडरूप अक्षरो छे, एम कहेवाने मागता नथी, । अने जेवी रीते जडरूप अक्षरोने, भगवाननं ज्ञान करीने मानीय छीये, तेवीज रीते वीतरागना स्वरूपने याद आपनारी, तेमनी मृत्तिने वीतराग स्वरूपथीज मानीये छीये. । वास्ते धर्मनी तीत्र इच्छोने लीघे, उन्मार्गे चढी गया नथी, परंतु खासपणे जो वीतराग देवनो मार्ग छे. तेज मार्ग पर आरूढ थयेला छीये. । वास्ते तमारेज विचार करवानो छे, । केमके तमोज केवल, दया, दया, नो जुठो पोकार करी, अने वीतराग देवनी मृत्तिनी, अवज्ञा करी, वळी. जैन मार्गना तत्वोना, विपरीत भासथी, महा उन्मार्गेज चढी गयेला छो। तेनुं तमोने किंचित भान थाय,एवाज उद्देशथी अमोए,आ लेख लखवानो प्रयत्न कर्यो छे, परंतु द्वेष करी लेख लखवानो प्रयत्न कर्यो नथी माटे हजी पण विचार करो। वळी तमोए लख्युं जे, वैराग्य के ज्ञान थवातुं ते तो, क्षयोपशम उपर आधार राखे छे,।ते तो बधाए लोक कबूलज करशे, परंतु जे शुभ निमित्तो छे तेज, जीवोने क्षयोपशमनी माप्ति थवामां सहायभूत छे, अने अशुभ निमित्तो छे तेज, उन्मार्गे चढाव-नार होय छे, एवो सिद्धांतोनो ए राजमार्ग छे,। अने जैन सिद्धांत, तेमज जिन मूर्त्ति, साधुनु स्वरूप, सामायिक, पोषध विगेरे आत्मानी क्षयोपशम थवाने शुभ निमित्तो छे. । छतां पण जेनी विपरीत बुद्धि थाय ते तो तेना दुर्भाग्यतुंज, एक चिन्ह छे, परंतु निमित्तनो दोष न गणाय. । अने जे इलवाकर्मी ? जीवो छे, तेने तो शुभ निमित्तो

सीघ्रपणेज बोध आपनार थाय, तेमां तो कांइ नवाइ जेवुं छे एम न गणाय, । परंतु सामान्य मात्रनां निमित्तो पण बोधदायक थइ पढे छे. । जेमके निमराजाने, एक काष्ट्र मात्रनी चुडी, अने समुद्र पाल राजाने, चोर मात्र बोधदायक थइ पडचां, परंतु ते कथंचित्-पणानो रस्तो छे, धोरी मार्ग गणातो नथी, । वास्ते ग्रुभ निमित्तो-नो जे अनादर करवो, तेज महा अघोर कर्मनो, बंध करी लेवानो छे, परंतु जिनमूर्त्ति, दोषने माप्त करवावाली नथी, ते तो भव्य जीवोने, बोध माप्त करवाने ग्रुभ निमित्त रूपज छे ।।

।। वली एज त्रिजी सूचनामां लखे छे के,-महावीरस्वामीना मुख्य शिष्य, गौतमस्वामी जेवा, तेमणे भाव तीर्थकरनी भक्ति करी तोपण, प्रभुनी हयाती सुधी तो, तेमने केवलज्ञान न थयुं, पण प्रभुनो वियोग, डंका वखतमां केवलज्ञान आपनारो थइ पडचो.॥

॥ आ लेखथी पण विचार ए थाय छे के, अमारा ढूंढक लोको, ग्रुं ! शिघ्रपणाथी केवलज्ञान प्राप्त करवाने वास्ते, वीतराग-देवथी द्वेष बांधी, दूर थया हशे, ? अथवा दूर थवाने वास्ते द्वेष करी रह्या हशे ! ते कांइ समजायुं नहीं । अथवा ग्रुं ! गौतमस्वा-मीनी हदने प्राप्त थइ, आ लेख लख्यो हशे ? अरे धूर्त्त आवा हद उपरांतना जूटा लेखो लखवाथी कल्याणनी प्राप्ति न थाय ! ते तो न्याय मार्गना लेखोथीज थाय ।।

।। वळी एज त्रिजी सूचनामां लखे छे के,—साक्षात् वीतराग-देव बीराजता त्यारे, तेमने वांदवा, कोइए संघ कहाडचा न हता, श्री विपाकसूत्र तथा भगवतीसूत्रमां कहां छे के, सुबाहु कुमारे तथा उदाइ राजाए, एम भावना भावी के भगवंत जो अहिं पधारे तो तेमने वांदी हुं कृतार्थ थाउं, एटलो तीत्र भक्ति-भाव छतां, अने खुद भगवाननां दर्शन थवानां हतां छतां, तेमज पोते रुक्ष्मीवान होवा छतां, संघ कहाडीने वांदवा न गया हता, तो पछी "पथ्थरने" भगवान मानी रुइ, तेने वांदवा माटे संघ कहाडीने जवुं, एमां शुं भगवाननी आज्ञा होय? ॥

आ लेख पण विचार करवा योग्य छे, केमके वीतराग देवने वांदवा, संघ काढीने, कोइ पण गयुं नहतुं, तेमज सुबाहु अने उदाइराजा, भक्तिमान् , लक्ष्मीवान् , होवा छतां भावनाज भावी, पण संघ काढीने गया नहता, । तथी ए सिद्ध थयुं के, मुनिने के, भगवानने, संघ काढीने वांदवा जवं ते, तमारा लेख प्रमाणे केवल सिद्धांतथी विरुद्धज छे, एम तथारु मानवुं छे.। तो पछी तमो, सूत्रना लेखथी विरुद्ध थइ, तमारा मुख वंधाने, वांदवा, संघ का-ढीने जे मार्गे पड़ो छो, ते तो दुर्गतिनाज मार्गे पढता हशो ? एम तमाराज लेखथी तमारे कबूल करवुं पडशे, अगर तमो, जगजोहर-पणे संघ काढीने जवा छतां, ना कबूल जशो तो ते जवाने मार्ग नथी,। केमके, मोरबी कोन्फरन्सनी, प्रथम बेठकमां, रीसेपशन कमि-टीना प्रेसीडंट, गोकळदास राजपाले, भरसभामां कहेलं छे के-स-दगृहस्थो आपणा सउना जाणवामां छे के, आपणा धर्ममां, घणाज प्राचीनकाळथी, मुख्यत्वे करीने, साधु मुनिराजने, वंदना, करवा सारु, संघ काढवानो रीवाज चाल्यो आवे छे.। एम मुंबाइ समा-चारथी वांचवामां आव्युं हतुं.। तमारा अरस परसना लेखथी ए विचार थाय छे के, तमो सूत्रथी विरुद्धपणेज, संघ काढीने, वांदवा, जता हशो ? के तमारो छेख छंबो चवडो जुठो थयो होय ? बेमांथी एकज बातनी सिद्धि थशे. । अने अमो जे मृत्तियोनां दर्शन करवा, संघ काढीने जइए छीये ते तो, जैन सिद्धांतनी आज्ञा प्रमाणेज क-रीये छीए. । केमके, जेवी रीते संकेतित जडरूप अक्षरोने, भगवाननं बान मानी, तेनी भक्ति करीये छीये, तेवीज रीते तेमनी मुर्तिने, ते- मनुंज स्वरूप मानीने, अमो तेमनी पण भक्ति करी, अमारां दुःक-मीने दूर करीये छीये. । अने जे " पथ्यर " कहीने अवज्ञा करे छे ते तो, जिन मार्गनी श्रद्धाथी विपरीत थवाथी, ते धर्म रहितोनां, हृदयज पथ्यररूप थयेलां छे, एम अभी मानीये छीए, केमके जो किं-चिन् मात्र पण जैन सिद्धांतोनी श्रद्धा होती तो, स्वछंदपणाथी आवा अनुचित लेखोज केम लखता ?।।

वळी पण आज विषय उपर लखे छे के, अरेरे ? भस्म ग्र-हना भ्रमित आचार्योए, मात्र पेटना कारणे, दुधमांथी पौरा वीणवा जेवुं काम करी, स्थापनानिक्षेपनो अवलो अर्थ लइ, मूर्तिपूजानां अने ते अंगे थतां बीजां अगणि पापोमां, भोली दुनीयाने केवी इ-बाबी दीधी छे.

आ लेखमां तो तमो, महा मृहपणानुं आचरण करी, गणधर महाराजाओनेज, दुषित करो छो, अने आपनी माति राइना दाणा जेटली पण न होवा छतां, मेरु पर्वत तुल मानीने बेटेला होय एम जणावो छो, अने लाखो जैनना धुरंधर आचार्योने, तुछ समजी, आपणे आप सर्वज्ञपणाना पदने, आरूढ थया छो १ पण ते तमारा अनुयायीओमां जे महा मृह हशे, तेज तमारी श्लाघा करशे १ बाकी विचक्षण हशे ते तो, गंदू पात्र जाणी, तमाराथी दूरज रहेशे १ । केमके, अगर तमो, सर्व आचार्योनो करेलो अर्थ, कबूल न राखतां, गणधर महाराजाओनो, तेमज दृंदनी पार्वतीनो करेलो अर्थ के, हाथ जोडे हुये, ध्यान लगाया हुवा, साधुका रूप, मूर्तिनो अर्थ, ते तो कबुल राखवो हतो, तेथी आपोआप आचार्योनो करेलो मूर्ति रूपनो अर्थ, सत्य रूप थइ पडतो, पण तमो तो केवल उद्धत बनी, आपणे आप अथाग फाजलपणे जइ, सर्वज्ञपणानुंज डोल घालीने बेटा छो, तेथी अमारे कहेवानो इलाजज खुटेलो छे । आ पसंगे

एक भतृहरिनो काव्य पण याद आवे छे, यथा,

यदा किंचित् ज्ञोऽहं गजइव मदांधः समभवं, तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यऽभवदविलप्तं मम मनः । यदा किंचित् किंचि द्बु धजनसकाशा दव गतं, तदा मृखोंऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः ॥ १॥

अर्थ:-आ काव्यमां भतृहारे, आपणो अनुभव जणावे छे के,-हुं ज्यारे थोडु भणेलो हतो त्यारे, मारा मनमां सर्वज्ञपणु धारण करी, मदोन्मत्त हाथीना जेवो बनी फरतो हतो, अने ज्यारे पंडित पुरुषोना समागमथी किंचित् किंचित् (अर्थात् थोडुं थोडुं) समज तो गयो, त्यारे हुं समज्यों के खरेखरों मूर्खज छुं, अने मारा मन-मां जे मद व्याप्यो हतो ते, ज्वर निकली गया पछी जेम शरीरनी धुंध निकली जाय, तेम ते मद पण निकली गयो, अने पछी कांइ-क विचारने प्राप्त थयो. ॥ तेम अमारा प्रकाशक भाइ पण हालमां भतृहरिनी प्रथम अवस्थाने धारण करी, सर्व महा पुरुषोने निंदी, आपणे अप सर्वज्ञपणानुं डोल धारण करीने, सर्व आचार्योथी निरपेक्ष थया छे ! परंतु सर्व आचार्यो भ्रामित थयेला छे, एम न गणाय ? अने स्थापना निक्षेपनो, अवलो अर्थ करेलो छे एम पण न गणाय ? अने दुनीयाने डुबावी दीधी छे, एम पण गणाय नहीं ?॥ मात्र तमारीज मति भ्रमित थइ जवाथी, सर्व महा पुरुषोथी निरपेक्ष थइ, " स्थापना निचेप " नो पण अर्थ उलटो करोछो?॥ अने जैनोना "प्रमागा" विषये पण उलढंज बक्चाछो ॥तेम "नयो" ना विषयमां पण उलटुं समज्याछो ?।।अने पचीश बोलना विषयमां पण जूटे जूटी गोठवण करी आ दुनियाने डुवाववा तैयार थया छो !।। अने तेज प्रमाणे 'सम्यत्त्वना' विषयमां, पण मिथ्यात्व चाल ज पकडी छे, ।। ते अमारा प्रथमना लेखथी तमोने समज पडीज हशे?॥

वळी पण एज सूचनामां आगळ वंधीने लंखे छे के, न्भरमग्रह-ना संख्याबंध, भूखथी आकूलव्याकूल थयेला आचार्यो, शास्त्रनुं शस्त्र बनावी, तेवडे दुनीयानो शिकार करवामां फतेह पामे एमां शुं ? आश्चर्य परंतु जेओने अंतर्चश्च छे तेमने, विचार करवा दो, अने पापखाइमां धकेली देनार सामे, मानसिक टक्कर लेवा दो.॥

आ लेखमां पण अत्यंत फाजलपणे जइ वकवादज कर्यों छे, पण अमो एज कहीये छीये के, जो तमारा ढूंढकोने, अंतर्चश्च होय तो अमो पण समजाववा, गुरु कृपाथी समर्थ थइ शकीये, एम अमारा अं-तःकरणमां घेरणा थया करे छे, परंतु वांघोज मोटो तेनो थइ पडेलो छे, एटले अमारो इलाज ज खुटेलो छे. । अने भूखथी आकूल व्या-कूल थयेला आचार्यों तो, गुरु परंपराथी आवेलु जे चउदां पूर्वतुं ज्ञान के, जे करोडो अने अबजो पुस्तक उपर पण लखी न श-काय, तेमांथी मात्र लाखो ग्रंथो उपरज लखाय, तेटलुज राखी शक्या छे, अने अमारी वारसमां मुकी गया छे, पण वधारे राखवा समर्थ थइ शक्याज नथी, ते अमो अमाराज दुर्भाग्यनुं चिन्ह समजीये छीये, के जे एवा महापुरुषो, अचानक अघोर दुष्टकालना पंजामां आवी, अमारी वारसमां, वीतराग देवतुं निर्मरुज्ञान, वधारे राखवाने समर्थेज न थया ? वास्ते धिकार पडो, तेवा दुष्टकालना मुख उपर, के जे अमारुं सर्वस्व हरण करी गयो, अने अवजो ए-स्तकोना वारसानो अमारो दावो छोडावी, केवल लाखो पुस्तको-नोज दावो सोंपतो गयो. । वास्ते तेवा दुष्ट काळने तो, अमो वारं-वार धिकारज आपी, जे कांइ भगवाननुं ज्ञान परंपराथी आवेऌं, अमारा पूर्वजो अमारा वारसामां मुकी गया छे, तेनीज सारसंभा-ळ करी, अमारा आत्मानुं कल्याणज करवाने इच्छीये छीये. ॥

त्यारबाद घणो वखत वीत्या पछी हाल थोडा वखत उपर थयेला.एक लुंका नामना अर्द्ध दुग्ध गृहस्थे, आपणी पेट भराइ करवा माटे, केवल बत्रीश (३२) सूत्रनो पोकार पाडी, आ मृढ पंथ उभो करी, अजान वर्गनी आंख्योए. सजडपणे पाटा बांधी, जे अंध कवामां उतार्या छे, तेमांथी जे पुण्यात्माना, पाटा दूर थाय छे तेओ, आ जैन मार्गने शुद्धपणे जोइ, पाछा रस्ता उपर आरूढ थाय छे, अने जेओना पाटा खुछा थया विना अंतर्चक्ष खुछां थतां नथी, तेओ बिचारा गुरु ज्ञान प्राप्त थया वगर, इधर तीधर हाथ मारी, मनमां आवे तेवो अर्थनो अनर्थ करी, फांफां मार्यो करे छे, अने छेवट. मां अनेक ठेकाणेथी पाछा पडी, आपणा मनमां अनेक मकारना खेदने प्राप्त थाय छे, परंतु हट धर्मने छोडी सकता नथी, तेमनी दयामय अज्ञान दशा जोइ, अमारु अंतःकरण पण अत्यंत दया-मय थड जाय छे, परंतु ते अंध कवामांथी. तेमने बाहार काहाडवा समर्थ थड सकता नथी, तेथी ते पंथ चलावनार पापीनोज टोष ग-णीये छीये, परंतु—ते पंथमां पडेला अज्ञानी जीवोनो, के आचार्योनो, दोष थयेलो होय, एम अमो मानता नथी, तेम शुद्ध मार्ग दर्शाववा रूप, अमारा लेखथी, जो तेमना हठने लीधे, तेमनुं मन दुभातुं हशे तोषण अमो दिषत थइ सकवाना नथी, एम अमारु मानवं छे. पछी तो जानी महाराज जे शीकारे ते खरुं.

इति द्वितीय स्थापना निचेप विषये तत्त्वाऽतत्त्व विचार संपूर्ण ॥ श्रय, तृतीय द्रव्य निचेप विषये तत्त्वाऽतत्त्व विचारः॥

॥ वाडीलाल, रुखे छे के द्रव्यनिक्षेपना ५ भेदः

? जाणग शरीर ' द्रव्य अरिहंत-मोक्ष सिधाव्या तेमणुं श-रीर पडयुं होय ते. ।

२ भविय शरीर 'द्रव्य अरिहंत, प्रभुए दीक्षा लीधी नहोय एटले के घरवासमां होय त्यारे.।

३ लोकिक ' द्रव्य अरिहंत, शत्रुओने जीते एटले चक्री, वासु-देव, राजा विगरे.

४ कुपावचनिक ' द्रव्य अरिहंत, हरि, हर, ब्रह्मा, आदि दे-वने कहे ते.।

५ लोकोत्तर ' द्रव्य अरिहंत, जैनधर्ममां होय पण केवल ज्ञान पाम्यो न होय छतां पोताने अरिहंत कहेवडावे ते गोसालाना इष्टांते.।।

। हवे एना उपर, विचार करवानो ए छे के, अमारा ढूंढक भाइयो, आ विषयथीज गभराइने, बधा चारे निक्षेपनो अर्थ, आग्छ पाछलनो विचार कर्या विना, सिद्धांतने पण, एक सहज रूपनो लेख समजी, आपणा मन गोठतो करीले छे,। परंतु तेम मन गोठतो अर्थ करी सकाय तेम नथी ? केमके आ अनुयोगं द्वार सूत्र छे ते, एक जैन सिद्धांतना व्याकरण रूप, महा गंभीर विषय वाहं छे,। वास्ते सद्गुरु पासेथी भण्या वगर, अने तेनो तात्पर्य समज्या वगर, मनकल्पित अर्थ करवाथी, अनंत भव अमणना आंटामां सपडइ जवा जेवं थाय छे.। तेम हुं पण थोडा सा लेख

मात्रथी, यथा योग्य पणे समजावी सकीस, एम लागतुं नथी, वास्ते केवल परस्परनो विरोध वतावी, विचार करवातुं, वाचक वर्गनेज सोंपी दइश्रा ।।

| आ त्रिजा द्रव्यनिचेपना विषयमां, आवश्यक सूत्रने,-१ आगम, २ नो आगम, एम बे, भेदथी वर्णन करे-छु छे. तेमां 'आगमधी, उपयोग विनानो जे आवश्यक सूत्रनो भणवावालो साधु, तेने 'द्रव्य आवश्यकना स्वरूपथी मानेलो छे, जुवो पृष्ट. ५८ मां सूत्र पाठ ॥

अने २ नो त्र्यागमधी,- १ जाणग शरीर, २ भविय शरीर, अने आ बेथी त्रिजो ३ व्यतिरिक्त, (अर्थात् आ बे भेदथी पण भित्र पकारे) तेना पाछा त्रण भेद १ लोकिक, २ कुपावचनिक, अने ३ लोकोत्तारक,ना स्वरूपथी आवश्यक सूत्रनो "द्वठयनिचेप" करेलो छे. ॥ तेनो परमार्थ समज्या वगर, अमारा ढुंढक भाइए,। १ जाणग श्वरीर-द्रव्य, । २ भविय श्वरीर द्रव्य, । आ वे भेद मुख्य-पणाना. ॥ अने ३ लोकिक, ? ४ कुपावचनिक, अने ५ लोकोत्त-रिक. आ त्रण जे व्यतिरिक्तपणे आवश्यक सूत्रना विषयमां वर्णन करेला छे ते, वधानो खीचडो भेगो करी 'द्रव्य अरिहंतना' पांच भेद, करी बताव्या छे, परंतु जेवी रीते, द्रव्य आवस्यक रूप क्रिया वस्तमां, व्यतिरिक्तथी त्रण भेद करेला छे, तेवी रीते 'द्रव्य अरिहंतनी साथे ' लागु पाडी शकाय तेम नथी, अने लागु पडता पण नथी. । मात्र अहीं 'द्रव्य अरिहंतनी साथे तो ' 'जागाग सरीर ' अने 'भविय सरीर ' ए वे भेदज, लक्ष-णकारना कहेवा प्रमाणे लागु पाडी सकाशे.। आ विषयमां 'पुरावो' ए छे के-भाव त्रावश्यकमां पर्गा, १ आगम, २ नो आगम, थी व भेद करेला छे, ॥ तेमां १ त्रागमधी, आवश्य सूत्रनो जाण, उपयोगवालो, साधु कहेला छे. ॥ अने २ नो त्रागमधी, भाव आवश्यक, १ लोकिक, २ कुपावचिनक, अने ३ लोकोत्तरिक, एम त्रण प्रकारथी वर्णन करी बतावेलो छे. ॥ तो आ जे, नो आगमथी भाव त्रावरयक कियाना त्रण भेद वर्णन करेला छे, तेने भाव अरिहंत साथे **शुं ? लागु पाडी शकी शुं! को**इ दाहाडो पण लागपाडीशकीसं नहीं, तेम पडी सकशे पण नहीं, अने वाडीलाल पण, भाव ऋरिहंतमां, तेमज, भावसृत्रमां, लागु पाडी बता-वी शक्या नथी वास्ते जे सूत्रकारे, विशेषे विषयोने पकडी, विशेष विशेष वर्णन करी बताव्युं छे, ते ते छोडीने, केवल लक्षणकारना, सामान्य विषयने पकडीनेज, बीजी वस्तुओना निक्षेपो कर-वाना छे. मात्र जे ज्ञान, दर्शन, अने चारित्र स्वरूपना आध्यात्मिक गुण क्रिया वाचकना पदार्थों छे, ते पदार्थीना ' चार निक्षेपोनुं ' वर्णन करतां "द्रव्य निचेपमां " तेमज " भाव निचेपमां " 'आगम ' नो आगमना ' भेदो करीने घटतो विचार करवानो छे परंतु ते 'द्रुट्य ' अने 'भावमां ' आगम छे ते तो सर्वेज्ञ भाषित सिद्धांत रूप ज समजवानुं छे.। अने ते 'द्रव्य' अने 'भाव' निक्षेपमां "नो त्रागमना" जाणग, भविञ, थी व्यतिरिक्त (अटले कथन करवा मांडेळी वस्तुथी भिन्न) छे तेना 'लोकिक, कुपावचनिक, अने लोकोत्तरिक, नाम प्रमाणे गुण वाला, त्रण भेदो करीने बधे टेकाणे अपणा मननी जुठी कल्पनाओ करीने दोड करवातुं नथी, अने तेम दोड करीने जवाथी एक तो सिद्धांतनी महा आशातना, अने पंडितोनी पंक्तिमां, उपहास्यनेज पाप्त थइशुं. ॥ प्रथम तमारोज् लेख जूबो के, द्रव्य ग्ररिहंतमां खीचडो करीने, पांच भेद कर्या, अने भाव म्नरिहंत ना निक्षेपमां, जूठी कल्पना करतां अचकाइने, एकज भेद करी बेटा छो, केमके ते भाव ब्रारिहंतना निक्षेपमां जूटी कल्पना चाली सकी नहीं, नहि तां, द्रव्य अरिहंतनी परे 'भाव अरिहं-तमा पर्गा ' १ लोकिक, २ कुपा वचनिक, अने ३ लोकोत्तरिक, ' भाव ऋरिहंत ' पण कही बताबबा जोइता हता. ॥ वास्ते त-मारो लेख सिद्धांतथी विरुद्धज थयेलो छे. ॥ वली विशेष समजवा तुं ए छे के,-आवश्यक सूत्रना द्रुठय निचेपमां, १ आगम, २ नो आगम, थी वे भेद करेला छे.। तेमज भाव त्रावइयकना नि-चेतियमां पण, ए वे भेदज करेला छे.। तेमां जे, १ आगम रूप, प्रथमनो भेद छे, ते तो केवल आवश्यक सूत्र रूपज छे, तेनुं पठन करवावालो, साधुज होय छे, अने ते साधु, भणी पण रहेलो छे, छेत्रट उपदेश ग्रुद्धांपण करी रहेलो छे, अने प्रश्न उत्तर विगरे सर्व करी रह्यो छे, परंतु ते साधुनो उपयोग, ते आवश्वक सूत्रमां बरोबर न होवाथी, तेने आगमथी द्रव्य त्रावश्यक कह्यो छे, एटले के केवल आगम रूप छे एम जणाव्युं. ॥ अने तेज आवश्यक सूत्रेन भणतां भणतां ज्यारे ते साधु जपयोगना घरमां आवी गयो, एटले तेने आगमथी भाव त्र्यावइयक रूप मानी, भाव आवश्यकना भेदमां शास्त्रकारे कह्यो. कारणेक आवश्यक सूत्रना अर्थमां उप-योग विनाना सांधुने, द्रव्य आवश्यकपणे कारण रूपथी कह्यो, ॥ अने तेज साधु, ज्यारे अर्थमां उपयोगवालो थयो, एटले ते ' द्रव्य आवस्यकनेज, भाव आवस्यकर्मा गण्यो। तेथी द्रव्य आ-वश्यक छे ते, भाव आबस्यकतुं कारण होवाथी उपयोगवालोज छे,। परंतु तमोए जेवी रीते ' त्रमा निंचेपने ' उपयोग वि-नाना ठराच्या ते प्रमाणे उपयोग विनाना नथी। । अगर जो द्रव्य आवश्यकने निरर्थक कहेशो तो, ढ्ंढक साधु श्रावकोनुं, पिंडकमण विगरे, सर्व प्रकारनी जाहेरमां देखाती क्रियाओं निरथकज ठरशे.। केमके जुवो प्रथमतो पिंडकमणामांज घणा एक
ढूंढक साधु श्रावको, अर्थ विनानो कोरो पाठज पढे छे.।
तेमां पण जो ग्रुद्ध उच्चारण पूर्वक होय तोज ते द्रव्य त्रावद्यक
रूप गणाय, नहीं तो एके घडामां न गणायः। माटे अमो सूचवीय
छे के तमारा कटला साधु श्रावको अर्थना जाण छे, अने ग्रुद्ध
उच्चारण पूर्वक भणे छे, तेनो विचार करी जुवो, अने पछी द्रव्यनिच्चेपने निर्थकपणे ठरावो!।। अमो तो एज कहीय छे के,
तमारा ढूंढकोने, एके वातना परमार्थनी खबर पडती नथी, तेथी
आडा अवला हाथ नाखीने फांफां मारोछो।।।

॥ वली विशेषपणुं ए छे के, आगमना स्वरूपथी आवश्यकना भेदनी व्याख्या करतां गणधर महाराजाओए द्रव्यमां, तेमज भावमां पण, केवल आगमना अक्षरोच्चारण स्वरूपनीज विवक्षा लीधेली छे. । परंतु क्रियानी विवक्षा अंगीकार करी नथी एम लक्षमां राखवानुं छे. । आवी रीते अमीए, आगमरूप प्रथमना भेदथी, द्रव्य ब्रावश्यकना निक्षेपनो, तेमज, भाव ब्रावइयकना निक्षेपनो, किंचिन् मात्र तात्पर्य किंह बताव्यो छे, ते लक्षपूर्वक मूल सूत्र उपर ध्यान देवाथी मालम पडशे. ॥

।। हवे नो आगमथी, आवश्यक सूत्रनो 'द्रह्यिनिच्चेप ' शुं! चीज छे, ।। अने नो आगमथी आवश्यक सूत्रनो, 'भाव-निच्चेप ' शुं! चीज छे, तेनो किंचित् तात्पर्य लखी बतावीये छीए. ।। तेमां प्रथम " नो " शब्दनो अर्थ रुखीये छीये. श्रागम सठव निसेहे, नो सदो श्रहव देसपिडसेहे | सक्वे जहरा सरी रं, भवस्सय श्रागमा भावा ॥ १ ॥

ऋर्षः—" नो " शब्द छे ते, आगमना (अर्थात् सिद्धांत पणाना) सर्व मकारथी निषेधमां वपराय छे. । अथवा आगमना देश निषेधमां, (अर्थात् एकाद भागना निषेधमां) ' नो ' शब्द नो अर्थ, करवानो शास्त्रकारे कहेलो छे. ॥

तेमां उदाहरण ए छे के, * जागाग सरिर, अने + भवित्र सरीर, आ वे भेदो साध्वादि भव्य पुरुषो संबंधी छे, तेना
वर्णनमां 'नो ' शब्दनो अर्थ, आगम पणानो सर्वथा प्रकारथी अभाव जणावे छे।। हवे द्रव्य निच्चेपमां ? इसरीर, अने। २ भविअ
सरीर आ वेथी, व्यतिरिक्तना जे त्रण भेद करेला छे, ते 'त्रण
भेदो, साध्वादि भव्य पुरुषोना संबंधथी, भित्र, स्वरूपनाज करेला
छे जेमके ? लोकिक, २ कुमावचित्रक, अने ३ लोकोत्तरिक,।
आ त्रण भेदो, आवश्यक कियाना जाण शुद्ध साधुना, शरीरनी
साथनो संबंध छोडीनेज वर्णन करेला छे, तेनी साथे किंचित मात्र
पणे संबंध राखेलो नथी, तेथी तेने व्यतिरिक्त पणे कहेला छे.।
हवे व्यतिरिक्तना त्रण भेदमां, लोकोत्तरिक नामनो जे त्रिजो भेद छे
तेमां पद आवश्यक कियानो संबंध जोडेलो होवाथी स्रांति थाय
छे के, इहां पण ते शुद्ध साध्वादिकनो संबंध होवो जोइये, परंतु जे
ने गुरु गमता मळेली नथी तेज स्रांतिमां पडे छे, अने शुद्ध साध्वा

^{*} अंत अवस्थाः । + पूर्व अवस्थाः ।

दिकनो संबंध जोडी, विपरीत पणे अर्थ करवा मंडी पडे छे, तेथी बधु अवले अवलु जुवे छे, । जेमके प्रथम दूंढनी पार्वतीए जोयुं, अने पछीथी वाडीलाले पण लख्यु, ॥

परंतु इहां लोकोत्तरिक नामनो त्रिजो भेद छे ते शुद्ध सा-धुओथी व्यातिरिक्त पणे, पतित थयेला साधुओ संबंधी छे, तेथी ते-मना आवश्यक रूप आगमना उचारने सुत्र मात्रथी ग्रहण करी, तेमनी पट् आवश्यकनी क्रियाने तुछ मात्र गणी नो शब्दथी सर्वथा मकारे निषेधी कहाडी छे. तेथी शुद्ध साध्वादि महापुरुषोनो संबंध किंचित् मात्र पण रही सकतो नथी। ॥

। तेमज भाव त्रावश्यक्षमां, नो आगमस्य बीजा भेदना, १ लोकिक, २ कुमावचिनक, अने ३ लोकोत्तरिक, एम त्रण भेद करेला छे, तेमां, लोकोत्तरिक नामना त्रिजा भेदमां, उपयोग-पूर्वक, शुद्ध साधु, श्रावकना षडावश्यकमां उठ वेस करवा रूप क्रियाने, जडरूप मानी, एक देशपणाथी निषेधी, बाकीनी सर्व क्रियाने उत्तमपण ग्रहण करी लीधेली छे.। तेथी इहां 'भावना' त्रिजा भेदमां, शुद्ध साधु आदिने ग्रहण करेला छे.। परंतु 'द्रुट्यमा तो ' व्यतिरिक्तपणाथी त्रिजा भेदमां पण, पतित साधुओनेज ग्रहण करेला छे.।।

।। हवे उपरना लेखनो तात्पर्य ए छे के,—आगमथी, अने नो आगमथी, जे सूत्रकारे, भेदो करेला छे ते तो, छ आवश्यकना सिद्धांतरूप वस्तु, नी साथेज लागु पाडवाना छे, पण बीजी सर्व चीजोनी साथे, बधा भेदो लागु पाडवाना नथी, मात्र जे जे योग्य होय, ते ते भेद, लच्चामातारना करेला 'लच्चा 'उपर ध्यान आपीने, लागु पाडवाना छे. ॥ जेमके, मीक्ष सिधावेला वी- धंकरोना, शरीरने, अने तीर्थंकर थवावाला, शरीरने, प्रवेकाल, किंवा अपरकालनी अवस्थामां, तीर्थंकर पदनो, आरोप करवो, तेज 'द्रव्य तीर्थंकर " मानवाना छे, परंतु, ? लोकिक, २ कु भावचिनक, अने ३ लोकोत्तरिक, ना स्वरूपथी, जे द्रव्य आवश्यकने पकडी, नो आगमना स्वरूपवाला त्रण भेद वर्णवेला छे ते सर्व प्रकारना शुद्धिवाला ह्य आवश्यक रूप मुख्य वस्तुथी, व्यतिरिक्त पणे द्रव्य आवश्यकना करेला छे, ते लागु पाडी शकाय नहीं.। केमके, जे एक वस्तुने, मुरूयता रूपे करीने, भिक्षेपे करेला छे, तेथी व्यतिरिक्त पणे कही बतावेला छे।।

आ लेखथी विशेष समजवातुं ए पण छे के-शासकार जे वस्तुने प्रथम उचारण करी निक्षेप करवा मांडया होय ते निक्षेप तेज वस्तुना छे एम खातरी पण करी आपे छे, परंतु, तमोए जेवी रीते अरि-हंत वस्तुनो उचारण करी, बीजी वस्तुमां, नाम निच्चेपादि करवा मंडी पड्या, तेवी रीते करवाना नथी, एम, आ द्रव्य आवश्यकना व्यातिरिक्त भेदो स्पष्ट पणे जणावे छे. । वास्ते 'आ चार निच्चेपोना विषयमां, तमारो, तमज दूंढनी पार्वतीनो, जे लेख थयेलो छे, ते केवल समज्या वगरनोज छे. । ते वारिक दृष्टिथी जो शो तो, स्पष्ट पणे जोइ शकशो ।।

॥ इति तृतीय द्रव्य निचेप विषये तत्त्वाऽतत्त्व बि चारः॥ हवे चोषा भावनिचेप विषये तत्त्वाऽतत्त्वनो विचार करीये छीये. || वाडीलाल, लखे छे के, ४ भावनिक्षेप-के-वल ज्ञानादिक सहित जे वर्त्ते छे ते 'भाव ग्रारिहंत ' खरेखरा अरिहंत तो तेज, अने वंदनीक पण तेज, बाकी तो नामनो, माण-स के, पथ्थर, कोइनुं कल्याण करी शके नहि.

आ चोथा ' भावनिचेपथी ' विचार करवानो ए छे केकेवल ज्ञानादिक सहित वर्ते ते खरे खरा अरिहंत छे. एम तो अमो
पण मानीये छीये। अने अरिहंतना चार निक्षेपमांथी एक चोथो
भावनिक्षेप, अरिहंतमांज, दाखल थयेलो छे, एम पण मानीये
छीये, । अने अरिहंतना बीजा त्रगा निच्चेप छे तेने पण चोथा
भाव अरिहंतना निक्षेपनी पेरें अरिहंतनी साथेज संबंध करीये,
तोज अरिहंतना चार निक्षेप, यथा योग्यपणे थया गणीये छीये। । परंतु निक्षेप तो करवा मांडय। अरिहंतना, अने आ चोथा भावनिः
क्षेपनी परे, बीजा त्रण निक्षेपो अरिहंतनो संबंध, न धरावता होय
तो ते, विपरीत लेख थयेलो छे, एम पण समजीये छीये.

आ अमारा ढूंढक भाइए प्रथम चार निक्षेप अरिहंत शब्द उपर छागु पाडवाना कही, प्रथमनो नाम निच्चेप, तीर्थकरथी बी-जी वस्तु साथे, जोडवानो बताव्यो, ॥ तेमज ' द्रव्यनिच्चेप ' चक्रवर्ती आदि बीजी वस्तुमां जोडीने बताव्यो. ॥ अने सत्यार्थ चं-द्रोदयमां, प्रथमज ढूंढनी " पार्वती " छखे छे के, -श्री अनु-योगद्वार सूत्रमें, आदिहीमें, वस्तुके स्वरूपके समजनेके छिए, वस्तुक, सामान्य प्रकारसे, चार निच्चेपे निक्षेपने (करने) क- हे हैं. । यथा नाम निक्षेप १ । स्थापना निक्षेप २ । द्रव्यनिक्षेप ३। भावनिक्षेप ४ ॥

ढूंढनीना आ लेखथी, अने वाडीलालना लेखथी, विचार कर-वानो ए छे के,-वाडीलाल छे ते चारनिक्षेपने ' अरिहंत शब्द उपर ' लागु पाडवाना कहे छे, । अने दृंढनी पार्वती छे ते, वस्तुना ' चारनिक्षेप ' करवाना कहे छे ते, आ एक मतवाला दूंदक, वाडिलाल, अने दूंदनी 'पार्वती ' होवा छतां. अने अनुयोगद्वार सूत्र छे ते पण एक छे, तोपण एक तो बतावे छे आकाश, अने एक बतावे छे तेने पाताळ, हवे ए ढूंढकोने, आ चार निच्चेपोना विषयमा केवा प्रकारनुं ज्ञान थयेछुं समजवुं ? आ ब-न्ने एक मतनां होवा छतां विरोध ए थयो के, 'वस्तु तो जुदी जुदी 'बतावी वाडीलाले, अने ऋरिहंत रूपशृष्मां चार नि-क्षेप, उतारवानुं कही बताव्युं, । अने दूंढनी, एकज वस्तु-मां उतारवाना 'चारनिच्चेप 'कहे छे, त्यारे मेळ केवी रीते मेळववो ? तेनो मेळ, वाचक वर्गज, मेळवीने आपशे, तो पण अ-मारे संतोषज छे. केमके अमाराथी एवा जुटा मेळो, मळी शकता नथी, अने उत्तर पण क्यां सुधी रुख्या करीये.

।। अहं सूत्रकारनो मत ए छे के, एक वस्तुमांज 'चार निचेप' लागु पाडवा, जेमके आवश्यक क्षियारूप, 'एक वस्तु-मां' लागु पाडीने बताच्याः । तेमां, सूत्रकारे, आवश्यक सूत्रनो, १ नामनिचेप—जीव, अजीवादिक, वस्तुमां, करवो कह्यां, तेथी आवश्यकथी बीजी वस्तुमां नामनिक्षेप थवानी आंति थाय छे. ।। अने २ स्थापना निच्तेप, दश प्रकारनी वस्तुमां अक्षरना लेख-रूपथी, तेमज, साधुनी मृत्तिंरूपथी, करवानी बतावी । अने आवश्यक सूत्रनो, ३ द्राटयनिचेष १ आगम, २ नो आगम, ना भेद्थी करी बताव्यो, । तेमां १ ऋागमधी उपयोग विनानो साधु कह्यो, अने २ नो त्र्यागमधी, जाणग सरीर, । भविय सरीर, । अने तेथी व्यतिरिक्तमां, लोकिक, कुपावचनिक, अने लोकोत्तरिक, । एम त्रण भेद कह्या, तेथी एण आवश्यकरूप वस्त्यी बीजी वस्त्नी अर्गात थाय छे. ।। हवे आवश्यक सूत्रनी ४ चोथो 'भावनिचेप' तेना पण वे भेद कर्या छे, १ आगम, २ नो आगमरूपः । १ ऋा-गमयी ' उपयोगवालो साध कहेलो छे. । २ नो आगमथी, १ लोकिक, २ कुपावचिनक, अने ३ लोकोत्तरिक, एम त्रण भेद 'भाव त्र्यावइयकना ' होवाथी, द्वंढनी पार्वती, अने ढ्ंढक वाडीलाल शाह, अनहद भ्रांतिमां पडी, समज्या वगर, आचार्यी-ना, तेमज गणधर महाराजाओना लेखने, सामान्य मात्र समजी, पूर्वाऽपरनो विचार कर्या विना, मनमां गोटतो, अर्थ करी लड़, दोडचा दोड करी मुकी छे.। परंतु अमारा ढूंढक भाइयोना उपकार माटे, आवश्यक सूत्रना चार निक्षेपनो परस्परना विचारथी किंचित् मात्र तात्पर्य कही बताबीय छीये के, जेथी तेओनी भ्रांति किंचिन दूर थायः ॥

|| त्राचार निचेपना, विषयमां तात्पर्य ए छे के,-आ दुनियामां, वस्तु त्रण मकारनी छे, हेय, ज्ञेय, अने उपादेय, | आ त्रण मकारनी वस्तुमांथी, आपणे उपादेय वस्तुना 'चार निक्षेप' करवानो विचार कर्यों, । जेमके, त्रावद्यक सूत्र, अमारा जैनी- योने सर्वथा प्रकारथी ' उपादेय ' हो, त्यारे ते वस्तु शी छे ! के एकतो आवश्यक सूत्ररूप, अने कीजी ते संबंधी वे वस्तती प्रतिक्रमणरूप अवश्य क्रिया, ते अवश्य क्रियानो आधार, मुख्यत्वे साधु छे। तेथी उपादेयरूप आवश्यक सूत्र, अथवा साधु छे, । केमके सूत्र छे ते, क्रियानु ज्ञान प्राप्त कराववावाछु होवाथी उपादेय-रूप छे. अने साधुमां, क्रिया कारकना संबंधे आवश्यक अमारे उपादेय छे.। एज उपादेय आवश्यक सूत्ररूप वस्तुना चार निक्षेप करवा, सूत्रकारे सूत्र गूंथन करेनु छे।।

॥ हवे जुवोके प्रथम 'नाम निन्तेप' ज्यारे ते आवश्यक सूत्र लखावी तैयार कराव्युं, अने तेनुं नाम आदश्यक सूत्रं एम स्थापित कर्युं, ते अजीव रूप वस्तुमां आवश्यक सूत्रना नःमना निचाप थयो, अथवा एक आवश्यक सूत्र मात्र पठित साधने, आवश्यकी, कहेवो ते, जीव अजीव रूप वस्तुमां आवश्यक सूत्रना नामनो निश्लेष गणाय छे ॥ १ ॥ इवं जुवो वीजो ' स्थापना निच्चेप ' के का-ष्टादि उपर पण अक्षरोनी स्थापना करी आवश्यक सूत्र लखी स-काय छे, अने पोथीयो उपर तो हेख चार पणंज छे.। तेमज का-उस्सगमां ध्यानारूढ थयेला साधुनी मूर्त्ति पण करी सकाय छे, तेथी ते आवस्यकनो भाव जणाववावाळी होवाथी, तेने स्थापना निक्षेप सूत्रकारे कहेलो छे. २ ॥ इवे जुवो आवस्यक सूत्रनो ' द्रव्य नि-चोप ' के, ! आगम, २ नो आगम, ना भेदथी बतावेलो छे. तेमां. १ आगमथी, द्रव्य आवस्यक ए छे के, जे साधु, आवस्यक सूत्रने, परिपूर्ण पणे भणी रह्यो छे, वाचन करे छे, अथवा धर्मीपदेश विगरे करी रह्यो छे, पण तेनो उपयोग तेमां नथी तेथी तेने, आग-मथी द्रव्य आवस्यक कहाो, केमके भणेलो छे अथवा भणे छे, तेनो

उपयोग तेमां नथी, तोपण " उपयोग " प्राप्त करी आपवामां, कारण भूत, ते आवश्यक सूत्रनो पाटज छे, अने कारण छे ते " द्रव्य रूप " मानेलुं छे तथी ते उपयोग विनाना आवश्यक सूत्रना पाठी शुद्ध साधुने पण ? आगमना भेदरूपथी द्रव्य आवस्यक रूपे कह्यो. आहे विशेष ध्यानमां रारूव तुं ए छे के, सूत्रकार " क्रिया विषयने " छोडी दइ, आगम रूपनो, विषय होवाथी, कवल आग-मना, वीषयने ग्रहण करेलो छे. हव जुवा, २ नो आगमथी ' द्रव्य आवश्यक, १ ज्ञ सरीर, २ भविय सरीर, । तेथी त्रिजो °व्यतिरिक्त, तेना पण चणभेद, जमकं १ छोकिक, २ कु−प्रावच-निक, अने ३ लोकोत्तीरक, एम त्रणभेद व्यतिरिक्तना करेला छे.। आ विषयमां समजवानुं ए छे के, 'नो' शब्दनो अर्थ, ए छे के, एक ज-गापर तो, आगमपणानो, सर्वथा प्रकारथी निषेध बतावे छे । अने बीजी जगोपर, आवश्यक सुत्रना अःगमपणाना एकाद भागने ग्रहण पण करीले छे.। 'नो' शब्दनो अर्थ प्रथम लखीने पण आवेला छीये।। एमां विशेष समजवातुं ए छे के, जे जाणग सरीर, अने भविय सरीर छे, तमां नो शब्दथी आवश्यक सूत्ररूप आगमपणानो सर्वथा प्रकारथी निषेध मानी, मात्र भूतकाळ, अने भविष्यकाळना कारणरूप पुरु-षना शरीरमां, वर्त्तमानकाळमां आवश्यक सूत्ररुप कार्यनो आगमप-णाथी खामरूपे आरोप करेलो छे, जेमके मंत्रीपदथी श्रष्ट थयेलाने पण मंत्री कहे, अथवा राजकुमरने राजा कहे, तेवी रीते जाणगस-रीर, अने भविय सरीरमां पण, आवश्यक सूत्ररूप कार्यनो आरोप करी, आवश्यक कहेलो छे. । ते आवश्यक सूत्ररूप उपादेय वस्तु-नोज आरोप करेलो छे, पण बीजी वस्तुनो आरोप करेलो नथी. ।

१ जे शुद्ध स्वरूपवाली मुख्य वस्तु हती ते नहीं पण नामना गुण प्रमाण बीजाज स्वरूपवाली.

वास्ते ए वे वस्तुमां खासपणे भाव आवश्यकनोज संबंध जोडीने बतावेलो छे. ॥ हवे, लोकिक, क्रपावचनिक, अने लोकोत्तरिक, आ त्रण भेद छे. ते. खास उपादेय, आदश्यकना संबंधथी व्यतिरिक्तपणे (अर्थात् भिन्नपणे) करी बतावे छे, तेमां ज प्रथम लोकिक भेद छे,तेतो लोकोनी दंतधावना{दिक जे जे अवश्य कियाओ छे तेनेज जणावे छे. । तेथी तेमां, आगमरूप आवश्यकनो संबंध सर्वथा प्रकारथी नथी. अने जे कुप्रावचानिक छे तेमां, चरकादिक साधुओ ने, अवश्यपणे यक्षादिकना पूजन करवा वाळा बताच्या छे, तेथी पट अध्ययनरूप आवश्यकथी भिन्नज छे,। हवे त्रिजो लोकोत्तरिक द्रव्य आवश्यक छे, तेथी श्रांति थाय छे के, ते भाव आवश्यकनो संबंध होवो जोइये पण, आ लोकोत्तरिक द्रव्य आवश्यकना करवा वाळा स्वछंदचारी, गुरुथी, अने सिद्धांतथी परां मुख थयेछा, साधु नाम धारी, तमारा हुढकादिक जेवा लोक रंजन वास्ते, वे वखत आवश्यकना करवावाळा कहेला छे, तेथी नो शब्दे मात्र सूत्ररूपनेज ग्रहण करेटुं छे, तेथी ते सूत्र लोकोत्तररूप होवाथी, भाव आवश्यकथा व्यतिरिक्तपणे, लोकोत्तरना शब्द रूपथी ग्रहण करेलुं छे पण, भाव आवश्यक सूत्रपणाथी व्यत्तिरिक्तपणे ग्रहण करेल छे. । अने जाणग सरीर, भविय सरीररूप, प्रथमना बे भेदमां 'भाव आवश्यकरूप ' उपादेय वस्तुना आरोपपणाथी ग्रहण करेलुं छे, तेथी ते व्यतिरिक्तना त्रिजा भेदथी आंति करवाने जग्या नथी.। जेम कोइ अन्यमतावलंबी श्रद्धाविनानो पोपटनी परे पाठ भणीने बतावे, तेवी रीते ते स्वछंद चारी साधुओना, आवश्यकने द्रव्यथी व्यतिरिक्तपणे गजीने छोकोत्तरना भेदमां टाखल करेलुं छे, परंतु उपादेयहप जाणग सरीर, अने भिवय सरीरना आवश्यक्रने तुछरूपे मानेला नथी. ३ । ह्रेंब जुबो ४ था भाव आवस्यकना

भेदोनो तात्पर्यः आगम, नो आगमना, भेदथी विचार ए छे के, जे आगमधी भाव आवश्यक छे ते ए छे के, जे उपयोग विना भणवा-वालो साधु हतो तेने द्रव्य आवश्यक कह्यो हतो, अने तेज साधु जे वखते उपयोगना घरमां आव्यो ते वखते तेने, आगमथी (अर्थात् सिद्धांतरूपथी) भावपणे मानी लीघो. ॥ अने ना आगमथी लो-किक, कपावचनिक, अने लोकोत्तरिक, एम त्रण भेटथी भाव आवश्यक कहेलो छे. । तेमां लोकिक भाव आवश्यक ए छे के, सवारना वखते, अने संध्या वखते, भारत, अने रामायणादिकना श्रवण करवावाला कहेला छे. । अने कुपावचनिक, भाव आवश्यकमां चरकादिक साधुओना होम, इवन, मंत्र जापादिक, वर्णवेला छे. । अने लोको-त्तरिक, नो आगमथी भाव आवश्यक शुद्ध उच्चारणपूर्वक उपयोग सहित शुद्ध श्रद्धावाला श्रावकनी. अने शुद्ध साधुओनी वे वखतती प्रतिक्रमणरूप षट् आवश्यकनी किया वतावी छे. अही षट् आवश्य-करूप सूत्र छे तेने, आगमरूपथी ग्रहण करेलुं छे, अने तेमां उठ बेस विगरे कियाओ छे तेने जडरूप मानी नो शब्दथी देशपणे निषेध रूपे बताबी छे.। अने जे आगमरूपथी भाव आवश्यक कह्यो हतो तेमां क्रियानी विवक्षा छोडी दइ मात्र आवश्यक सुत्रना अर्थक्ष भावनेज ग्रहण करेलो हतो, वास्ते आगमथी भाव आवश्यक छे ते उत्तम अने यथा वत् रूपथी छे, अने लोको-त्तरिक, नो आगमधी भाव आवश्यक छे ते पण परम उपादेय तरी-केज छे, जेवी रीते ए भाव आवश्यक उपादेय तरीके छे, तेवीज रीते भाव आवश्यकना खाम पणाना संबंधवालो, नाम निक्षेप, स्था-पना निक्षेप, अने द्रव्य निक्षेप, पण परम उपादेय छे, परंतु निरर्थक रूपे नथी. । अने जे व्यतिरिक्त पणे होकिक, कु पावचनिक, अने लोत्तारिक, नो आगमधी द्रव्य आवश्यक वर्णन करेलो छे, ते उपादेय रूपे नथी, केमके भाव आवश्यकना स्वरूपथी तेने भिन्नपणे ज वर्णवेलो छे, तेथी आंतिमां पडी समज्या वगर आचार्यांने दृषित करवा मंडी पडवुं ए विचारशक्ति पामेलानुं कार्य न गणाय. । अने भाव आवश्यक्रमां, लोकिक, अने कुमावचिनक छे, ते तो शब्दना अर्थथीज भिन्नह्रपे छे तो पछी तेमां समजाववानी पण कांइ जहर रहेती नथीं. वास्ते वीतरागदेवनी स्थापनाह्रप मूर्ति तेमनाज संबंधी होवाथीं, अने तेमनीज यादिगरी आपवावाली होवाथीं, भक्तजनोने तो सदा पूज्यह्रपज छे. । अने जे अज्ञान दशाना वश-थीं, चित्तमां मूढता धारण करीं, वीतराग संबंधी मूर्तिने, पथ्थर कहीं अवज्ञा करे छे, तेओनां तो चित्तज पथ्थरह्रप वनी गयेलां छे, एम अमो मानीये छीये. ॥

इति चोषा भावनिचेपनो तत्त्वाऽतत्त्व विचार संपूर्ण ॥

॥ हवे जूवो सूत्रना चार निचेपनो तत्त्वाऽतत्त्व विचार.॥

आ सम्यक्त ग्रंथनी रचना करनार वाडीलाल शाहे, जे सूत्रना चार निक्षेप लख्या छे, ते चार निक्षेपमांथी एक पण निक्षेप-नो लेख सामान्य प्रकारथी पण योग्य रीते करेलो नथी, केमके सूत्रना निक्षेप पण आवश्यक सूत्रना जेटला, अने तेज प्रमाणे सूत्र-कारे करीने बतावेला छे, परंतु किंचित् मात्रनो फरक बतावेलो नथी, मात्र फरक जे छे ते द्रव्यस्त्रना व्यतिरिक्तमां "पत्त्य पोत्यय लिहि स्त्रं"एम जे लखेलुं छे ते पण, स्त्रना निक्षेपनी मुख्यतारूपने छोडीने भावना कारणनी विवक्षाथी ग्रहण करेलुं छे. ते सिवाय अनेक प्रकारनां रूं (अर्थात् कपास) आदि बताव्यां छे,

परंत ते खास सूत्रना भेदोधी व्यतिरिक्तना भेदो करेला छे, तेथी भाव सूत्रनी साथे संबंध विनानाज छे. । तेथी भावसूत्रने कोइ प्रकारनो वाध आवे तेम नथी, वास्ते ते सूत्रना चार निक्षेप पण आवश्यक सूत्रनी परे उपादेय वस्तुना होवाथी उपादेयरूपज छे, परंतु उपयोग विनाना निरर्थरूप नथी. । अमो ते सूत्रना चार निक्षेपोना बदले वाडीलाल शाहनी चोपडीनी साथे घटावीने बताबीए छीए, जेथी निरर्थक, अने सार्थकपणानी, किंचित खबर पडे. ॥ सम्यक्क ए पण एक नाम छे, ते नामनो निक्षेप वाडीलाले, आपणी रचेली चोपडीमां करेलो छे, अने उपयोग विनानो मानेलो छे, तेथीज अमारा करेला तत्त्वाऽतत्त्वना विचारथी निरर्थकपणे निवडेलो छे, केमके एमणे (वाडीलाले) अजीवरूप वस्तुमां करेलो छे. १ । हवे बीजो स्थापनानिक्षेप, सूत्रकारे लखेला अक्षरोपणे सार्थक गणेलो छे. छतां वाडीलाल कागळीयांथी करवानो बतावे छे, तेपण एमनी चोपडीनो करतां एमना कहेवा प्रमाणे निर्धिक होय तेमां तो नवाइज नथी। ।। २ ॥ ्हवे त्रिजो द्रव्यनिक्षेप रुखेरां पानां पुस्तकमां वाडीरारे बतावी निर्थ उपयोग विनानो कहेलो छे, अने आ अमारा विचारथी ्रपमनो हेख पण, निरर्थक उपयोग विनानोज ठरे छे, अने एमणे पण त्रण निक्षेप निरर्थकरूपे मानेला छे. ज्यारे एमनी चोपडीना त्रण निक्षेप, निर्धेक ठरी चुक्या, तो पछी एमनी चोपडीनो चोथो भावनिक्षेप सार्थक क्यांथी थवानो छे ? केमके एमणे प्रथम सम्य-्रक एवो नामनो निक्षेपज, खोटो करेलो छे तो पञ्जी, सम्यत्कना ज्ञाननी प्राप्तिज क्यांथी थशे ? अने स्थापना केवल कोरां कागळी-यांनी करवानी कही वतावी छे ते तो सार्थक होयज क्यांथी ?। अने द्रव्यनिक्षेपमां लखेलां पानां पत्रां मानी एमणे आ लेख लख्यो छे अने उपयोग विनानो मान्यो छे. तेथी सम्यन्कना कारणरूपं आ लेखमांथी कोइ दिन पण भावरूप सम्यत्कपणानुं ज्ञान मळी शकवानुंज नथी ? तेथी आ बधुं पुस्तकज उपयोग विनानुं रचायछुं छे.। ज्यारे प्रथम नामनो निक्षेपज खोटो (अर्थात् सम्यत्कना अर्थ विनानो) करेलो छे, तो पछी बीजी सार्थकता एमांथी हुं निकळवानी छे. ॥ अगर वाडीलाल कहेशे के, अमोए नाम निक्षेप नही पण नाम आप्युं छे, तो ते कहेवाने मार्ग नथी, केमके, तमो एज लख्युं छे के, बीजी वस्तुमां नाम आपीए त्यारे नामनिक्षेप कहेवाय, तेथी मुख्य वस्तुथी आ सम्यत्त्क एवं नाम तमारा चोपडी रूप बीजी वस्तुमां आपेछुं छे, तेथी ए नाम निक्षेपज छे, अने नाम निक्षेप तमोए निर्धक मानेलो छे, तेथी बधी चोपडी निर्धकज टरे छे. ॥ पण अमो तो नाम निक्षेप सार्थक मानीये छीये जेमके, हेय वस्तुमां हेय तरीके, ज्ञेय वस्तुमां ज्ञेय तरीके, अने उपादेय वस्तु-मां उपादेय तरीके । तेथी अमो अमारी चोपडीतुं जे कांइ नाम आपीशुं ते नामनिक्षेप मानी सार्थकरूपे गणीशुं. ॥ अने तेथी सर्व जीवोना कल्याण माटे थशे एम पण मानी<u>शं</u>.

॥ इति चार निक्षेप विषये किंचित्तस्वाऽतस्व विचारः ॥

इतिश्री मद्विजयानंद सूरीश्वर लघुशिष्येनाऽमर मुनिना धर्मना दरवाजा संबंधि पंचविंशति दृष्टि नाम्नश्चतुर्थ प्रकरणे तत्त्वाऽतत्त्व विचारःसंकलितः ॥

॥ निचेपोना विषयमां किंचित् बोधना माटे विचार॥

भलेने अमारा ट्ंडक साधुओ, अने तेमना अनुयायी श्रावको, जैनमार्गना गृहतत्वोथी गृथायेलां, सुचना रूप सुत्रोनां सुत्रो भणी, आपणे आप सुत्रोना पारगामीपणा मानीने बेसे, परंतु जे मूल परंपराला विद्वानोनी पासेथी, जैनतत्वोने ग्रहण कर्या सिवाय, तेओना जन्मना जन्म वीति जरो तोपण तेओ, जैनतत्वना मार्गनी दिशा कई बाजु ए छे तेटला पुरतुं पण जोई शक्ताना नथी। तो पछी अमारा ढूंडक भाईयो ढूंडी ढूंडीने वधारे सं मेलवी सकवाना छे। ते आ अमारा बतावेला दिशा अवलोकना मत्रियी प्रमना दरबाजाना, बेचार फकराओनी साथे, मारा उंक विचारो करी बताबु छुं के, जेथी अमारा ढूंडकभाईयें करेलो, चार निक्षेपनो विचार, थोडी सेहलाईथी वाचक वर्ग जोई शको।।

॥ जुनो पृष्ट ५५ मां । वाडीलालनो मथमनो लेख ॥
॥१ जैनो कहे छे के केटलीक चिजो ' ज्ञेय '
एटले जागावा योग्य छे,। केटलीक ' उपादेय ' एटले
अादरवा योग्य छे,। अने केटलीक ' हेय ' एटले तजवा
योग्य छे,। माटे ' निचेप, एक बे नहीं पण चार छे,
एम कबुल राखनार मागासे स्थापना निचेप, ने ' उपादेय, तरिकेज कबुल राखवो जोइए एवं कहेनारा मात्र
पोतानेज ठगे छे ॥

इति प्रथमनो लेखः

| वाचक वर्ग | वाडीलाल शाहना आ लेखथी, आप एमज समज्या हशे। के, तीर्थंकर महाराज ' उपादेय ' तरीके तो छेज, अने तेमना ' त्रण निक्षेप ' पण ' उपादेय ' तरीके मानवामां हरकत नही, मात्र ' स्थापना निक्षेप ' ज उपादेय तरीके कबुल राखतां, अमारा ढ्ढंकभाईना पेटमां, गरबडाट थइ पडेलो छे, तथीं ज एम लख्युं छे के स्थापना निक्षेप ' उपादेय ' तरीके कबुल राखनारा ठगाय छे. ||

।। आगे पृष्ट. ६४ मां नो तेमनो बीजो लेख।।

॥ २ श्री ' अनुयोगद्वार, सूत्रमां कह्युं छे के, पे-हेला त्रण ' निचेप ' ' अवध्धु ' एटले उपयोग विनाना छे, छेल्लो चोयोज, आलोकमां उपयोगी, अने परमार्थमां साधनरूप छे. ॥

इति द्वितीय लेख ॥

।। वाडीलाल शाहना आ लेखथी एम पण सिद्ध थाय छे के, वस्तुना चार निक्षेप थाय छे पण तेना 'त्रण निक्षेप 'स्वरूप वि-नाना होवाथी कांइ पण उपयोगना नथी।।।

।। आगे जूबो पृष्ट. ७८ नो त्रिजो लेख ।।

॥ ३ शब्दनय, समिम्ब्ह नय, अने एवंभूत नय, ए त्रण नयवाला माणस 'नाम 'स्थापना, अने 'द्रव्य' ए त्रण निचेपने 'अवध्यु ' (अवस्तु) माने छे, ३ ॥

इति तृतीय लेख ॥

।। वाडीलाल शाहना आ लेखथा एम पण सिद्ध थाय छे के, जैनोए 'सात नयो 'मानेली छे, तेमांथी जे शब्दादिक त्रण नयोने, वलगी रेहेवावाला मानस छे तेज प्रथमना त्रण 'निक्षेप 'ने अवस्तु रूपे ठरावे छे, बाकी सात नयोने, मान आपनार जैनो छे ते तो, अवस्तु रूपे केहता नथी, पण वस्तु रूपेज कहे छे एम प्रगटपणे सिद्ध थाय छे.।।

।। हवे ए चार निक्षेपना विषयमां, अमारा दूंढक भाइने, अमो पुछीये छीये के, १ हेय, २ ब्रेय, अने ३ उपादेय, एम ज्ञण प्रकारना पदार्थों दुनीयामां छे, तेमां वीतराग देवनी मूर्ति रूप 'स्थापना निक्षेपने किया पदार्थमां गणोछो १ जो 'हेय 'तरीके कहो तो ते कहेवुं, तमारुं तदन भूल भरेलुंज छे, केमके, जंबूद्वीप, ग्रह, नक्षत्र, तारा, विगरे जे सामान्य प्रकारना 'ब्रेय ' पदार्थों छे तेनी पण, आकृति बनावी, जैन सिद्धांतकारो, समजावता गया छे, अने ते रूढि दूंढकोमां पण आज शुधी चालुपणे छे, ते पण 'स्थापना निक्षेपज 'छे.। अने वस्तुरूपथी उपयोगवालो पण छे.। तो तमाए ज्ञण निक्षेपने, अवस्तुरूपे उपयोग विनाना केम कहीने बताव्या १।।

फरीथी पण जूबो के, राजा, प्रजा, विगरेना मेहेलोमां, चित्र-शालाओ, थती हती, एवा लेखो जैन सिद्धांतमां, जगो जगोपर थयेला छे, अने ते क्षेय पदार्थोना, स्थापना निक्षेपने, आनंदने माटे, उपयोगी जाणीनेज, करावता हता. । अने आनंदने माटे, तेमज समजवाने माटे, चित्रशालाओ, अने हिंदुस्थानना नकशा विगरे, क्षेय पदार्थोनी, स्थापना निक्षेपनो मचार, राजाओमां, तेमज प्रजाओमां, थतो आवेलो अने थइ रहेलो, वर्तमानकालमां पण जोइये छीए, तो पछी 'स्थापना निक्षेप,' अवस्तु, अने उपयागे विनानो, आ लोकमां छे एम केम कहीने बताव्यो ! ज्यारे क्षेयरूप पदार्थनो स्थापना निक्षेप, अवस्तुरूप, अने उपयोग विनानो छे, एम नथी कही शकातुं तो पछी, अमारा परमपूज्य, तीर्थकर भगवान के, जेना नाम निक्षेपना उच्चारण मात्रथी, अमारा पापनो मलय मानीये छीए, तेमना स्थापना निक्षेपने, अवस्तु, अने उपयोग विनानो छे, एम केहवावाला, वीतरागदेवना मार्गावलंबी छे, एम केवी रीते कही शकाशे! वास्ते उपादेयरूप तीर्थकर भगवाननो, स्थापना निक्षेप उपादेयरूपज छे, परंतु अवस्तुरूपनो के, उपयोग विनानो नथी, ए तो तमारा दूंढकोने, मृहता थयला छे तथी, बधु विपरीतपणाथी उल्लंडपणे जुओछो।।।

आ निक्षेपोना विषयमां विशेष समजवानुं पण ए छे के, १ 'हेय ' पदार्थना चारो निक्षेप, हेयपणे होय छे, एटले त्यागवा लायक होय छे. । अने २ ' क्षेय ' पदार्थना चारो निक्षेप, क्षेयपणे होय छे, एटले जाणवा लायक होय छे.। अने '३ उपादेय ' पदार्थना चारो निक्षेप, उपादेयरूपज होय छे एटले योग्यता प्रमाणे आदर करवाने योग्यज होय छे.

एमां पण बीजुं विशेषपणुं ए छे के, जेवी रीते १ हेय, २ क्रेय, अने ३ उपादेय, रूपे पदार्थों, दुनियामां त्रण प्रकारना छे, तेवीज रीते, एकज पदार्थने, १ हेय, २ क्रेय, अने ३ उपादेयपणे, मान आपनारा छोको पण, त्रण प्रकारमांज वहेंचाइ जाय छे.

उदाहरगा—नेमके वीतराग दशाने प्राप्त थयेला तीर्थकर महाराजाओ, सर्वथा प्रकारथी उपादेय रूपेज छे, अने तेमनी सेवा भक्ति करवाथी, अने तेमनाज वचनतुं पालन करवाथी, अमारा संसारनो निस्तार थशे, अने आ भव तेमज परभवनां सर्व संकट दूर थन्ने ने थन्नेज, एवी आज्ञा धारण करनार, ते तीर्थकरोना परम भक्त, जैनोज उपादेयरूप समजी तेमना चारो निक्षेपोने उत्तम प्रकारनुं मान आपे छे, तेथी जैनोने तो ते तीर्थकरोना चारो निक्षेप परम उपादेयरूपेज छे ॥

।। हवे जूवो के, जे बीजा अनेक मतमां रहेला, .मध्यम परिणामी लोको छे ते, तीर्थंकर भगवानना चारो निक्षेपने, क्षेयरूपे
समजी, न तो निद्या करे छे, तेमज न तो तेमणी भक्ति विगरेथी,
आपणा कल्याणनी पण आशा गांखे छे, तेथी ते मध्य परिणामीना
जीवोने, परम उपादेयरूप, तीर्थंकरो, होवा छतां पण, तेमणे तीर्थकरोना चारो निक्षेप, क्षेयरूपेज थई पडेला छे.।।

।। हवे जूबो के, तेज तीर्थकरोना देषी, महा मिथ्यात्वी लोको, तेमना चारो निक्षेपने, हेयरूपे समजी, अनेक मकारथी अवज्ञाओं करवा तत्पर थइ जाय छे, तेथी परम उपादेयरूप तीर्थकरो होवा छतां पण, तेमना महा पापना उदयथी, ते देषी लोकोने, हेयरूपे थइ पडेला छे. ॥

॥ परंतु अमा तीर्थकरोना भक्त जैनो छे ते तो, अमारा कल्याणनी आशा राखी, दिन प्रतिदिन ते तीर्थकरोनां, रूपभादिक नामोने, नाम निक्षेपना विषयरूप गणी, अने परम उपादेयरूप समजी, ते नामानो उचारण करवा मात्रथी पण, अमारु कल्याण थशे ने थशेज एमज मानीये छीए १॥

।। अने तेमनी आकृतिरूप, प्रतिमाने पण, परम उपादेयरूप समजी, स्थापना निक्षेपना विषयरूप गणी तेनी भक्ति करीने पण, अमी अमारा कल्याणनीज इच्छा करीये छीए. २ ॥

॥ अने ते शुद्ध स्वभावी जीवोने, तीर्थंकर पदवी पाप्तिना पूर्वकालमां, तीर्थंकर गोत्र बांध्या पछी, द्रव्य निक्षेपना विषयथी, तीर्थंकर स्वरूपनाज ते जीवो छे एम मानी, तेमना सुखर्थी सुखी, अने तेमना दुःखर्थी दुःखी, भक्त देवताओ, तेमज अमो पण थइये छीए.* अने तीर्थंकर पदवी भोगव्या पछी, मुक्त गामी थया छे तो पण, द्रव्य निक्षेपना विषयथी, तीर्थंकर मानी, तेमना शरीर माजनी, भक्तिने पण भक्त देवताओ, तेमज अमो पण, करवानेज चाहीये छीए, ३॥

।। अने तेवा वीतरागी तीर्थकरो, साक्षातपणे, भाव निक्षेपना विषयवाळा, मळे तो, भक्ति करी, अमारा संसारनो निस्तार थयो मानीये तेमां तो कांइ नवाइ जेवुंज नथी. ४ ॥ वास्ते तीर्थकरोना, चारे निक्षेपोने, अमो भक्तजनो तो, परम उपादेयपणेज मानीये छीए.॥

भलेने बीजा तीर्थंकरोनी भक्ति विनाना, मध्यम परिणामी, तेमना चार निक्षेपोने, ब्रेयरूपे, समजे परंतु छेवटमां ते मध्यम प-रिणामी जीवो, तीर्थंकरोना चारे निक्षेपोने, उपादेयपणे अंगीकार करी, आत्मध्यानमें छीन थशे तोज आ अघोर संसारनो अंत करशे.

अने ते तीर्थंकरोना नामादिक चार निक्षेपोना द्वेषी, गाढिम-ध्यात्वना उदयथी, केटला काळ सुधी संसारमां परिश्रमण करशे ते विषये अमो कांइ कही शकता नथी, बाकी जैन सिद्धांत तो अ-नंत संसारीज कहे छे।।

वळी विशेष वात ए छे के, ते परम पूजनिक तीर्थकरोना, चार निक्षेपोने, अमो भक्तजनो मान आपीथे ते तो अमारी फरजज छे, तेथी कांइ पण विशेषरूपे करता नथी. । परंतु ते वीतराग देवनो

^{*} अमारा ढ्ंढको पण भृतकालना तेमज भविष्यकालना चोवीश तीर्थकरोनां नाम स्मरण करे छे ते द्रव्य निक्षेपनाज स्वरूपवालानां छे तो पर्छा त्रण निक्षेप निर्श्यक केम!

जे अरूपी ज्ञान गुण छे, ते तेमना मुखद्वारथी, संकेतीत शब्दोंथी प्रकाशमान थइ, तेना आधारभृत जड सिद्धांतोमां, स्थापित करी. अथवा चेतनरूप आचार्यादिकोमां, केटलेक अंशथी प्रगट थवाथी, ते जड, अने चेतन रूप, बन्ने पदार्थोना पण, नामादिक चार निक्षेपी निक्षेपी, पूज्यपणे गणी, योग्य मान आपवानुं बताववा, श्री अनुयोगसूत्रना आरंभमां अमारी नित्य धर्मित्रियाना विषयने जणा-ववावाळुं, अने तीर्धकर भगवानना मुख कमळथी, साक्षातपणे सरस्वतीना स्वरूपे संकेतित अक्षरोथी प्रगट थयेलुं, जे मूल सूत्र छे. । तेमां 'आवश्यक, शब्दथी नामनो निक्षेप करी, चारो निक्षेपथीज वर्णन करीने, उपादेयरूपे छे एम गणधर महाराजाओं बतावता गया छे. ॥

अने ते गणधर महाराजाओना कथनने अनुसरी, आज सु-धीनो चतुर्विध संघ पण, जैन सिद्धांतोने, तेमज ते सिद्धांतोना आ-धारभूत, साधु पदमां आवी गयेला, आचार्य, उपाध्यायना पण, चारो निक्षेपने, मान आपताज आवेला छे. । तेनुं स्वरूप, श्री अ-नुयोगद्वार सूत्रनो पाठ लखीने करी बतावेला, अमारा विचारने, बारिक दृष्टिथी, फरीने तपासीने जोशो तो तमोने पण स्पष्टपणे जणाइ आवशे.

जे पदार्थ जेने हेय होय, तेनेज तेना चारो निक्षेप हेय होय छे.। परंतु तीर्थकरो, अने साधुओ, जेनोने हेयक्षे नथी.। ते तो अमा-रा परम पूज्यो, उपादेयज छे.। तेथी तेमना चारो निक्षेप, योग्यता प्रमाणे, पूजनिकज छे.।।

जेमके स्त्रीयोना त्यागी, स्थापना निश्लेपरूप स्त्रीयोनी चित्रशा-ळाथी दूर रहे छे, परंतु बीजा माताना प्रेमी तो, माताना चारो निश्लेपने, योग्यता प्रमाणे मानज आपता जोइये छीए. । तो पछी अरिहंतोने परमपूज्य मानवा वाळा जैनोथी, आपणी काळमु-खी जीव्हाने चलावी, वीतरागना त्रण निक्षेप, उपयोग विनाना छे, एम केम कही शकाय ! म्लेच्छो कहे ते वात जूदी छे. । जे तीर्थक-रोना, एक नाम निक्षेप मात्रनी पण, रात अने दिवस जपमाळा गणी, अमारा कल्याणनी इच्छा करी रह्या छे, अने मुख्यी उ-पयोग विनानो कहीये छीये, आते अमारी कया प्रकारनी मुर्खता, ते कांइ समजातुं नथी.

^{।।} इवे अमो वाडीलालनाज, लेखना विचारथी, उपादेयना निक्षेपोतुं, उपादेयपणु लखी बतावीये छोए.।।

[॥] वाडीलाल-पृष्ट ६३ मां, सूत्रना, चार निचेप लखता, बीजा, अने त्रिजा, निचेपमां, लखे छे के, ॥

[॥] २ स्थापना निचेप-सूत्र तरीके कागल मुकी तेने सूत्रमाने.॥

[॥] ३ द्रव्य निचेप—लखेलां पानां. ॥

^{।।} तेमज पृष्ट, ८२ मां-ज्ञाननो, स्थापना निक्षेप, अने द्रव्य निक्षेप, जूबोके, ॥

^{||} २ स्थापना निचेपे ज्ञान-ज्ञाननी स्थापनाकरवी. ||

[॥] ३ द्रव्य निचेपे ज्ञान–लखेलां पुस्तक पानां.॥

^{।।} आ अमारा ढूंढक भाइना लेखथी, विचार करवाना ए छे के, " कागलनी, स्थापना '' करवी ते पानां लखेलां के कोरां !

॥ अने " ज्ञाननी स्थापना " करवी ते, जडना आधारे, के, चेतनना आधारे॥

केमके जीवनोजे ज्ञान गुण छे, ते तो अमारा दृंढक भाइए । पृष्ट. ६० मां, नीचे टीप आपतां, आत्माना गुण जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र, ते तो अदृश्य रूपथी बताव्या छे, तो पछी आ सूत्रना, अने ज्ञानना, स्थापना निक्षेपमां, शुं। लखीने बताव्युं. । वास्ते तमारे पण, सूत्र, अने ज्ञानना, निक्षेपो करतां तेना आधारभूत कोइ जड, अथवा चेतन, पदार्थनोज स्थापना निक्षेप, करवानुं कबुल करवुं पडशे. ॥

तथी हवे विचार करो के, बीतरागनुं निर्मल ज्ञान, अह्स्य रूप छे, तो पण ते संकेतित अक्षरोथी, स्थापना रूपे थयेला पुस्तकने, अवस्तु रूप, अने उपयोग विनानुं, निर्थक छे, एम मूढनो मूढ जैम धर्मी हशे ते पण, केहवानुं साहस नहीं करी सके.। तो पछी तमी हृंढको, कया हिसावथी, त्रण निक्षेपने, अवस्तु, अने उपयोग विनाना कहो छो ! हां ! कोरा कागलो बगाडी, लोकोने अष्ट कर-वानोज धंधो लड़ बेटा छोके,!

॥ अमो तो इतिहासाथी पण जोइये छीये के, वीतरागना भक्तो तो, तमना अदृश्य रूप ज्ञानने पण, संकेतित अक्षरोथी, दृश्लमा पत्रां उपर, अथवा कागलो उपर, अथवा ताम्रादिक धातु उपर, अथवा शिलाओ उपर, स्थापना निक्षेप रूपे स्थापना करी, अनेक प्रकारना संकटोमांथी बचावी, आपणा प्राणथी पण वधारेज रक्षा करता आन्या छे.

अने आजे पण ते स्थापनारूपे थयेला अक्षरोना रक्षण माटे, कोन्फरन्सेमां, धर्मात्मा पुरुषो त्रुमात्रूम करी रह्या छे.। ते सूत्रना, स्थापना निक्षेपने अवस्तु, अने उपयोग विनानो छे, एम कहेवावालो कइ पंक्तिमां गणवो ! तेनो विचार वाचकवर्गज करी लेके ! एटले अमारे वस छे. ॥

इति सूत्र, अने ज्ञानना, स्थापना निचेपनो विचार.

॥ अने "सूत्रना" तेमज "ज्ञानना" द्रव्यनिचेपमां, दूंढकभाइये लखेलां पुस्तक पानां जणाव्यां छे, तेपण एक
अंशथी उपादेयज छे.। केमके अनुयोगद्वारमां, साधुना आश्वयपणार्थी
मुख्यतारूपे, जेवी रीते आवश्यक सूत्रना, द्रव्यनिक्षेपमां, आगम,
नो आगमथी, भेदो वर्णन करेला छे.। तेज पमाणे सूत्रनो, तेमज
ज्ञाननो, द्रव्यनिक्षेप वर्णन करवानो छे.। परंतु नो आगमथी १
जाणग शरीर, २ भविय शरीर, अने त्रिजो तेथी व्यतिरिक्त, एम
त्रण भेद करी बताव्या छे, तेथी इहां सूत्रना, द्रव्यनिक्षेपमां, अक्षरोना समुदायरूप, एकछं सूत्र पण, ज्ञाननुं कारण थइ पडे छे.। तेथी
एक अंशे, साधुथी व्यतिरिक्तपणे, कारण मानी, द्रव्यनिक्षेपमां,
पुस्तक पानां बतावेलां छे.। परंतु मुख्यतारूपे विशेषपणे, ज्ञाननुं
कारण तो, साधुए मुखे करेला उपयोग विनाना सूत्रना पाठनेज,
द्रव्यनिक्षेपमां वर्णन करेलो छे.। ते अनुयोगद्वारना सूत्रपाठथी
स्पष्ट्रपणे समजी सकाशे.।।

|| इति सूत्र अने ज्ञानना द्रव्यनिचेपनो विचारः ||

।। अरे देवानां िषय ! सिद्धांतनी आशातना करतां, महा पाप लागे एटलुं तो जैनोनां बालको पण जाणे छे.। तो पर्छा ते प्रथमना त्रण निक्षेपोने, अवस्तु, अने उपयोग विनाना छे, एम लखी, आ स्थापनानिक्षेप, अने द्रव्यनिक्षेपना, विषयभूत जैन सिद्धांतोने, अ- वस्तु, अने उपयोग विनानां छे, एम आपणी कालमुखी जीव्हाथी केम कही शकाय!॥

।। आ चार निक्षेपोना विषयमां, तात्पर्य ए छे के, जे जे पदार्थों उपादेयना स्वरूपवाला छे, ते ते पदार्थोना, चारोनिक्षेपो, आपणी आपणी योग्यता प्रमाणे, मुख्यतारूपे कारण थइ, आ अघोर संसारना महा भयानक मार्गमां, भन्य प्रक्षोने, मोक्ष जता शुधी, सहायकरूप, वळावा तरीकेज समजवाना छे.।।

॥ जेमके वीतरागना नामादिक निक्षेपो, तेमज सिद्धांतना, आचार्यादिक साधुपद शुधीना, पोषधना, सामायिकना, इत्यादिक जे जे सिद्धांतकारोए भन्यपुरुषोना हितना माटे, आद्र करवाने बतावेली वस्तुओं छे, ते सर्वेना चार चार निक्षेपो, योग्यता प्रमाणे, वीतरागना भक्तोने तो, अवश्य आद्रणीय स्वरूपनाज छे. । परंतु अवस्तु, अने उपयोग विनाना कही, अवहा करीने फेंकी देवाना नथी। ॥

^{| &}quot; उदाहरगा " ए छे के, " सामायिक " आ एक नाम, अनेक गुणरूप वस्तुनुं छे. । जेमके १ सम्यक्त सामायिक, २ श्रुत सामायिक, ३ सर्व विरित सामायिक, ४ देश विरित सामायिक, अा चार प्रकारना सामायिकनो विचार, नयोना प्रपंच-थी, तेनां पात्र प्रमाणे, अनेक प्रकारे, सिद्धांतकारोए करेलो छे. । तेना निक्षेपो, सूत्र, अने साधुनाज, आधारथी मुख्यतारूपे करीने बतावेला छे. ते प्रमाणे देशविरित सामायिकरूप क्रियाना आधारभूत, श्रावको पण छे. । तेथी देशविरित सामायिकना चार निक्षेपो, श्रावकना आधारथी पण करीने बतावीये छीए. ।।

॥ हवे जुवो के-न्याय नीतिना चलनथी, अंतः करणनी शुद्धीने माप्त थयेला शुद्ध श्रावकने, जे वे घडीना काल सुधी, समता भावमां लीन थवुं, तेवा भाव गुणरूप वस्तुनुं नाम, सिद्धांतकारोए, "सामायिक" (अर्थात् देशविरतिरूप) आपेलुं छे.। तेथी ते समता-रूप भाव गुण वस्तुमां, अथवा छ आवश्यकना एक विभागरूप "अध्ययनमां" आ "सामायिक" नामना निक्षेप करी, ते वस्तुने जणावेली छे.। अने सामायिक नामना उच्चारण मात्रथी पण, जैन सिद्धांतना संकेतने जाणवावाळा पुरुषो तो. ते समता-भाव गुणरूप वस्तुनुंज नाम समजे छे, अथवा सामायिक नामना अध्ययननुं नाम समजे छे, तेथी ते "समता भाव गुण वस्तुनो" अथवा "सामायिक अध्ययननो," सामायिक ए नामनिक्षेप थयो समजवो.॥

जो इहां श्रावकनो आश्रय लीधा वगर, अध्ययनरूप वस्तुने सामायिक कहे तो, अचेतनरूप वस्तुनो नाम निक्षेप थयो समजवोः। अने जो पथरणा, घडी, चरवलो, मुहपित ना साधन विना, केवल समता भावमां लीन थयेला, श्रावकनी विवक्षाने ग्रहण करी, सामायिकरूपथी कहे तो ते, चेतनरूप वस्तुमां " सामायिक " नामनो निक्षेप थयो समजवोः। अने पथरणादिक सर्व सामायिक ना कारणनी विवक्षाने साथमां ग्रहण करी, श्रावकने सामायिक वालो कहेतो, चेतन अचेतनरूप वस्तुमां, " सामायिक " नामनो निक्षेप कहेवायः॥

आ बधुं विशेष आविशेषपणे कहेवामां मात्र नयोनीज विश् चित्रता समजवानी छे. ॥

जेवी रीते छ अध्ययनना समुदायरूप, आवश्यक क्रियारूप

बस्तुना, तेमज सूत्ररूप समुख्य वस्तुना, नामादिक चार निक्षेप क-रवाना कहा छे, तेवीज रीते तेना एकेक विभागरूप, अध्ययन, उद्देशादिकना पण, चार चार निक्षेप, भिन्नभिन्नपणे पण, करीने ब-तावेला छे. । ते प्रमाणे, अमोए पण, आ अध्ययन रूप एक अं-श्रना, तेमज श्रावकना आश्रयपणाधी, नामनिक्षेप करीने बता-वेलो छे. १ ॥

इति देशविरतिरूप सामायिकना नामनिचेपनुं स्वरूप॥

हवे जुवो एज सामायिकरूप वस्तुनो, बीजो स्था-पना निचेप ॥

काष्टादिक दश प्रकारथी, स्थापना करवानी कहीने, "एगो-वा त्रागोगोवा " एम सृत्रमां कहेन्छं छे.। तथी त आवश्यकना स्थापना निक्षेपमां, सृत्ररूपनी, तेमज तेना आश्रयभूत, एक, अनेक, साधुनी पण, स्थापना करवानु कही वतावेन्छं छे.। अने दृंढनी पार्वतीए पण सत्यार्थमा पृष्ट. ४ मां-समज्या वगर, हाथ जोडे हुये, ध्यान लगाया हुवा, ना स्वरूपथी लखीनेज बतावे छे.। तथी अहीं सा-मायिकना, स्थापना निक्षेपमां पण, सामायिकना अध्ययनकृपनो, अने तेना आश्रयभूत, एक अनेक श्रावकनो पण. स्थापना निक्षेप, करी शकाय छे.। तथी सामायिक रूप अध्ययनना, अक्षरो, स्था-पना निक्षेपना विषयभुत समजवा.। अथवा सामायिकना स्वरूपमां बेटला एक अनेक श्रावकनी आकृति, (मूर्त्ति) स्वरूपने, सामा-यिकनो, स्थापना निक्षेप समजवो. २।। इति देशविरतिरूप सामायिकना २ स्थापनानिचे-पनुं स्वरूप, ॥

| हवे देशविरति सामायिकना, त्रिजा द्रव्यनिचे-पनुं, स्वरूप लखीने बतावीये छीये ।।

॥ जेवी रीते ३ द्रव्य आवश्यकने, १ आगम, २ नो आगमना भेदथी, सूत्रना आधारभूत साधुना आश्रयने छइ, वर्णन करीने बतावेछो छे, तेज प्रमाणे अहिं, सामायिक मूत्रना पाठनो उच्चारण करवावाछा, श्रावकने पण, द्रव्य सामायिकना छेखामां गण-बानो छे. ॥

ा 'जेमके 'कोइ न्याय नीतिना चलनथी, अंतःकरणनी शुद्धीबालो श्रावक, सामायिक सूत्रनो पाठ, शुद्धपणे अस्वालित, उच्चारण
करी रह्यों छे, परंतु तेनो उपयोग, ते सूत्र पाठना अर्थमां नहीं होवाथी, तेना पाठना उच्चारण मात्रने, १ आगमथी द्रव्य सामायिक
क्षे समजवोः । कारणके जद्यपि ते सामायिकसूत्रना पाठने भणवावालो श्रावक, तेना अर्थने परिपूर्ण पणे जाणे छे, परंतु ते अवसर
उपर, ते सूत्रना अर्थमां, तेनो उपयोग नहीं होवाथी, अवस्तु रूपे
गणी काढेलो छेः । त्यां एवो पाठ छे के " अर्गुवयोगो दठव मितिक हु " एनो अर्थ ए छे के-सूत्र पाठना अर्थमां, जे वस्तते
भणवावालानो उपयोग ना होय, ते वस्तते ते सूत्र द्रव्य स्वरूपनुं छे।।

॥ आ जे मत छे ते, 'शब्दादिक' त्रण नयोनो मत छे. । तेथी त्यां सात नयोनी मान्यतानुं, अवतरण करीने वताव्युं छे, ते प्रमाणे आ द्रव्य सामायिकना करवावाला साथे पण, घटावी लेखुं.। । जिसके १ नैगम नयनी मान्यता ए छ के-एक श्रावक, सामायिकना उपयोग विनानो होय तो, एकज द्रव्य सामायिक वाळो कहे. । वे श्रावक उपयोग विनाना होय तो, वे द्रव्य सामायिक विकाला कहे. । अने त्रण उपयोग विनाना होय तो, त्रण कहे. । एम जेटला श्रावको, उपयोग विनाना होय, ते वधाओंने, जुदा जुदा, द्रव्य सामायिकनाज लेखामां गणी कहाडे. । ए 'नैगम नयनी' मान्यतानो विचार कहींने बताव्यो. ।।

॥ हवे बीजा २ व्यवहार नयनी मान्यता पण, श्री अनुयोग द्वारमां, एज प्रमाणे बतावी छे । ताथाच पाटः " एव मेव वव-हार स्तिवि " अर्थः 'व्यवहार नयनी " मान्यता पण, नैगम नयना जेवीज समजवी २ ॥

।। ३ संग्रह नयना मते, -एक श्रावक, उपयोग विनानो होय तो, एकज द्रव्य सामायिक वालो कहे. । अने घणा श्रावको, उप-योग विनाना होय तो, घणा द्रव्य सामायिकवाला कहे. ! ए 'संग्रह नयनो ' मत बताच्यो । ३ ।

॥ अने ४ ऋतु सूत्रना मते-एकज उपयोग विनाना श्रावकने, एकज सामायिक छे, एम कहे पण घणा सामायिक छे एम न कहे,। ए प्रमाणे 'ऋतु सूत्र नयनी' मान्यता छे॥ ४॥

।। आ सामायिकना द्रव्य निक्षेपाना विषयमां, १ आगमना भेदथी, प्रथमनी जे द्रव्यार्थिक चार नयो छे, तेनी जेवी २ मान्यता हती, ते प्रमाणे लखीने बतावी छे ।।

।। हवे जे उपरनी " शब्दादिक " त्रण पर्यायार्थिक नयो छे, तेनो एवो मत छे के-पेछा वधा अर्थग्रन्य, उपयोग विनाना श्रावको, मामायिक गुत्रतो पाठ, शुद्ध उद्यारण पूर्वक भणी रह्या छे, तो पण, उपयोग विनाना सामायिक सूत्रनो पाट भणवावालाना, " सामायिकने" अवस्तु वरीनेज माने छे. । त्यां एवो पाट छे के.

॥ ति एहं शद्द नयागां, जागा ए, त्रागुव उत्ते " " अवध्यु " ॥

।। आ सूत्रनो अर्थ ए छे के-सुत्रना अर्थनो जाण छे, पण, भणती वखते, उपयोग ना होय तो, ते शब्दादिक त्रण नयो, अवस्तु करीने माने छे. । कारणके " शब्दादिक त्रण नयो '' द्रव्य स्वरूपने, मान, आपतीज नथीः ॥

शा विषयने समज्या वगर, सत्यार्थना पृष्ट. ६ मां—हृंहनीए, एम लख्युं जे, इस द्रव्य आवश्यक उपर, सात नय उतारी है, जि-समें तीन सत्य नय कही है. । एम लखीने छेवट पृष्टना अंतमां लख्युं जे, गुणविना वस्तुको अवस्तु प्रगट करती है ॥

। वाडीलाल पण-आज विषयना पाठने समज्या वगर, त्रण निक्षेप उपयोग विनाना छे, एम पृष्टः ६४ मां सर्वथा प्रकारथी लखीने बताव्याः ॥ अने पृष्ट ७८ मां, शब्दादिक त्रण नयोनी मान्यताथी, अवस्तुरूपे लखीने बताव्याः॥ आ विषयनो विशेष खुलासो कोई बीजा प्रसंगे जोइशुं ॥ अहीं सुधी १ आगम थी "द्रव्य सामायिकनुं" स्वरूप जाणवुं ॥

[॥] हवं २ नो आगमथी, द्रव्य सामायिकतुं स्वरूप लखीने बतावीये छीये.॥

^{।।} नो आगमथी द्रव्य सामाधिक त्रण प्रकारतुं छे. । १ जाणग सरीर, २ भविय सरीर, ३ जाणग भविय वातिरित्तं । एम त्रण भेद छे. ॥ " हुवे एनो तात्पर्य " ॥

॥ १ जाणग सरीर-एटले न्यायनीतिना चलनथी, अंतःकरण शुद्ध थया पछी, जे शुद्ध सामायिकना अभ्यासवालो श्रावक हतो, तेनुं मृतक शरीर १ ॥

।। २ भविय सरीर-एटले न्यायनीतिना चलनथी, अंतःकरण-नी शुद्धि करीने, भविष्यकालमां " सामायिकना " अभ्यास करवा-वाला, श्रावकना उत्तम वालकतुं शरीर २ ॥

३ व्यतिरिक्त — एटले " पत्तय पाष्ट्यय लिहिस्रं " अर्थ — वृक्षनां पत्रां उपर, अथवा कागळ उपर, लखेलुं जे सामायिक नामनुं अध्ययन ते, आ त्रणे प्रकारनुं जे सामायिक ते " नो स्त्रागमधी" द्रव्य सामायिकना, स्वरूपथी जाणवुं॥

॥ इति सामायिकना त्रिजा द्रव्य निक्षेपनुं स्वरूप ॥

। हवे जुवो सामायिकना चोथा " भावनिचेप " नुं स्वरूप ॥

१ आगम अने २ नो आगमना भेदथी ह्रव्यानिचेपमां, आगमना स्वरूपथी वर्णन करेला, उपयोग विनानो श्रावक, जेवखते उपयोगना घरमां आव्यो, ते वखते तेने १ आगमथी 'भावसामायिकना' स्वरूपवालो जाणवो १॥

।। अने जे श्रावक, सामान्यपणाथी, व्रतादिक नियमोमां, आ-पणा आत्माने तत्पर राखी, त्रसादिक जीवोनुं, हित करवामां तत्पर रहेलो छे, तेवा श्रावकनुं वर्त्तन ते, २ नो आगमथी भावसामायिकनुं स्वरूप जाणवुं. ।। आ सामायिकना विषयमां, अमारा लेखनुं स्वरूप, श्री अनुयोगद्वार सूत्रछापानुं छे तेमां, प्रथम पृष्ट. ६१० नी, टीकामां, चार प्रकारना सामायिकनुं स्वरूप जोयापछी. । पृष्ट. ६०३ मां, सामायिकना चार निक्षेपो जोवा, पछी यावत् शब्द्धी, आवश्यकनी करेली भलामणना पाठनी साथे, मेलान करवावाला विवेकी प्रकान, सहजपणे समजाइ आवशे. ! अगर गुरु परंपरा रितने, पत्तो नही लागेतो, तेमां अमारो दोष न कहाडतां, पुछवानवालाने, खुलाशो पण वनतो करीआपीशुं. ॥ अहीं एकला श्रावकने, विवक्षाथी ग्रहण करेलो छे. ॥

॥ इति देशविरतिरूप सामायिकना, चोथा भाव निक्षेपनुं स्वरूप.

[॥] अही सुधी सामान्य भकारथी, सामायिकना, चारनिक्षेपतुं वर्णन, अमारा जाणवा प्रमाणे करी वताव्युं छे.॥

[॥] इवे अहियां 'आ चार निक्षेपोना विषयमां, गाढपणे संकित थयेलो, एक श्रावक, तर्क करवा उठे छे । तेना तर्कतुं समाधान करी बताबीये छीए. ॥

[।] तर्क—आवश्यकना, तेमज सामायिकना, नामादिक चार निक्षेपो, तमाए अनुयोगद्वार सूत्रना पाठथी करी बताव्या, ते प्रमाणे अमो मान्य करीये छीए। अने तेज सृत्रना पाठ मुजब, "लोकोनी" अवश्य क्रियाना, तेमज "पिर ब्राज्ञकादिक " साधुओनी अवश्य कियाना, नामादिक निक्षेपो पण, तेज सूत्रना पाठथी करी शकाय छे, जुवो के लोकोनी अवश्य क्रियाना पुस्तकनुं, तेमज परिन्वाजक साधुओनी अवश्य क्रियाना पुस्तकनुं, नाम राखी लीधुं. आवश्यक, तो ते सूत्रनो पण अजीवादिक वस्तुमां, एज अनुयोगद्वार सूत्रना पाठथी, १ नामनिक्षेप करी सकाशे, १॥

।। अने ते लोकिकादिक स्त्रोमां, गोठवेला अक्षरोनी, अथवा लोकिक कियामां रहेला लोकोनी, अने परित्राजकनी क्रियामां रहेला परित्राजकोनी, 'मूर्तियो ' करावेली होय तो, तेमनी अवस्य क्रियान नो,२ स्थापनानिक्षेप,पण एज सिद्धांतना पाठथी करी क्रकाय छे. २॥

॥ अने ते लोकिक आवश्यकनो, तेमज ते परिवाजक आवश्य-कनो, ३ 'द्रव्यनिक्षेप ' पण एज सूत्रना पाटथी तेमना पुस्तकोमां करी शकाय छे, ते वास्ते दूंढनी पावतीए, अने दूंढक वाडीलाले, प्रथमना त्रण निक्षेप, अवस्तु अने उपयोग विना छे एम जे कह्युं ते शुं खोड कह्युं ! मने तो ते दूंढनीनुं, अने दूंढकनुं,कहेवुं योग्य लागे छे,॥

॥ " इति पूर्वपच " ॥

॥ हवे ते श्रावकने उत्तर आपीये छीए. ॥

॥ अरे भाइ श्रावक-गणधर महाराजाओना, महागंभीर आशयधी, सूचनारूपे गृंथायेला, समुद्रूष्ट्रप सूत्रना पाठने, तमो गुरुविनाना भणीने, तेमना आशयने समज्यावगर! जेम कोइ पुरुष,
समुद्रना अमचक्रनं स्थान जाण्यावगर, तेना भ्रमचक्रमां पढी, समुद्रना तळीये जइ बेसे, तेम तमो आ चार निक्षेपोना विषयमां,
अधोगतिना विचारने प्राप्त थयेलालो, अमो आटलोबधो खुलासो
करता आच्या तोपण तमारी शंका दुर ना थइ, ते अमोने पण घणुं
आश्चर्य जेवुं लागे छे, खेर फरीथी पण तमारी शंकाना उद्धारमाटे,
बे लीटीओ वधारे लखी बतावीये छे, ते सिद्धांतना पाठनी साथे
मेळवीने विचारीजोशो।।

॥ आ अनुयोगद्वार सृत्रनुं, गूंथन करतां, गणधर महाराजाओए? सर्व बस्तुना चार निक्षेपोना विषयने, मनमां धारणकरी, प्रथम जे अमारे नित्य उपादेयरूप, छ आवश्यकनी क्रिया छे, तेना उद्देशथी ज, बीजी कियाओ विगेरे पदार्थोना, चार चार निक्षेपो करवानी,
सूचना करली छे, परंतु अमारी नित्य कियारूप उपादेय आवश्यकनी कियाथी, जूदा स्वरूपथीज फेंकी दाघेली छे, जेमके समुद्र,
अपणी तरंगोनी लालमारी, कचराने अलग निकालतो जाय ? तेम
ते हेयरूपनी, अथवा ब्रेयरूपनी, क्रियाओने काढीनांखेली छे, तेथी
अमारी उपादेयरूप, ल आवश्यकनी नित्य क्रियाना, चार निक्षेपमां, भेलसेल करीसकायज नहीं. ॥ अने ते बीजी क्रियाओना भेलसेलथी, आ आवश्यकना निक्षेपो कर्या छे एम पण कोइ दिन कही
सकायज नहीं. हां विशेषमां एटलु छे के जेने ते बीजी क्रियाओना,
चार निक्षेपो करवा होय, तेने एज स्वना पाठने लड़, जूदा रूपथी
खुशीथी कर, तेनी मनाइ पण नथीं. ॥

।। हवे जूबो के, ते छ आवश्यकनो, १ नामनिक्षेप, अजीवादिक बस्तुमां करवानो कहाो छे, तेबीरीते अमोए, सामायिक सूत्रनो ना-मनिक्षेप, पुस्तक, अने श्रावकना, आश्रयथी करीने बताव्यो छे, तेज-प्रमाणे ते आवश्यक सूत्रनो पण, पुस्तक, अने साधुना, आश्रयथीज सिद्धांतकारे करीने बतावेलो छे, ॥

॥ अने २ स्यापना निक्षेप पण, ते आवश्यक सूत्रनो, अक्षरोना आश्रयथी, अने साधुनी मृतिंग्रपथीज, करीने बतावेछो छ,॥

॥ अने ३ द्रव्य निक्षेष पण, साधुना आश्रय पणाथीज वर्णन करवा सिद्धांतकारे प्रद्यात्त करेली छे, परंतु तेमां आगम, नो आगमना, भेदो करतां, बीजी 'लोकिक,' अने 'कुप्रावचनीक,' क्रियानो 'नो' आगमना, भेदमां प्रवेश थवानो संभवथवानो हतो, तथी तेने उपादेय आवश्यक क्रियाथी, व्यतिरिक्तपणे 'नो' शब्दथी, सर्वया प्रकारथी निषेधी, जुदी फेकी दह, त्रिजो 'लोकोत्तरना' लोकोत्तरना नामथी अंश पणे उपादेय पणे राखी लीघो छे ३॥

ेा। तेज प्रमाणे, भाव निक्षेपना विषयमां पण, ते 'लोकिक,' अने 'कुपा वचनिक,' क्रियानो प्रवेश थवानो संभव आवतो हतो, तेने पण 'नो ' शब्दथी, सर्वथा प्रकारथी निषेधी त्रिजा 'लोकोत्तरिक' नामना भेदमां जेटले अंशे तेमां उपादेयता अमारी हती तेटलीनेज अंगीकार करी लीधी छे ४॥

श्वास्ते लकडेका बजारमां, कपडेका बजार, कोइ दिन पण घुसी सके तेम नर्थाः । अने उपादेय वस्तुना, चारो निक्षेप उपादेय रूपेज छे, पण त्यागवा लायक नथी, गुरुविनाना तमो, ते गणधर महाराजाओना, आश्रयने समज्या वगर, अडदने मग भेगा भइही काहडो छो, जरा लक्ष दईने सिद्धांतना पाठने जोशो तो, स्पष्ट पणे समजाइ आवसे अमो क्यां सुधी कागल चित्री हों।।

।। हजु पण जो तमो, आ विषयने, यथार्थ नही समज्या हसो तो, एक शंका उप्तत्र थवानो संभव रहे छे.। ते पण तमारा हितना माटे लखी बताबुं छुं.।

श ते शंका ए छे के, निक्षेप तो करवा मांडया हता अमारी 'उ-पादेय रूप छ आवश्यकनी नित्य क्रियाना, तो पछी " नाम निच्चेप ' जीव अजीवादिकमां, एकज वस्तुना जुदा जुदा स्था-नमां, केवी रीते करीने बताच्या. ॥

॥ अने तेज आवश्यक क्रियानो, "स्थापनानिचेप " दश जगो उपर करवानुं कहुं, आमां केवी रीते समजवुं जे, ते आवश्यक-रूप, एकज क्रियाना निक्षेपो थयाः॥

।। जैन सिद्धांतथी अजाण पुरुषे।ने आ शंका उत्पन्न थवानी

संभव रहे छे. । परंतु ते निक्षेपना स्वरूपने एक्तपणे नहीं समजवा-थीज थाय छे, जुवो के सामायिकना द्रव्यनिक्षेपमां, नयोनी मान्यता प्रमाणे, सिद्धांतना पाठ मुजब आ विषयने अमो बतावी गया छीये तोपण तमारी आ शंका दूर थवाना माटे, हुं तमोने एकज वाक्यनुं दोरडुं, तमारा मनरूपी हाथने छंबावो तो, परःडावी दउछुं, तेनो आश्रय छइ चाल्या जशो तो, घणा भागे मोटी शंका तो नहीज रहे.

।। ते वाक्य ए छे के-जे वस्तुने उद्देशीने, अर्थात् मनमां धारण करीने, निक्षेपो करवाना छे, ते वस्तुनो, जेमांथी बोध मळे, ते ते निक्षेपो तेज वस्तुना छे, एम समजवुं ।। जेमके

।। नाम मात्रनो उचारण करवाथी, जे वस्तुनो बोध जे नाम आपे, ते नाम ते वस्तुनो नामिनक्षेप, १।।

।। आकृति अनाकृतिरूपें, अर्थात् सद्भावः, असद्भावः, स्था-पनारूपे थइः, कल्पेली वस्तुना बोधने करावेः, चाहे तो ते अनेक वस्तुमां दाखल थई होय तोपणः, तेज वस्तुनो ते स्थापनानिक्षेप थयोः, समजवोः २ ।।

जो ते कल्पेली वस्तुनुं, पूर्वकाळमां अथवा भविष्यकाळमां, कारणरूप छतां, तेज वस्तुनो बोध करावी आपे तो ते, द्रव्य-निक्षेपना विषय रूप पदार्थ समजवो ॥ ३॥

॥ अने ते वस्तु ज्यारे साक्षातपणे, प्रगट रूपे बोध आपे, त्यारे तेने, भावनिक्षेप रूपे समजवी ४॥

।। विशेष एज के, जे वस्तुना बोधनी अमो चाहना करी रह्या छीये, ते वस्तुनो बोध अमोने थवो जोइये. ।।

॥ " उदाहरसा " जेमके-ऋषभादिक चोत्रीश तीर्थक-

रोमी, मनमां कल्पना लावी, नाम निक्षेपना विषयभूत, ऋषभ, अ-जितादि, नामोनो उचारण करवा मात्रथी पण, जैन मतनी श्रद्धा-वाला भक्तोने तो, ते परम पूज्योनो बोध थइ, तेमनी रोमराजीने विकश्वर करसेने करसेज, वास्ते ते तीर्थकरोना नामनो, उचारण करवा मात्रथी पण तेमनोज बोध थयो समजवो, ॥ एनाम निक्षेपनुं उदाहरण १ ॥

॥ हवे काष्टादिक गमे ते प्रकारमां, तीर्थंकरोनी ध्यानारूढ मूर्ति देखवाथी पण, तीर्थंकरोना भक्त जनोने तो तेमनोज वेाध आपनारी छे तेथी, तेज वस्तुनो स्थापना निक्षेप थयो समजवो ए बीजो स्थापना निक्षेपनुं उदाहरण समजवुं २॥

।! हवे तीर्थंकरोना, द्रव्य निक्षेपनुं, उदाहरण जूबोके,—तीर्थंकरों मोक्ष सिधाव्या छे, अने तेमनुं शरीर मात्र पडेलुं छे, तोपण भव्य पुरुषोने, ते तीर्थंकरोना विरह्थी, तेमना देह मात्रनुं दर्शन थतां पण भयानक शोकने प्राप्त करवावालुं थइ पडे छे. ॥ अने भविष्यमां, तीर्थंकर पदने पाप्त थवावाला तीर्थंकरोनो, जन्म थतांज, त्रण लोकमां प्रकाश, अने देवदादिक राजा प्रजामां, अद्वेत आनंद प्राप्त करवावालुं, अने ते तीर्थंकर पदन।ज वोधने आपवावालुं अनेक गुण स्वरूप शरी-रज छे. । ए द्रव्य निक्षेपना विषयथी बोध प्राप्त थवानुं उदाहरण ३

।। अने ज्यारे समव सरण उपर वीराजी, भव्य प्रुरुषोने देशना देता होय त्यारे ते, तीर्थंकरोनुं शरीर भाव निक्षेपना विषयभूतनुंज छे, आ भाव निक्षेपना विषयमां तो कांइ वधारे केहवानी पण जरुर-ज नथी, १ ॥

।। आमां पण विशेष समजवातुं ए छे के, जे भव्य पुरुषोना हृदयमां, सम्यन्कपणातुं बीज पडी गयुं हसे. अथवा तीर्थकर भग- वाननी भक्तिनो, अंकुरो उत्पन्न थयो हसे, ते पुरुषोज तेमना चारो निक्षेप उपर, भीति धारण करी, जेवी रीते आदरपणाथी योग्य रीते मान आपशे, ते प्रमाणे बीजाथी नहि आपी सकाय, तेमां तो तेमनी, संसारनी बहुळतानुंज, कारण समवानुं छे. ॥

।। आ चार निक्षेपोतुं स्वरूप, अमारा गणधर महा पुरुषोए, चार लीटीना लेख मात्रमां, कोइ एवा गृढ विषयथी गृंथन करीने बताव्युं छे के, तेना स्वरूपथी सर्वथा प्रकारथी अजाण, आखी दु-नीया होवा छतां पण, तेमनाज वचनतुं, सामान्य प्रकारथी अनुक-रण करीनेज वर्ती रही छे, एम अमो प्रत्यक्षपणे जोइ रह्या छीये.

जुनो के,-१ शिवजीना भक्तो, शिवजीने, अपणा उपादेयरूपे मानी, तेमना चारो निक्षेपने, मान आपी रह्या छे १ ॥

तेज प्रमाणे कृष्नना भक्तो, कृष्नना, चारो निक्षेपने, मान आपी रह्या छे. २ ॥

एवो पुरुष, आ दुनीयामां, कयो बाकी रहेलो छे के, जेने आ-पनी उपादेय वस्तुना, चारो निक्षेपने, घटतुं मान आपेलुं नथी !

तमो कहेशों के, मूर्तिना उथ्थापक, १ मुसलमान, २ किश्चन, ३ दयानंदवालाओए, मूर्तिने, मान आपेलुं नथीं. । ते पण तमारु कहेवुं जुठज छे. । केमके परमार्थने समज्या वगर, तेओए पण, मुखेथी मात्र जुठों पोकारज करेलों छे,कारण के,तेओए पण,जे वस्तुने आपना उपादेयरूपे मानी छे, तेना चारों निक्षेपोंने आपणी आपणी योग्यता प्रमाणे, मानज आपेलुं छे. ।।

जुवो के, मुसलमानो पण, अल्लाना नामने जपे छे, ते अल्लाना, नाम निक्षेपनोज विषय छे. १ ॥ अने मसीतो बनावी, एक गोखना आकारमां, असद्भावनी स्थापना रूपथी पण, तेनी सामा बेसीनेज, आपणी बंदगी करे छे। ए जैन सिद्धांतना अक्षरोथी, स्थापना निक्षेपनो विषय, स्पष्टपणे समजाइ आवे छे. २ ॥

अने ते अल्ला विगरे आपना उपादेय प्रक्षोनी, पूर्व कालनी अने, अपर कालनी, अवस्थाना स्वरूपनो, मनमां ख्याल करी, तेमना दुःखथी दुःखी, अने तेमना सुखथी आल्हादिन थता पण, अमो प्रत्यक्षपणे जोइ रह्या छीए, ते द्रव्य निक्षेपना स्वरूपनोज विषय छे. ॥

साक्षात्पणे ते मुसल्लमानोना उपादेयने, उपादेय समजे तेमां तो कांइ विशेष कहेवानी जरुरज नथी. ४ ॥

तमो हवे क्रिश्चन जणावशो, तो ते पण तेना उपादेयतुं, नाम स्मरण करे छे ? ॥

अने तेओ ते क्रिश्रननी, मूर्ति पण, उभी करीने, आदर सःका-रज करे छे. २ ॥

अने तेमना भक्तो क्रिश्चननी, सुख दुःख रूप, पूर्वाऽपर अव-स्थाना, स्मरण मात्रथी, दुःखी सुखी पण थाय छे. ३ ॥

तो ते क्रिश्चनने, साक्षातपणे आदर करे तेमां तो कांइ नवाइ जेवुज नथी ४ ॥

हवे तमो बतावशोः आजकालनो मुंडित द्यानंद, तेना भक्तो पण, तेना चारो निक्षेपोने मानज आपता जोइये छीएः। जुवो के द्यानंदना, नाम मात्रने, उचारण करी, अवज्ञा करो, केवा चीडाई जाय छे. । तथी तेना नाम निक्षेपनाज आदर प्रदर्शित करी बतावे छे. १ ॥

अने एज दयानंदनी, हजारो छवीयो, छपावी, तेना भक्तोए, आपणा घरोमां योग्य स्थानेज राखी छे ते पण स्थापना निक्षेप-नोज विषय छे ।। २ ।।

अने ज्यारे कोइ दयानंदनी पूर्वाऽपर अवस्थाने वखोडी कहाडे छे त्यारे पण तेना भक्तो जोसमां आवी जताज जोइये छीओ. ते तेना द्रव्य निक्षेपनोज विषय छे. ३॥

अने साक्षात् जे भावनिक्षेपना विषयभूत दयानंद छे तेनी हि-मायत तेना भक्तो करे तेमां तो कांइ नवाइ जेवुंज नथी. ४॥

॥ अमोए बतावेला उदाहरणोथी, बोध लेवानो ए छे के, निक्षेपोना स्वरूपने समज्या वगरनी दुनीया पण, आपणी आपणी उपादेय वस्तुना, चारो निक्षेपोने, योग्यता प्रमाणे मानज आपी रही छे.। अने अवज्ञा करवावाला पुरुषोनी तरफ भारी तिरस्कारनी नजरथी जूबे छे;। तो पछी गणधरादि महापुरुषोना कहेवाथी, चारोनिक्षेपना स्वरूपने, यथायोग्य जाणवावाला, अमारा जैनोथी, अमारा प्रमपूज्य, परम उपादेय, तीर्थकरोना, चारे निक्षेपोमांथी एक पण निक्षेपनी अवज्ञा अमाराथी केम करी सकाजे ।।

॥ आतो पेळी ढूंढनी पार्वतीए, तदन मूढताने प्राप्त थयेळा आपणा सेवकोने, प्रणेभद्रादिक यक्षोनी मूर्त्तिना पूजनथी, धन, दोळत, पुत्रादिकनो, लाभ थवानुं बतावी, महामिथ्याःवने धारण करी, सर्व आचार्योने निंदीकाहडी, पंडितानीपणाना गर्वमां गरका-व थइ, तीर्थकरोना पण त्रण निक्षेप निर्थक, अने उपयोग विना- ना, लखीने बताव्या, । एटले बुट, इस्टाकिन अने चस्मांना चढा-ववावाला ढूंढक वाडीलालना गर्वनुं तो पुछवुंज हु ! तेने तो थइ गयेला सर्व आचार्यांने, भस्म ब्रह्मा भ्रमित लखी बताव्या । आ बन्ने तत्व विमुखोए, जैनमार्गनी शैलीथी विपरीतपणे, तदन जुठनो पुंज भेगो करी, एकेको थोथो पोथो वहार पाडी, अमारा ढूंढक श्रावकोनी भोली प्रजाने, तीर्थंकर भगवाननां नाम स्मरणादिक पण निर्थक, अने उपयोग विनानां, बतावी, तेमनी किंचिन् मात्रनी भक्तिथी पण, दूर करवाना इरादाथी, अने तेमना धर्म धननो, सर्वथा प्रकारथी नाश करावी, आ महा भयानक अघोर संसारमां, रखडावी मारवानेज तैयार थयेलां छे । एम अमारा दिशावलोकन लेख मात्रना स्वरूपथी सुज्ञ पुरुषोने स्पष्टपणे समजाइ आवशे ।।

इति श्री मद्विजयानंद सूरीश्वर लघु शिष्येनाऽमर मुनिना निक्षेप विषयानां किंचित् मात्र विचारः संकलितः ।।

ढूंढक, अने मूर्त्तिपूजकनो, निचेप विषये, संवाद ॥

^{||} ढूंढक—वस्तुना चार निश्लेष तो अमो मानीये छीओ पण 'त्रणनिक्षेष ' अवस्तु अने उपयोग विनाना छे एम मानीये, एटले निरर्थक मानीये छीओ ॥

^{।।} मूर्त्तिपूजक—आचार्य, उपाध्याय, अने साधुनां, जे 'नवकारमां' नाम जपीये छीये तेना मूलनां, नाम, कयां ! केमके बीजी वस्तुमां, आचार्यादिकनां, नाम आपीये ते तो, नामनिक्षेप, कहेवाय, एवं ढूंढक वाडीलाले, अने ढूंढनी पार्वतीए, लखीने बताव्यं हतुं. । वास्ते जेवी रीते तीर्थकरोनां, मूल नाम, खोळीने काढ्यां, तेवीज रीते आचार्य, उपाध्याय, अने साधूनां पण, मूल नाम

तमारा ढूंढकोए, ढूंडीढूंडीने बताववां जोइये! तो तमारो नवकार मंत्रनो जाप, खरो गणाय, नहीं तो ते पण तमारो जाप निर्धक-रूपज निवडशे.। कारण के आजकालना गृहस्थाने, मुंडन करी, आचार्यना स्थानमां (पूज्यपद), अने सामान्य पुरुषने साधु नाम, आपोछो ते तो नामनिक्षेपज कहेवाशे.।।

ढूंढक—निह निह, ते आजकालना गृहस्थाने, मुंडन करीने जे साधु नाम आपीये छीए, ते पण, असलरूपे, मूल नामज गणीये छीये, पण 'नाम निक्षेप, रूपे गणता नथी, जो अमो नाम निक्षेपरूपे गणता होय तो, अमारो बधो संघ, ते नव दीक्षितने, वंदनाज करे नहीं, पण अमो तो ते साधुना नामने, भावमांज ग-णीने, वंदना करीये छीये. ।।

मूर्त्तिपूजक—अरे भाइ हूंढक, ते नव दीक्षित पुरुष प्रथम तो ग्रहस्थज हतो, अने पछी तेणे साधुना नामने धारण कर्धु छे, एटलामां भावसाध ते केबी रीते थइ गयो ! मात्र हाल तो ते पुरुष-मां तमो साधुना नामनोज निक्षेप करी बंदना करी रह्या छो, अने साधुपणानो खरो भाव ज्यारे आवशे त्यारेज ते खरो खाधु थशे. ॥

ढूंढक—नहीं नहीं अमो तो ते साधु पदना नामने, भाव-मांज गणीये छीए, तथी ' नामनिच्चेप ' नथी गणता, जो अमो ते नव दीक्षित साधुना नामने, 'नामनिक्षेप ' गणीये तो, अमारा-थीं वंदनाज केम थइ शके, वास्ते ते गृहस्थने, भाव साधुज मानीये छीये, अने पछी तेने वंदनादिक करीये छीये. । एवी रीत आचार्य-पदने पण गणीये छीये. ।।

मूर्निपूजक—देखभाइ ढूंढक, खरेखर भाव साधुपणु,

जेने आवी जाय, ते तो कोइ। दिन जायज नहीं, पण जे नव दीक्षि-तने तमों, भाव साधु मानीने वंदना करों छों, तमांथी, घणा एक दीक्षितों तो, छटकी गयेला पण जोवामां आवे छे, तेथी दीक्षाना अवसरमां तेने खरेखरु भाव साधुपणु आवीं गयुं हतुं, एम सिद्ध थतुं नथीं, । वास्ते विचारज करवों पडशे ! अने ते नव दीक्षित साधु ना नामने, साधु पदनों नाम निक्षेपज केहवों पडशे !!

ा अने नवकारना पदमां जे, आचार्यादिकनी माला फेरवो छो ते पण, उत्तम गुणने प्राप्त थई, जे माहा प्रस्वोए, आचार्य पदना नाम निक्षेपने, तेमज आपणामां धारण करेला साधु पदना नाम निक्षेपने, दीपाच्यो छे, तेनाज नामनी माला, ते नवकारना पदमां गणो छो, ते सिवाय बीजा कोई प्रकारनी तमारी सिद्धि थवानी नथी केमके—ते नवकारना पदमां रहेलां, आचार्यादिक साधुपद गुद्धीनां नाम छे, ते, कोई एकज नियमित पुरुषनां नथी, पण अनेक पुरुषो धारण करता आवेला छे, तेथी ते नव दीक्षितमां साधुपदना नामनिक्षेप विनानी, जे कांई तमारी धारणा छे, ते, गुरु ज्ञान विनानीज छे. । केमके नवकारमां " नमो लोए सट्यसा- हुगां " अर्थ ए छे के—लोकमां जेटला साधु होय तेटला बधाने, अमारो नमस्कार होः !। आथी ए सिद्ध थाय छे के, जेने भाव साधुपणु आवी गयुं छे, तेनो नाम निक्षेप पण, अमारे उपादेय रूपेज छे, ।।

॥ जूवो के जे गृहस्थ, दीक्षा लेवाने आवेलो छे, तेनामां यथार्थ साधुपणा प्राप्त थवानी बुद्धिथी संघनी समक्ष, ते पुरुषमां साधु-पदना नामनो, निक्षेपज करीने, वंदना करीये छीए, तेमांथी केटला एक पुरुषो तो साधुना गुणने यथार्थपणे प्राप्त करी ले छे, तो पछी उत्तरोत्तर अधिक अधिक पूजाय छे, अने जे अष्ट थाय छे तेने, फरीथी कोइ बंदना पण करतुं नथी, वास्ते आ निक्षेपना विषयमां, सिद्धांतकारनुं कहेबुं ए छे के, जेना भाव निक्षेप उपादेय, तेना चारो निक्षेप उपादेय, अने जेनो भाव निक्षेप उपादेय नथी, तेना ज्ञण निक्षेप पण उपादेय नथी। ॥

॥ जूबो के तमोए प्रथम दीक्षा लेवावाला गृहस्थमां, साधुपदनों नामनिक्षेप करी, ज्यवहार नयना मते, साधुपणाना भावने अंगी-कार करी, वंदना करवा तैयार थया हता. । ज्यारे ते साधुमां ज्यवहार मात्रथी पण तमा, साधुनी क्रिया नथी देखता तो, तेने वंदनादिक पण करता नथी, । अने दीक्षा देती वखते, जे साधुपदन्ता नामनो निक्षेप करी, वंदना करी हती ते पण, ज्यवहारनयना मतथीज करी हती तो अब विचार करो के, ढूंढनी पार्वतीए, अने ढूंढके, नामादिक त्रण निक्षेप, अवस्तु, अने उपयोग विनाना, लख्या हता ते, योग्य लख्या हता के अयोग्य ! अमो तो भार दइने कही शकीय छीये के, निक्षेप शुं चिज छे, ते, अमारा ढूंढकोने, आज सुधी पण खबर पडेली नथी, तथी चोफेर गोतांज खाधा करे छे. । हजु पण अमो कहीये छीये के अमारा वे पुस्तकना लेखथी पण तेओ, परंपराना गुरुनो आश्रय लीधा वगर यथार्थपणे निक्षे-पोना विषयमां दिशा मात्रनुं पण अवलोकन करी शकवाना नथी.

अने वर्त्तमान कालमां आपणे, साधुना चारे निक्षेपोने, जे मान आपीये छीये तेमां, व्यवहारनयना मतथी, प्रथमना त्रण निक्षेपोना वर्त्तनने जोइनेज, मान आपीये छीये। केमके चोथो भावनिक्षेप जे छे, तेतो कोइ अतिशय ज्ञानी दिना, बीजो कोइ पुरुष जोइ शकतो ज नथी, तो पछी अमारा ढूंढको, शा उपस्थी कहे छे के, त्रण निक्षेपो, निर्थक, अने अवस्तु, अने उपयोग विनाना छे.॥ वळी पण जुवो के, अमारा ढूंढको पण, एम कहे छे के, आप-णो आ जीव, ओघा अने मुहपत्तीओ, मेरु पर्वतना ढगला जेटली, ग्रहण करीने छोडी आव्यो, तोपण खरुं साधुपणुं आव्या वगर, जीवनो कांइ दहाडो वळ्यो नथी.।

आ उपरथी विचार करों के, ते जीव साधुपणानी किया, अने साधुपदना नामनिक्षेपने, व्यवहारमात्रथी द्रव्यार्थिक नयनामत प्रमाणे धारण करीने ते वखतना श्रावकोनी पासेथी, वंदनादिक करावी हशे के नहीं ! अने ते वखतना श्रावकोए पण, व्यवहारनयथी साधुनी किया विगरेनां, आचरण जोइ, ते दीक्षित पुरुषोमां भाव-साधुपणानो आरोप करी, ते वखतना श्रावको वंदना करता हशे के नहीं ! तेनो विचार करों !

आ लेख लखवातुं अमारु प्रयोजन ए छे के, आज कालना नवदीक्षित पुरुषोमां, साधु पदना नामादिक निक्षेपने, जे मान आपीये छीये ते पण, ते पुरुषोमां साधुनी व्यवहारमात्रनी क्रियाने जोइने, तेमां भावसाधुपणानो, आरोप करीनेज आपीये छीये.

तो पछी त्रण निक्षेपने, अवस्तु, अने उपयोग विनाना छे, एम शा हिसावथी पोकार करो छो ! छुं ! तमो एवो निश्चय करी आ-पवाने समर्थ छो के, जेने मुख उपर पाटो चढावी, हाथमां वेलना पुछडा जेटलो ओघो पकडी लीघो एटले ते, भाव सायुज यह गयो ! जुवो अनुयोगद्वारना सूत्रने के, १ नाम निक्षेप, २ स्थापनानिक्षेप, अने ३ द्रव्यनिक्षेपना विषयमां, साधुनी हदनुं वर्णन क्यां सुधीनुं छे। एटले तमारी नजर उघडशे ।।

अने जे आवश्यकना चार निक्षेप कर्या छे, ते सूत्र, अने सा-धुना, 'उद्देशने, वळगीनेन कर्या छे, अने ते आवश्यकसूत्रना, अ-

१ मूत्रना आश्रयने अने साधुना आश्रयने,

ने ते पुरुषोना, प्रथमना त्रण निक्षेपने, उपादेयपणे मानी, योग्यता प्रमाणे आदर पण करी रह्या छे. । वास्ते ते उपादेय वस्तुना त्रण निक्षेप निर्श्वक नथी. । ए तो पेली ढुंढनीनी, अने ढ्ंढक वाडीला-लनी, मतिज, आ निक्षेपादिकना विचारमां, निर्श्वकरूपे निवडेली छे.

आ अनुयोगद्वार सूत्रनो, विषयज महा गंभीर छे, ते परंपराना
गुरु पासेथी भण्या वगर, अने टीका भाष्यादिकनो आश्रय लीधा
वगर, इंढनी, अने इंढक, इंढी इंढीने मरशे तो पण, पत्तो लागवानो नथी। किमके ते अनुयोगद्वार सूत्रमां, अमारी उपादेयरूप नित्य
क्रियाना, जे चार निक्षेप करवा मांडया छे, ते क्रियाना बोधने आपनारू सूत्र छे, अने प्रगटपण बोध आपनार साधु छे, तेना आश्रयने लड्नेज, चार निक्षेपो क्यो छे। अने ते वस्तुना चार निक्षेपो,
अमारा जैनोने उपादेय रूपेज छे।

।। मात्र विशेष एज छे के, ज्यां सुधी अमी ते आवश्यक ित्याना, खरा अर्थने प्राप्त करी, तेमां लीन नहीं थइये, त्यां शुधी, जेवी रीते पूर्वकालमां ओघा अने मुहपत्तिओना, ढगला करना आव्या, तेवी रीते आ वखतना पण ओघा अने मुहपत्तिओ फोग-टना भारभृत रूपेज छे, एम सर्व जीवोने ते भाव आवश्यकना पाठथी, बोध लेवानो छे.। नहीं के प्रथमना त्रण निक्षेपने, अवस्तु कहीने फेंकी देवाना छे,।।

॥ जो तमो ते आवश्यक क्रियाना, त्रण निक्षेपने, सर्वधा प्रकारथी अवस्तु, अने उपयोग विनाना, निर्धिकरूपे, कहेवाने मागता होय तो, प्रथम तमारा ढंढकोने, ओघा अने मुहपतिओज, फेंकी देवी जोइये. । केमके आवश्यक क्रियाना भाव निक्षेपमां पण, नो आगमना, " लोकोत्तरिक " नामना भेदमां, उठवा वेसवारूप क्रिया, ओघाना फिराना, विगरे सर्व क्रियान निषेधीने केवल शुद्ध

आगम मात्रनेज ग्रहण करी लीधेलो छे, तो पछी सा वास्ते प्रति-क्रमणमां, उठ वेस करी ओवा फेरवोछा! सिद्धांतकारे तो आगम मात्रना पक्षने ग्रहण करीने तमारी ते क्रियाने पण निषेधी कहाडी छे.। तमो गुरु विनाओने, सिद्धांतोनो अभित्राय समजवो, घणा कठीन समजुद्धं. । तोपण पेली ढूंढनी, अने ढुंढकने, जुठो गर्व केटलो वधो थयेलो छे के, जाणे, वयांए सूत्रोना पारगामी तो आजकालना जन्मेला अमाज छीये. बाकी बधा थइ गयेला आचार्यो तो, भ्रम्म ग्रहना भ्रमित, !! आ ते अमारा इंडकोनो, केवी रीतनो मृढ पंथ हुशे के, बधाए हाजी हाज करीने आपणा आत्मा उपर पडता हुवा, उत्सूत्र प्ररूपणारूप, तिक्ष्णधाराना कुहाडाना, घावनो, बचाव करवानो, कांइ पण विचारज करता जोवामां आवता नथी। मोढेथी तो तेओ पण एम कहे छे के, सूत्रना एक अक्षर मात्रनी लोप करे ते पुरुषो अनंत संसारी थाय, त्यारे शुं ! मूल सूत्रना बधा पाठोना पाठ उलटावी, जुटे जुट लखवावालाने, कांइ पाप लागतुं नहीं होय ! जे तेना लंगटीया यार बनी, देवनी, गुरुनी, अने सिद्धांतना पाठनी पण, अवज्ञा करवा मंडी पडे छे! शुं कोई पण विचक्षण पुरुष तेओमां, विचार करवावालो नही होय! जे अनुयोग-द्वारसूत्रना पाटने नदन् उछटावी, मृढ मतिनी ए, त्रण निक्षेपने जुठा, निरर्थक, उराव्या, तोपण तेने कोइ पुछवावाळुंज। नथी मळतुं ! अने उळटा ते ुँउत्सृत्रना लेखोने पण उत्तेजन आपवा तैयार थड गया ! आते संरारनी श्रमणमां, कड हट सुधीना जीवो सम-जवा! ते कांइ कळी शकातुं नथी. । आनंदघन महाराजे पण कहुं छे जे, ॥ पाप नहीं कोइ उत्सृत्र भाषण जिस्यो, धर्म नहीं कोइ जगसूत्र सरिखोः ।। आ महापुरुपना वचनथी पण, एमज मालम पडे छे के, जे दुनीयामां मोटामां मोद्धं पाप छे ते तो सर्व आचा- योंनी निद्या करी, मति कल्पनाथी गणधर महाराजाओने तुछ समजी, आपणा मन गमतो बकवाद करवावालानेज, लागतुं होय, एम हुं कल्पना करुंछुं, ।।

| ढंढक-मने घणी शंका थइ पडीके, जे प्रथमना त्रण निक्षेप, उपयोगिवनाना निर्धिक, ते, आजकालना नवदीक्षित पुरुषोमां, भावसाधुपणानो आरोप करीने, प्रथमना त्रण निक्षेपनुं वर्क्तन जोइ, ते प्रक्षोने वंदना करीये छीए, तेथी ते प्रथमना त्रण निक्षेपना त्रण निक्षेपन, उपादेय छे, ए शी रीते समजवुं । अने ए चार निक्षेपोना विषयमां तात्पर्य शो छे, अने अमारी ढूंढनीए, अने ढूंढके, अमोने शुं समजावी दीधुं, ते विषये हनी शुधी हुं कांइ पण समजी शक्यो नथी। ।

। मूर्त्तिपूजक—अरे भाइ दृंदक, दूंदनीए, अने दृंदके, चार निक्षे-पोना विषयमां, जे कांइ समजाव्युं छे, ते वयुं विपरीते विपरीतज सम-जाव्युं छे. । कारण जे गुरुज्ञान विनानां ते, पोतेज गोतामां पडेलां, बी-जाने शुं समजावी देवानां हतां. । विचार करो के, दूंदनी, सूत्रनी वेचार लीटीना लेख मात्रने तो समजी शकी नथी, तोपण निर्युक्ति पण दूंदनी, भाष्य छे ते पण दूंदनीज, अने टीका ते पण दूंदनी, आपो आप बनी बेटी अने बधा आचार्योने निदी काहदी, पेला मूद सेवकोमां केटलुं वयुं पंडितानीपणुं मगट करी बेटी छे ! दूंदनी कुदी एटले, आ बुट इस्टाकिनने चस्मावाला तो एटला बधा कु-याजे, बधा आचार्यों तो भस्मग्रहना अमितः । वाहरे पंडितना दीचरावाह, अने तारा कुदकाने पण वाहः।।

।। भगवानना ज्ञानादिक गुण वस्तुना जे त्रण निक्षेपो, अमारे स्वासपण उपादेय, ते त्रण निक्षेपो निरर्थक, अने उपयोग विनाना, अने भगवानना ज्ञानादिक गुणनों जे भावनिक्षेष, अमारा उपयो गमां आवतो नथीं, ते आ लोकमां उपयोगी वतावे छे, आते अमारा दृंढकोनी केटली बधी विपरीत मति समजवीं ? ।

।। देख भाइ ढूंढक, आ चार निक्षेपोना विषयमां, तने कुंची बतावुं ते ध्यानमां राखी, बधी दुनियाना, पदार्थोना, चार चार निक्षेपो करतो जा.। अने हेय पदार्थोना चारे निक्षेपो त्यागतो जा.। अने हेय पदार्थोना चारे निक्षेपोथी ज्ञान माप्त करतो जा.।। अने उपादेय पदार्थोना चारे निक्षेपोने, अंगीकार कर तो जा, अने साध्यमां विचार पण करतो जा के, भगवानना वचनने अनुसरी, परमार्थने समज्या वगरनी, दुनीयाए पण एज प्रमाणे वर्त्तन करेछुं छे.। अने तमारा ढूंढकोए पण, मृतक साधुनी, तेमज जीवता साधुओनी, छबीयोने पडाबी, एज प्रमाणे वर्त्तन तो करेछुंज छे.। मात्र कोइ विशेष पापना उद्यथी, वीतरागनी मूर्त्तिनाज वैरी बने छा छे. माटे हे भव्यो उपादेय वस्तुना चारो निक्षेपोने उपादेयपणे समजी तमो तमारुं कल्याण करों?।

ा देख भाइ ढुंढक, आ दुनीयामां पदार्थी, मुख्यताथी वे प्र-कारनाज होय छे, । एक तो " अभ्यंतर गुगा किया वाचक, अने बीजा " बाह्य स्वरूपयी गुगा किया वाचक "। " उदाहरगा " घट पटादिक पदार्थी, केवल वाह्य गुण कियाना बाचको छे, जेमके—रक्तपीतादिगुण, अने घृतादि भरणरूप किया. ॥ आ बेमांथी जे विवक्षाना आधीन थइ, निक्षेपो करवामां-डया, ते ते निक्षेपो ते ते स्वरूपथी घटाववा. । तेनो विषय अमो अहियां लखता नथी, पण अभ्यंतर गुण कियाना धारक, तीर्थकरो ना, बाह्य गुण स्वरूपथी अने अभ्यंतरना गुण स्वरूपथी, चार चार निक्षेपोने, सामान्यपणे जणावीये छीये ॥

॥ जुबोके-तिर्थकरोनी करीर रूप बाह्य गुण वस्तु छे, तेनो १ "नाम निक्षेप"ऋषभादिक,।२स्थापना निक्षेप मूर्त्ति,।आ वे निक्षेपोज, वर्त्तमानकाळमां छे।अने आचार्यादिक बाह्य गुण वस्तु रूप क्रिरोना, चारो निक्षेप विद्यमान छे. ॥ अने तीर्थकरोना ज्ञान, दर्शन, अने चारित्र, रूप जे अभ्यंतरना गुणरूप पदार्थों छे, ते वस्तुओना तो, प्रथमना " त्रगा निच्चेपोज " अमारा छाभने माटे विद्यमान रहेला छे. ।

अने ते तीर्थंकरोना, भावनिक्षेपना विषय भूत, अम्यंतर गुणो हता ते तो, ते मोक्ष गामी जिंदो मोक्षे जतां साथमांज लहने चाल्या गया छे। परंतु अमारा वास्ते ते गुणोमांथी एक गुण पण भाव निक्षेपना विषय भुतने मुकीने गयेला नथी। । वास्ते तीर्थंकरोना ज्ञानादिक गुणोना, प्रथमना "त्रण निच्चेपोज " अमारा वास्ते परम उपादेय पणे रहेला छे।। अने तेमणा गुणोना, "त्रणा निच्चेपनी " आराधना पण करीये छीए,। अने ते तीर्थंकरोना गुणना प्रथमना त्रण निक्षेपोन अमारा गुणनी प्राप्ति थवामां, आधार भुत मानीये छीए।। अने अंश मात्रथी ग्रहण करवाबाला आचार्योदिकोमां, तेमणाज गुणो छे, एम आरोप करी, व्यवहार नयना मतथी, ते आचार्योदिकोना चारो निक्षेपोनुंज, अमो योग्यता प्रमाणे सेवन करवा तत्पर थयेला छे,। पण मुख्यताह्रपे तो ते 'आचार्या-दिकोना, प्रथमना त्रण निक्षेपोज, अमारे वधारे कल्याणना दाता

१ " मावानक्षेपने " नाहे धारण करवा वाला, अमन्य आचार्योना बोधथी, अनेक मन्य पुरुषो मोक्षे जाय, एवा सिद्धांतोमां खुलासो छे.

छे,। कारण के ज्ञानादिक गुणनो जे चोथो " भावनिचेष " आचार्यादिकयां रहेलो छे, तेतो तेओनाज माटे छे, परंत् पगटपणे अमारा लाभना माटे थतो नथी. । जेना गुण ते तेनाज लाभने माटे होय छे. । ज्यारे तेमणा, गुण, प्रथमना त्रण निक्षेपना विषयभूते थइ, अमारा जोवामां आवशे, त्यारबाद ते प्रथमना त्रण निक्षेपनी आराधना करीशुं, अने अमारा आत्माने पण तेमना प्रमाणे, चोथा भावनिक्षेपना विषयभूत भावगुणमां, लीन करवा तत्पर थड्युं, त्या-रेज अमारुं पण कल्याण थयुं एम समजीशुं. । वास्ते अमारा पामर जीवोने तो, ते महापुरुषोना शरीररूपवस्तुना, तेमज गुणरूप वस्तु-ना चारो निक्षेप उपादेयरूपज छे.। तेमां पण मुख्यताए, तीर्थंकरादिक महापुरुषोमां रहेला गुणरूप वस्तुना तो, प्रथमना त्रण निक्षेपोज, अमारा वास्ते, आराधना करवाने, आ लोकमां प्रगटपणे रहेला छे।अनेतेमनाज ज्ञानादिक गुणोने, अंश मात्रथी त्रण निक्षेपोना विषयरूपे स्थापन करी, गणधरादि महापुरुषो, पुस्तक पानां उपर चढावीने मुकी गये-ला छे. । ते पुन्तक पांनांना विषयभूतने प्राप्त थयेला, भगवानना ज्ञानादिक गुणोना, त्रण निक्षेपने, अवस्तु ! अने उपयोग विनाना, निरर्थकरूपे छे, अने केवल तेमणो चोथो भावनिक्षेपज आ लोकमां उपयोगी छे एम जुटो पोकार करवावाळाने, बीतरागना भक्त सम्य-क्क धारी केहवा, के, महा मिथ्या दृष्टि विपरीत मतिवाला केहवा ! तेनो विचार करवानुं, वाचक वर्गनेज सोंपी दृइये छीये.॥

।। जूबो के तीर्थंकरोना शरीररूप वस्तुनो, जे, चोथो भावनिक्षेप हतो ते, मृतक शरीररूप, त्रिजा द्रव्यितिक्षेपना विषयभूत थइ, आ दुनीयाना पुद्रल द्रव्योमां लीन थइ, रूपांतरने प्राप्त थइ गयो छे। अने तेमणा वे निक्षेपज, अमारा आराधनने माटे रहेला छे। अने ते तीर्थंकरोना ज्ञानादिक गुणोना, चार निक्षेपो हता तेमांथी,

चोथा भावनिक्षेपना विषयभूत गुणोने, ते मोक्षगामी जोवो मोक्षमां जतां साथे छइ जइ, अव्यावाधपणे छीन थइ रहेछा छे. तेथी ते तीर्थकरोना, ज्ञानादिक गुणनो, जे चोथो भाव निक्षेप, छे ते वर्त्तमान कालमां, अमारा पामर जीवोना उपयोगमां, कोइ रीते आवी शके तेम नथी, ॥ परंतु अमारा आराधनने माटे ते तीर्थकरोना गुणोने, गणधरादि महापुरुषो, मथमना त्रण निक्षेपक्ष्पे, पुस्तकपानांना स्वक्ष्पथी, आ दुनीयामां स्थापित करी गयेला छे. । अने तेमना स्थापित करेला, प्रथमना त्रण निक्षेपरूप प्रस्तक पानांथी, ते गुणोनी प्राप्ति करवा, अमो मथन पण करी रहेला छे, तो पछी प्रथमना त्रण निक्षेप, निर्थक, केम कही शकाय!

ढूंढक—भगवाननां ऋषभादिक नामनी, आराधना करवी ते तो नाम निक्षेप, ॥ अने तेमनी मूर्तिनी, आराधना करवी ते स्थापना निक्षेप, ए तो समजायुं । परंतु भगवानना, ज्ञानादिक गुणना, प्रथमना त्रण निक्षेप, केवी रीते थता हशे ते विषये हजी सुधी हुं कांइ समज्यो नथी ते बतावो त्यारेज तमारु कहेवुं योग्य थयेछुं छे एम हुं समजुं । नही तो तमारु कहेवुं पण अयोग्यज समजु छुं ॥

मृत्तिपूजक—अरे भाइ दृंदक, हजी सुधी तारी समज थइ नहीं, ते घणुं आश्चर्य जेवुं लागे छे, । प्रथम तो देख अमारो लखे-लो, श्री अनुयोगद्वार सूत्रनो पाट. । अने पछीथी देख, वाडीलाल-नो लेख, विपरीत बुद्धिथी लख्यों छे, तो पण आपणे शुद्धी मितथी समजी लेवानों छे, ॥

पृष्ट. १३ मां-सूत्रना, त्रण निक्षेप करीने बताव्या छे. । अने पृष्ट. ८२ मां-ज्ञानना, त्रण निक्षेप करीने बताव्या छे, ते भगवानना क्वानादिक गुणनाज, आधार आधेयना स्वरूपथी समजवाना छे.।
निह के बीजा कोई ज्ञानरूप ढगलाना, करीने बतावेला समजवाना
छे,। जेमके ढूंढनी पार्वतीए सत्यार्थना पृष्ट. १०२ मां, लख्युं
हतुं के, नंदीश्वर द्वीपमां, जंघाचारणे जइने, ज्ञानना ढगलानी स्तृति
करी, एम जे बताव्युं हतुं, तेवो ज्ञाननो कोई बीजो ढगलो हतो,
एम समजवानुं नथी ! तेतो अद्दश्यरूप आत्माना, ज्ञानादिरूप
गुणनाज आधारभूत पुस्तकादिक विषयना, त्रण निक्षेप करेला
समजवाना छे, पुस्तकादिक अचेतनरूपे छे, अने आचार्यादिक सचेतन रूपे छे.।

अने ज्ञानादिक गुणनो जे चोथो भावनिक्षेप छे तेतो प्रथमना त्रण निक्षेपहृप कारणना योगथी भन्यात्मा पुरुषो जे कांई आपणा आत्माना उपयोगमां रमणता करी रह्या छे तेज चोथा भावनिक्षेपनो विषय छे. । सूत्रना पाठने तपासी विचार करो ! अमो क्यां सुधी बारंबार लखीशुं इसलं विस्तरेण.

इतिश्री मद्वि जयानंद सूरीश्वर छछ शिष्येनाऽमरमुनिना ढूंढक मूर्तिपूजकयोः निक्षेप विषयः विचारस्य संवादः संकलितः॥

जैन सिद्धांतोमां, वर्णन करेली क्रियात्रोना, निचेपोनुं स्वरूप,

जैन सिद्धांतोमां, वर्णन करेली क्रियाओना, निक्षेपोनुं स्वरूप पाठकवर्ग ? जैन सिद्धांतोमां, वर्णन करेली, साधुओना पंच महाव्रतादिकनी कियाओ, तेमज श्रावकोना सम्यक्त्व व्रतनी कि-याओ पंच अनुव्रतनी क्रियाओ, त्रण गुणव्रतनी कियाओ, समा-यिकव्रत, देशावकाशिकव्रत, पोषधव्रत, अतिथिसंविभागव्रत, ए चार शिक्षाव्रतनी क्रियाओं । एकंदर ए सम्यक्त्व धर्मनी क्रिया पूर्वक सर्वे बारां व्रतनी क्रियाओं छे, ते, अने दान, शिल, बाह्य तपा-दिकनी, क्रियाओं हे, ते सर्वे पाये, ? नैगम नय, २ संग्रहनय, ३ व्यवहारनय, अने ऋजुसूत्रनय, आ ४ जे द्रव्याधिक चार नयो छे, तेना संबंध्यी जोडाइने, प्रथमना त्रण निक्षेपो सुर्धानीज क्रियाओं वर्णन थयेलुं छे।।

जेमके सम्यक्त अहिंसादिक त्रोनां नामो, तेम ज सामायिक, पो-पध त्रतादिक नां, जे जे कियाओ नां, जे जे त्रतोनां, जे जे सिद्धांतकारो-ए नाम आपेलां छे, तेते सर्व नामानिक्षेपनाज विषयभूतनां छे. । अने जे जे ते कियाओ नां साधनभूत उपकरणों, अने तेमां रहेली कियाओ छे, ते सर्व द्रव्य निक्षेपनाज विषयभूतनां छे. । अने ते सर्व त्रतोनां नाम, अने तेनां साधनों, अने ते विषयमां रहेली कियाओ छे ते सर्व, अल्पसंसारी पुण्यात्मा भव्य पुरुषाना, भावनेज उत्पन्न कराववा वाली होवाथी, सदासर्वकाल वस्तु रूपनी उपयोग-वालीज छे. । परंतु, ढूंढनी पार्वतीए, अने ढुंढक वाडीलाले, सि-द्धांतकारोना आश्रयने समज्या वगर, जे प्रथमना त्रण निक्षेपोने, निर्थिक, अने उपयोग विनाना ठराव्या, ते प्रमाणे उपयोग विनाना नथी, । आतो ढूंढक, अने ढूंढकडीनुं, लखाणज सर्वथा प्रकारथी उपयोग विनानुं थयेलुं छे.

कारणके-साधुनां ओघो मुहपत्ति विगरे उपकरणो, तेमज आहार, विहार, आदिक व्यवहारनी शुद्धि वाली, द्रव्य निक्षेप सुधीना विषयनी जैन मार्गमां वर्णन करेली क्रियाओ पण, नव ग्रैवयक सुधी पोहचाडवाना सामार्थ्य वाली छे.

अने श्रावकोना सम्यक्त व्रतादिकनी जे जे क्रियाओं छे ते पण पूर्णपणे अध्यात्मिक विषयवाला, भावनिक्षेप विनानी, अने द्रव्य-निक्षेपसुधीना विषयवाली होवा छतां पण बारमा देवलोक सुधी, पहोंचाडवानी सामार्थ्यवाली छे.।

आ जे साधुनी, अने श्रावकनी, क्रियाओना सामर्थ्य पणानं, वर्णन करीने बताव्युं ते बयुए प्राय, नेगमादिक चार द्रव्यार्थिक न-योना स्वस्पर्थी, त्रिजा द्रव्य निक्षेपना विषय सुधीनी क्रियाओना सामर्थ्य पणाथीज सिद्धांतोमां वर्णन थयेतुं छे.। अने ते क्रियाओना करवावाला पुरुषोनेज, सर्व जैननो समुद्राय, तेमज बीजा भदिक परिणामी लोको पण, मानज आपी रह्या छे.। अने ते अध्यात्मिक भाव निक्षेपना विषय विनानी, अने द्रव्य निक्षेपना विषय सुधीनी, क्रियाओना करवावाला साधुओ पासेथी पण, प्रति बोधने प्राप्त थया पछी, अनंत भव्य जीवो, अध्यात्मिक तीत्र आत्माना परिणाम, के जे शब्दादिक त्रण पर्यायार्थि नयोना विषयवाला, चोथा भावनिक्षेपना स्वस्पना छे, तेने प्राप्त थइने, मोक्ष पोता छे.। एवा सिद्धांतोमां लेखो छे.। अने ते मोक्षगामी जीवो जे मोक्षे पोत्या छे ते पण, द्रव्यनिक्षेपना विषयवाला प्रक्षोना कर्त्तव्योने उत्तमपणे मान आपीनेज पोत्या छे.। अगर जो ते मोक्षगामी जीवो, द्रव्यनिक्षेपना अधिकार मात्रनं प्राप्त थयेला साधु पुरुषोने, मान न आपता तो,

तीत्र भावने पाप्त थइ, मोक्षे पण न जइ शकता. ॥

अने दूर भवी, अभवी, जीवोने तो, साक्षात् भावनिक्षेपोना विषयभूत, तीर्थकरोना समागमधी पण, लाम थयेलो नथी, तेम थवानो पण नथी, एवां वचन पण आपणे सिद्धांतथी सांभलीये छी-ये. । तेनुं कारण एज के, परमोपादेयना त्रणे निक्षेपोनी अवज्ञा करीने, महामलीन परिणामने प्राप्त थयेला ते प्रक्षो, साक्षात् भाव-निक्षेपना पदार्थथी पण, रुचिने माप्त करी शकता नथी, तेथी ते उपादेय वस्तुनी भक्ति विनाना, अघोर संसारमां रखडे छे. । ए शिवाय बीजुं कोइ पण मुख्यताए कारण जणातुं नथी। वास्ते प्रथमन निक्षेप निर्थक नथी, तेम उपयोग विनाना पण नथी, मात्र सिद्धांतोथी विपरीतपणे, लेख लखवा वाला ढूंढकोना, विचारज, निर्थक, अने उपयोग विनाना थयेला छे.

जूबो. पृष्ट. ४७ थी ते. ४८ मां-ढुंढक वाडीलाल पण लखे छे के-दुर्भवी, अने अभवी, जीबो, अन्यजनाने प्रतिबोधी, मोक्षनां साधनो बताबे, पण पोताने गंद्री भेद थाय नहि, संजम लड़ द्रव्य क्रिया करे, पण अंतर कोरु रहे. ।।

हवे आ ढ्ढंकनाज लेखथी विचार करों के, ते गंद्वी भेद विना-ना, द्रव्य कियाना करवावाला दुर्भवी अने अभवी पासेथी मोक्षनां सा-धनने, जे भव्यपुरुषों ग्रहण करता हशे ते तो, ते द्रव्य कियाना करवा वालाने, पात्र जाणी, अने तेमनी भक्ति करीने, अने सत्यपणाना उपदेशने प्राप्त थइ, ते साधनोने मेळवता हशे के नहीं! अने ते स-त्यपणाना मार्गने पाष्त थया पछीज मोक्षे जता हशे के नहीं! अ-रूप जो त्रण निक्षेप, सर्वथा प्रकारथी निर्धक, अने उपयोग वि-नानान होता तो, ते भव्यपुरुषों, कोई दिन पण, मोक्षनां साधन मेळवी शकता नहीं।। अने ते द्रव्यनिक्षेपनी क्रियाओना आधार भूत साधु पुरुषोनी अंतःकरणना तीव्र परिणामथी भक्ति करी आपणा आत्मानुं कल्याण पण मेळवी शकता नही. ।।

व(स्ते आमां विशेष विचार करवानो ए छे जे, जैनमार्गनी जेटली धर्म संबंधि कियाओं छे, ते बधी ए प्राये द्रव्यार्थिक चार नयोना मुख्यपणाथी, त्रिजा द्रव्य निक्षेपना विषय सुधीनीज छे.। अने ते वधीए क्रियाओ, मोक्षनांज फलने भाप्त करवामां कारणभूत छे. । अने ते खास उपयोगवाली अने सार्थकरूपनीज छे. । परंतु जो ते क्रियाना करवावाला जीवोज, केवल मलीन हृद्यवाला, अने तत्त्वथी रहितपणे केवल कष्टना करवावाला, अने जूठे जूठनो उपदेश देवावाला, अने उपरथी मोटो भभको बतावी बीजा जीवोने आंजी नाखी तेमना पण सत्य बोब बीजने वाळी मुकवावाला, तेवा जीवोने बोध बीजनो अंक्ररो उत्पन्न न थाय, तेमां ते त्रण निक्षेपना विषय स्वरूपे वपरातां उत्तम क्रियारूप कारणी-नो शो वांक ! जेमके-वर्षा, पवन, गरमाइ, विगरे सर्वे, बीजनी उत्पत्तिमां मुख्य कारण छे, परंतु जो वीजज शेकाइने अर्द्ध दग्ध थया पछी पेरवामां आवे. अने ते कारणो अनुकुल छतां पण, अंकुरो उत्पन्न न थाय, तमां ते वर्षादिक कारणो, निरर्थक-रूप छे, एम ते आपणाथी केम कही शकाय.! मात्र तेमां तो ते बीजनीज निरर्थकता गणायः । तेमज वीतरागनी भव्य मूर्त्ति, भक्तिनो अंकरो उत्पन्न करवामां मुख्य कारण होवा छतां पण, अद्भेदम्ध प्रुरुषोना हृदयमां, भक्तिनो अंक्रुरो उत्पन्न न थाय, तेमां कांइ भग-वाननो स्थापना निक्षेप, निर्धक, अने उपयोग विनानो छे, एम सिद्ध न करी शकाय, तेमां तो एज सिद्धि करी शकाय के, ते जीवोने कोइ विशेष कर्मना उदयथी, अने विपरीत बोध प्राप्त थवा-थी अने तेमनुं अंतःकरण अर्द्धदम्ध थइ जवाधी, ते कारण लागु पढी श्रकतां नथीः । बाकी तीर्थकरनी भन्य मृत्तिं तो, भन्य प्रक्षोना अंतःकरणमां, भक्तिनेज उत्पन्न कराववामां मुख्य कारण छे. । ते सिवाय बीजा कोइ पण कार्यने माटे बनाववामां आवेळी नथीं, छतां जेओने विपरीत भास थवाथीं, जगो जगोपर विपरीतपणुं द्शीवीं, जे जैनतत्वोमां उळट पाटळपणुं करी रह्या छे, तेमां तो अमो तेओना कर्मनीज बहुळता समजीये छे. बाकी वीतरागदेवनी मृत्तितो अंतःकरणने मळीन करवाना स्वरूपनी नथीं। ।।

थातो अमारा ढूंढके, अने पेली ढूंढनीए, वीतरागदेवनी भन्यमूर्तिथी द्वेष थारण करीने, बधा त्रण निक्षेपो निर्धक टराववानेज
थोथा पोथाने घसेडी नांख्या. । परंतु एटलो विचार न कर्यो के,
अमारा ढुंढको जेटली क्रियाओ करी, लोकोमां प्रगट करीने वतावे
छे, ते बधी ए क्रियाओ द्रव्यार्थिक चार नयोना स्वरूपथी पद्रिति
त्रिजा द्रव्य निक्षेपनाज विषय सुधीनी छे, अने तेनो निषेध
करवाथी, अमारी वधी क्रियाओज, सर्वथा प्रकारथी निर्धक,
अने उपयोग विनानी थइ जरो तो पछी, जे अमो क्रिया पात्रपणानुं
मोटं डींग मारी लोकोमां सिद्धाइ बतावीये छीए, ते पण, अमारु पोकल बाहार पडी जवाथी, बीजा कया प्रकारनी सिद्धाइपणानुं डींग बताविशुं, एटलो पण विचार, तेओ हृदयना मलीनपणाथी, न करी
शक्या, तो पछी बीजा कया जैनना गृढ तत्वोनो विचार करी

कदाच अमारा ट्ंटको एवं कहेशे के, साधुओनी, अने श्रावको, नी, जे जे करवानी क्रियाओ छे ते ते बधी ए, अमो भावनिक्षेपना विषयमांज गणीये छीये. । ते तेमनुं कहेवुं तदन सिद्धांतकारना क-हेवाथी विपरीतज छे. । जूबो आ विषयमां निक्षेपोना विषयनो पाठ, एटले स्पष्टपणे समजाइ आवशे. । कारण के त्रण निक्षेपोना विषय सुधी तो, भावनिक्षेपना विषयमां, कारणरूपे थवाना स्वरूपने ते पाठमां बतावेद्धं छे.

जमके—नाम सांभलतां, ते विषयनी हयमां जागृती थवाथी, आत्माना विचारो घोलायमान थाय छे, । पछी तेमां तर्कोनी स्फूरणा उठे छे, । पछी ते पदार्थोना विचारो पण बांधे छे । छेवटमां ते वस्तुनो निश्चय पण करी शके छे. १ । एज प्रमाणे ते वस्तुनी स्थापना देखवाथी, पण विचारोनी स्फुरणा थइ, अध्यात्मिक परिणामोनी जागृती थाय छे. । अने एज प्रमाणे ते वस्तुना द्रव्यनी सामग्री पण, अध्यात्मिक परिणामोनी, घोलना उरुषक करी ते, मूल वस्तुना भावमां चित्त लीनपणे थइ जाय छे. ।।

। तथी विवक्षित वस्तुनुं जे कारण छे तेज द्रव्यनिक्षेपनो विषय छे। वास्ते आ त्रण निक्षेपो शुधीना पदार्थों छे तेज, अध्यात्मिक परिणाम उत्पन्न करवामां मुख्यताए कारण रूपना छे.। परंतु ते पदार्थों अध्यात्मिक परिणामनी माप्ति करवामां, जे जीवोनो जेवो स्वभाव, जेवी रुचि, जेवी जेनी मान्यता, जेवी जेनी भाव तच्यता, तेवा तेवा भावपणे ते जीवोना परिणामने प्राप्त करी, तेवा तेवा फलना, भाजन बनावे छे.। जेमके—चुडी, अने चोर, न जेवी वस्तु छतां पण, ते, निमराजाने, अने समुद्रपाल राजाने, बोधनुं कारण थइ, अपूर्व अध्यात्मिक भावोनी घोलना उत्पन्न करी, संसारना निस्तारमां, कारणक्ष्ये थइ पडचां.॥ अने तीर्थकरो जेवा साक्षात् विचरता हता तोपण, दूरभवी, अभवी, आदि जीवोने, संसारनी बहुलतानाज कारणक्ष्ये थइ पडताः। वास्ते चार निक्षेपों, जे शास्त्रकारोए वर्णन करेला छे, तेमांथी एक पण, निर्थकरूपनो नथी, ते तो, जे आत्माना अध्यात्मिक परिणामरूप, भावनिक्षेपनो विषय छे, ते भावने तरत मताना स्वरूपथी उत्पन्न करवामांज मुख्य कारण छे।।

॥ तेमां विशेष एज छे के, अनिष्ठ वस्तु छे तेना त्रणे निशेषा, ्रमुख्यताए अनिष्ठ भावनी उत्पत्तिरूपे गणेला छे.। अने सामान्य ्वस्तुना त्रणे निक्षेपो, सामान्य भावने उत्पन्न करवामां मुख्यताए ाणेला छे. । अने जे उपादेय, अथवा परमोपादेय, वस्तुओ छे. तेना त्रणे निक्षेपो आपणी आपणी योग्यना प्रमाणे. तेज प्रमाणे, अध्यात्मिक परिणामोनी उप्तत्ति करवामां, मुख्यताए कारण रहेप गणेला छे.। परंतु कर्मनी विचित्रताथी विचित्र परिणाम थाय, तेतुं कांइ कोइथी कहीसकात नथी । वास्ते अमी तीर्थंकरोना भक्तो तो, तेमणी स्मृतिने कराववावाला, तेमणा त्रण निश्लोपोने, परमो पादेयमानी, शक्ति प्रमाणे भक्ति करीने अमारा जन्म, अने जीवितन्यनुं, साफल्प पणुंज मानीये छीए. वास्ते आ विषयमां, कोइ प्रकारथी पण, विचक्षण जैन धर्मना पुरुषोने, विशेष विचार करवानी जरुरज पडे तेम अने जे धर्मथी अष्ट थड़, विजा विचारमां उत्तरी पडी, उलट पालट करे छे, ते तो आप नष्टताने पाप्त थयेला, जैन धर्मनो नाज्ञ करवाबालाज जन्मेला ले.। एम विचार करता स्पष्टपणे समजाह आवशे. ॥

आ अमारा ढ्ंढको, जैनी नाम धरावी, केवल बीतरागनाज वैरी थड़ने, १ मुखर्थी वोले छे ते कांड़ जुदुज । अने २ करे छे ते पण कांड़ जुदुंज. । अने लोकोने ३ बतावे छे ते पण कांड़ जुदुंज ॥

जुवो प्रथम वोले छे तेनो ढंग, १ अमो बत्रीश मानीये छीये, एम कहीने जैनना बीजा सेंकडो ग्रंथोनी बातां लड़ने, बत्रीश सूत्रनी छे एवो लोकोने भास करावत्रो, ज्यारे एछवा वालो मले त्यारे, कही देवुं जे मलती मलती मान लेके। आतो तेमणो बोलवानो ढंग । २ किया करवा बाला पुरुषादिकना पूर्ण अध्यात्मिक परिणाम- रूप भावनिक्षेपने तो ज्ञानी जाणे, पण, त्रण निक्षेपोना विषय सुधीने पण नही प्राप्त थयेळी, एवी क्रियाओं करवा वाळाना, मोटा मोटा खरडाओं नांधीने, कंकोत्तरिओधी सिद्धाइ प्रगट करवी, अने तेज त्रण निक्षेपोना विषयने निर्धिक कहेवा, आतो तेमना कर्त्तव्यपणानों ढंग. उदाइरण संवत् १९६३ अमारावतीमां सम्यक्त्वश्च्योद्धा-रनी बावतमां, जूटी तकरार्थी पाछळ पडेळा, ढूंढक कुंदनमळ साधुए, चतुर्मासना कर्त्तव्योनी, बाहार पाडेळी इयादि, नींचे मुजव.

		भायामें	. तथा	. बाया	में. त	पश्या.		
दयाः पोसाः १ ४२५ ७२५			छुटक उपवास• २२५			ा तेला ३१	चोला. ११	
पांच. २५	31	अठाइ. न २		उ. तेरा. १ १			तपश्याकी पंचरंगीः १	
द्याकी पं- चरंगीः १		अठपुरुीया तप [्] १		तेलीया तपः १		कंकण तपः १	सुख तप. १	
छोटी टीकी ब तपः १					ते ३	गंबिल. १२५	संभर. १२५	
स्रंधः पक्षी प्रतिक्रमण १५ कारीसमायाः २					छमछरी प्रतिक्रणराठे काकीसमाया २५००००			

आवी रीते कोई, हाथ हाथनी लांबी ने लच, कंकोत्तरीयो, घ-णेक ठेकाणेथी, ढूंढक साधुओ कढावीने, आपणी सिद्धाई जणावे छे, पण ते करणी त्रण निक्षेपना विषय शुधीनी क्रियामां पण भेली सकवामां मुसकेली पडे तेम छे, आनो विचार आवश्यकना चार निक्षेपोना पाठनी साथे, मेळवीने विचार करवावाला विचक्षण पुरु-षने, सहजपणे समजाइ आवशे

आ कंकोत्तरी, लखीन बताववानुं प्रयोजन एटलुंज हतुं के, जेटली बाह्य कियाओं छे, ते बधी त्रण निक्षेपना विषयथी, उपरांतनी छेज नहीं. । अने ए सर्व बाह्य कियाओंने भाव निक्षेपना कारण रूपे मानेली छे, तेथी त्रण निक्षेपना विषय रूपनी कियाओं, निर्धक, अने उपयोग विनानी नथीं, आतो गुरुह्मान विनानी हुं- हनी पार्वतीने, अने हुंदक वाडीलालने, केवल मूदता माप्त थयेली छे. । तथी बधु विपरीते विपरीत जोधु छे। आ अनुयोगनो विषय, महा गहन छे, अने गणधर महाराजाओंनी महा गंभीर दृष्टिथी लखायेलो महा गंभीर छे, अने ए सूत्र जैनना सर्व तत्त्वना विषयतुं सूचनारूपे मुळ कारण होवाथी मुळ सूत्र रूपे मानेलुं छे, वास्ते मोहने प्राप्त न थतां, परंपराना विचक्षण पुरुषोनी पासेथीं, ज्ञान मेळवीने अद्वेत आनंद सागरमां गरकाव थवा जेवुं छे. । हुं क्यां सुधी लखीश. इत्यलं विस्तरेण.

॥ इति श्री मद्विजयानंद सूरीश्वर छघु शिष्येनाऽमर मुनिना जैनी क्रिया संबंधि निक्षेप विचारः संकल्ठितः ॥ ।। ढूंढके, अगडं बगडं रूपे लखेलुं, सात नयोनुं स्वरूप ॥

|| पृष्ट. ७६ मां-१ समद्रष्टि जीवने सिद्ध मानवो | अथवा चौद्मा गुणस्थाने वर्तता साधने संसारी कहेवो | २ श्रावक द्यालु होय ए सिद्धांत उपरथी, कोइ स्त्रीस्तीमां जरा द्या जोइने, तेने श्रावक कहे | ३ लुगईं वणवा मांडयुं हजी एक तार नांख्यो तेने लुगईं वण्युं कहे. | एवीज रीते ४ लुगईं वणाइ रहेवा आव्युं होय, मात्र एकज तार को हो य तेने लुगईं वण्युं नथी | एम आ चारे स्कारमां नेगम नयवाला माणसनी मान्यता होय छे ||

अभां अमारो विचार—आ चारे प्रकारमां, नेगमनय वाला माणसनी मान्यता छे, एम अमारा ढूंढक भाइये लखीने बताव्युं. एण, ढुंकमां पुछवानुं एट्ंज छे के, एक नेगमनय, अने माणस एण एक, विषय वे चार, तेमां पण ववे प्रकार छे, त्यारे ए विषयमां, तमारी मान्यतानां समावेश, पहेला प्रकारमां करवा के, बीजा प्रकारमां. 1 जो बीजा प्रकारमां तमारी मान्यतानां समावेश करवा जइये तो, स्त्रीरनीने श्रावक जाणीने तेनी साथे वधो व्यवहार करवानां प्रसंग नडे तेम छे. । वास्ते आ नेगमनयनी मान्यताना लेखमां पण विचार करवा जेवुं छे ।। इति प्रथम नेगमनयन्।।

२ संग्रहनय-१ दश जण सामायिक करता होय तेने, एकज सामायिक कहे. । अने २ घणा जणाना रूपेयानी, दान-शाला होय पण, एकज दातार छे एम कहे. ॥

विचार—आ विषयमां अमारा ढूंढक भाइ शुं ! सामायिक-पणुं माने छे के सामायिक रहितपणुं, अने ते एकपणे के, अनेक-पणे, तेतुं वाचक वर्गे विचारी जोवुं-एज प्रमाणे दातारोमां पण विचारी जोवुं !! | ३ ठयवहारनय-पृष्ट. ७७ थी. 'नैगम ' अने 'व्यव-हार ' नयमां भित्रता एटलीज छे के, नैगमनी दृष्टिवालो, पथरणं जोइने कहे के सामायिकवालो पुरुष छे. । अने व्यवहारनी दृष्टि-वालो, सामायिकना पाठनो उचार सांभले त्यारेज कहे. । बने वाह्यचेष्टा उपरथीज विचार बांधे छे । पण नैगमबाला करतां, व्यवहार नयवालो, व्यारे खात्री करे छे. ।।

विचार—व्यवहार नयवालो माणस, पाठमा उचारणथी सामायिकपणानी वधारे खात्री करे छे पण, अमारा दृंढकभाइनी खात्री, कया प्रकारमां थइ, ते कांइ समजायुं नहि!॥

।। ४ रूजु सूत्रनय-पृष्ट. ७८ थी. कोइ माणस सामायिक-मां होय पण, तेनुं मन वेपारमां दोडतुं होय तो, रूजु सूत्रनयवाली कहे के, अमुक माणस वेपारमां छे. ॥

विचार—आ अमारा ढूंढकभाइये, वेपारी मान्यो के, सामा-यिकवालो मान्यो ! तेनो विचार पण साथे करवोज जोइये ॥

॥ ५-६-७ " शब्दनय " " समभिरूढनय " अने " एवंभूतनय " ॥

।। ए त्रण नयवाला माणस, नाम, द्रव्य, अने स्थापना, निक्षे-पने, त्र्यवृष्यु (अवस्तु) माने छे ।।

विचार—शब्दादिक त्रण नयोवाला,त्रण निक्षेपने, अवस्तु माने छे, ते तो प्रगटपणे तमारुं लखेलुं प्रसंग विनानुं समजायुं । परंतु १ समद्रष्टिनो सिद्धः। २ चौदमा गुणस्थानवालाने संसारीः,। ३ स्त्रीस्तीने श्रावकः, । ४ एक तारना वणाटने लुगईं । अने मात्र एक ग तार ओखो

होय तो लुगडुं नही,। एवं जे तमोए नैगम नयनी मान्यतामां, जणाव्युं हतुं, ते विषयोने, आ शब्दादिक त्रण नयो हुं कहेवाने मागे छे !। वस्तुपणे के, अवस्तुपणे, ते तो कांइ छखी बताव्युं नहीः ॥ तेमज नगम नय, अने व्यवहार नय वालानी, मान्यता वाला सामायिकतं, अही वस्तुपणुं थयुं के, अवस्तुपणुं, तेनुं पण कांइ समजायुं नही. तेमज संग्रह नयवाळानी, मान्यतामां, जे दश सामायिकतुं एक सा-मायिक,। अने घणा दातारनो एक दातार हतो. । ते आ त्रण नयोना विषयमां, सामायिक वालो, अने ते दातारो, वस्तुरूपे रह्या के, सर्वथा प्रकारथी उडी गया, ते पण कांइ समजायुं नहीं । अने ऋजुसूत्र नयनी मान्यतामां,सामायिक वालो वेपारी हतो, ते हुं ! आ त्रण नयोनी मान्यतामां, वेपारी रह्यो के,सामायिक वालो थयो,अथवा वस्तुरूपे रह्यो के,अवस्तु रूपने। थइ गयो. ते विषये तमोए कांइ पण लखीने न बताव्युं । अने लागलाज विना प्रसंगे त्रण निक्षेपोने खो-सी घाली, वचमां उंट उधुं करी मुक्युं, ए कया प्रकारनो तमारो लेख !। अने नयोना विषयनी, कया प्रकारनी तमारी समज 📒 अने नयोनी मान्यतामां कया विषयने पकडीने व्याख्या करीने ब-ताबी ! अने तमारा ढुंढकोनी सिद्धि एमां कया प्रकारनी थड़ ! । एमांनुं कांइ पण न जणावतां, आगे १ सभामां होय तो १ इंद्र, २ बाबु जीतवामां होय तो २ पुरंदर, ३ इंद्राणी साथे होय तो श्चीपतिना ठेकाणे, शुचीपति लखी, शब्द तरफना लक्ष वाली ५ शब्दनय छे एम पृष्ट. ७९ मां लखीने वताव्युं. आ विचित्र प्रकारनी मान्यता वालो लेख पण, पाठक वर्गने विचारवा जेवो छे. ।।

॥ ६ समिम रूढ—गुण, अने लिंग, जोइने वात करे. । जैमके-साडी, अंग वस्त्र, कपडुं, साडलो, ए नाम एकज चीजनां छे, स्त्रीना काममां आवे छे, स्त्री छिंग छे, ए कारणथी साडी कहे, प-रंतु वस्त्रके साडलो न कहे ॥

| विचार—आमां विचारवातुं, आ छट्टी नये, गुण लिंगने ह्युं जोयुं ? । अने प्रथमनी पांच नयोनी साथे, कयो संबंध घराबी, कया विषयनी व्याख्या करीने बतावी । अने अमारा दृंढकनी मा-न्यता, एमां कया प्रकारनी थयेली समजवी ॥

॥ ७ एवं भूत नय—कार्यना उपयोग तरफज दृष्टि राखे छे, जेमके-दाणा जोखनारो माणस, लाभोजी, वेयोजी, त्रणोजी, ए बब्दोने पकडी राखे छे, पण दाणाके, त्राजवाने, पकडी राखता नथी। । एने तो धारणतुंज काम छे ॥

। विचार—आ सातमी नय, शब्दोन पकडी राखे छे, तेज प्रमाणे शब्दनय पण, शब्दोना तरफज छक्ष राखवावाळी छे, तेमां, अने आ सातमी नयमां, विशेष शुं! अने अमारा ढ्ंढकोनी आमां मान्यता शुं। तेनो विचार पण कांइ जणाव्यो नयी।।।

ए प्रथम प्रकारथी अमारा ढूंढकनी नयो विषयनी मान्यता ॥

।। इवे अमो, ढूंढके ज्ञान उपर उतारीने बतावेली जे नयो छे तेनो विचार करीने बतावीये छीयेः ।।

॥ जूबो. पृष्ट. ८४ थी ते ८६ तक-पृ. ८४। ओ, ५ थी-नै-गम नय प्रमाणे ज्ञान-विचारा गामडीआओ, नवतत्त्व-छकायना बोल, के, एकाद थोकडो पाठे करनार साधुने, के, एकाद अंग्रेजी होवाथी, अल्प ज्ञाने ज्ञानी कहे छे. । तेओ अल्प बुद्धिना होवाथी, अल्प ज्ञानेने ज्ञान माने छे ।।

शारा हुंदको शुं। अज्ञानी कहे छे के, ज्ञानी, ते एक खास विचारवा जेवुं छे.। अने अंग्रेजी चोपडीतुं ज्ञान छे, तेनुं नाम तो विज्ञान छे,। कारण ए छे के, जे जे कलाओ विषयिक झान छे, तेनुं नाम शा-सकारोए विज्ञान राखेलुं छे.। अने मोक्षना माट जे कांइ ज्ञान म-ळववुं, तेनुं नाम ज्ञान कहेलुं छे.। ज्ञान हैमी कोश-" मोच्चो-पायोयोगो ज्ञानं " मोक्षना उपाय माटे योग छे ते ज्ञान छे.। फरी जुवो अमरकोश—" मोच्चे धी र्ज्ञान मन्यत्र विज्ञानं शिल्प शास्त्रयोः" अर्थः-मोक्षनी बुद्धिथी भणवुं ते ज्ञान छे, अने शिल्प शास्त्रादिकना ज्ञाननी बुद्धिथी भणवुं, तेनुं नाम विज्ञान छे, वास्ते विचार करवानो ए छे के-मोक्षनी इल्लावाला साधुनुं, जे कांइ ज्ञान छे ते ज्ञानज छे॥

।। २ संग्रहनय प्रमागो ज्ञान—पांच प्रकारनं ज्ञान छे तोपण, समुचये एकज ज्ञान कहे ते ।।

विचार-आमां अमारा ढूंढकनी मान्यता कया प्रकारनी थइ॥

॥ ३ व्यवहारनय प्रमारो ज्ञान—बाह्यक्षान जोइने ज्ञानी कहे ते, कोइ डोळ घालुसाधु, व्याख्यान वांचे तेमां, पुराण, कुरा-नना, अशुद्ध अने असंबंध फकरा, तथा नाटकना रागोटा सांभळे त्यारे, व्यवहारनी दृष्टिवाळी प्रपटा तेने ज्ञानी माने.॥

विचार-पाठक वर्ग । नयोनो विचार छे ते, सम्यक् झनःजो

वीतराग भाषित छं, तेगांज करी सकाय छे. । बाकी विषरीत ज्ञान होय ते तो, नयाभास रूपे होय छे, ते नयोना छेखामांज नयी गणेलुं, छतां आ इंडके केटलुं बधुं उंधुं वेतर्यु छे. ते आगळ प्रसंगे बतावीशुं. ॥

| | | | | त्रमुजु सूत्रनय प्रमागो ज्ञान—ज्ञान पांच प्रकारनुं छे, जे पैकी छद्मस्थने चार ज्ञान होय, परंतु ऋजु सूत्रनयवालो माणस, वात करती वखते जे ज्ञान तेनी पासेथी सांभळे ते, एकज ज्ञान तेनामां छे एम कहे. ||

||विचार-ऋजु सूत्रनयवालो, चार ज्ञानमांतुं एकज कहे. ते शुं! सम्यक् ज्ञान कहे के मिथ्याज्ञान कहे, अने आ ऋजु सूत्रना मतमां, तमारा ढूंढकोनी मान्यता कया प्रकारनी थई। ॥

॥ ५ शब्दनय प्रमागो ज्ञान-सम्यक्त्व सहित (९) नवतत्त्वनुं ज्ञान ते.॥

॥ ६ समभिरूढनय प्रमागो ज्ञान—सम्यक्त्व सहित ज्ञान होय, अने परगुणथी विरक्तपणुं होय, तेवाज ज्ञानने आ नयवालो ज्ञान माने. ॥

७ एवं भूतनय प्रमाणे ज्ञान—केवल ज्ञाननेत्र ज्ञान कहेवायः ॥

पाठक वर्ग ! मारा तरफथी करेली, वखत वखतनी सू-चनाओथी, आप लोको समजी गया तो हशोज, अने तेथी योग्याऽ-योग्यनो विचार पण करीज लेशो. । तोपण वे शब्दो फरीथी लखीने सूचना तरीके जणावुं छुं. ॥ ते ए छे के आ इंडके, पाछळथी ज्ञान उपर सात नयो उता-रीने एम छल्युं जे-सम्यक्त्व सहित नव तत्वनुं ज्ञान ते, " शब्दनय प्रमाणे " ज्ञानः । अने सम्यक्त्व सहित विरक्तनुं ज्ञान ते, " सम-भिरूढ नय प्रमाणे " ज्ञानः । अने केवलज्ञान ते, " एवं भूतनय प्रमाणे " ज्ञानः ॥

आ लेखथी ढूंढके एम मिद्ध करीने बताव्युं के, जैनोने त्रण नयोज प्रमाण रूपे होय. । केमके सम्यक्त्व सहित नव तत्वना ज्ञाननी सरुवात, शब्दनयथी करीने बतावी छे. । तेथी प्रथमनी चार नयो, निर्श्वक, अने उपयोग विनानी, ठराववा प्रयत्न कर्यो छे. । परंतु पोतानाज लेखमां परस्परनो विचार, बीलकुल कर्यो नथी. । अने केवल मृहपणा धारण करी स्वछंदपणे कलम चलावी छे. ।

जूबो-पथम नैगम नयनी मान्यतामां लख्युं हतुं जे-समदृष्टिने, सिद्ध मानवोः । अने चौदमा गुणस्थाने वर्तता सायुने, संसारी कहेवोः । अने नगम नय प्रमाणे ज्ञानमां नव तत्व-छकायना बोल के, एकाद थोकडो, पाठे करनार सायुने, गामडीआओ ज्ञानी कहे छे. । एम नेगम नयनी मान्यतामां लखीने बताव्युं हतुं ।। तो अव विचार करो के-समदृष्टि, अने चैदमा गुणस्थाने वर्ततो सायु के जे साक्षात् सिद्ध स्वरूपी जीव, ते कांइ उपयोग वाला नथी के ! अने, नव तत्त्वादिकनो पाठी सायु, शुं ! अज्ञानी थइ गया के ! आते अमारा ढूंढकनो, नयोना विषयनो लेख, कया प्रकारनो थयो समजनवो ! अने अमारे पण विवेचन कया प्रकारथी करीने वताववुं !॥

आ ढूंढकनी नेगम नयनी मान्यतो विचार, पाठक वर्गनेज, करवातुं सोपुं छुं. ॥ २ संग्रहनय-पथमनी व्याख्यामां लख्यं हतुं जे-दन्न सामा-यिकने, एक सामायिक कहे. । अने घणा दातारने, एकज दातार कहे. । अने ज्ञाननी व्याख्यामां पांच प्रकारना ज्ञानने, एकज ज्ञान मान्युं हतुं. ।।

विचार—ए छे के—आ बीजी नयने, उपयोग विनानी माने तो, नतो एके सामायिक उपयोग वाळु रहे, तेमन दातार पण अदातार, तेमज पांचे ज्ञानने, एक ज्ञान करीने मान्धुं हतुं, तेटला पुरतु पण रहि शकतुं नथी। । तो पछी आ ढ्ढकना लेखथी, कया मकारना तत्वने, अमारे ग्रहण करवो ! ॥

आ संब्रहनयनी, मान्यतानो विचार पण, वाचकवर्गेज करी लेवो ।।

३ ठयवहारनय—नैगमनय वालो-पथरण जोइने, सामायिक वालो प्रस्व कहे । अने व्यवहारनय वालो, सामायिकना पाठनो उ-च्चार सांभळीने, सामायिक वालो कहे. । नैगमनय करतां व्यवहार-नय वालो वधारे खात्री करीने आपे छे. ।

अने ज्ञाननी मान्यतामां-बाह्य ज्ञान जोइन ज्ञानी कहे ते-कोइ डोल घालु साधु व्याख्यान वांचे तेमां, पुराण, कुरानना, अशुद्ध अने अमंबद्ध फकरा, तथा नाटकना रागोटा सांभळे त्यारे व्यवहार-नयनी दृष्टि वाली प्रषदा तेने ज्ञानी माने छे.॥

विचार—पथमनी व्याख्यामां, सामायिकना पाठनो उ-च्चारण करवा वालानी मान्यता बतावी हती. । आ बीजी व्या-ख्यामां पुराण, कुरानना पाठ वालो साधु बताव्यो, आ व्याख्यामां अमारे कया प्रकारनो विचार करवो ?॥ सामायिक वालाने, अने ते साधुने, निरर्थक प्रयास वाला समजवा के एकादने उपयोग बालो समजवो ॥

आ विषयनो विचार पण पाठकवर्गज करी लेशे. ॥

श त्रमृजुसूत्रनय—कोइ माणस, सामायिकमां होय पण,
 तेनुं मन वेपारमां दोडतुं होय तो, तेने वेपारी कहे. ॥

अने ज्ञाननी मान्यतामां-ज्ञान पांच प्रकारतुं छे, जे पैकी छट्-मस्थने चार ज्ञान होय, परंतु ऋजुसूत्रनय वालो माणस, वात करती वखते, जे ज्ञान तेनी पासेथी सांभळे, ते एकज ज्ञान तेनामां छे एम कहे. ॥

॥ विचार-पथमना लेखमं, सामायिकवालाने, वेपारी ठ-रावी, निर्धिक रूपे ठराव्योः । परंतु आ बीजा लेखथी विचार क-रवानो ए छे के-ते चार ज्ञानी साधुनी पासेथी, कयुं ज्ञान सांभ-लीने, एक ज्ञान छे, एम कहुं. अने ते चार ज्ञान सार्थकके निर्धिक।

।। आ विषयनो विचार करवानुं पण, वाचकवर्गनेज सोंपी दुउछुं. ।।

५ शब्द नय—इंद्र, पुरंदर, अने शचीपति, प्रथमनी मान्यतामां-अने बीजी ज्ञाननी मान्यतामां-सम्यक्त्व सहित (९) नवतत्त्वनुं ज्ञान ते ।।

शि विचार—वीजी ज्ञाननी मान्यतामां तो सम्यक्त्व सहित नव तत्त्वनुं ज्ञान ते तो समजायुं. । परंतु पहली व्याख्याना इंद्रादिक, शब्द मात्रनुं ज्ञान कराववावाला छे, तेनो विचार इंद्रके शुं ? कर्यों, अने इंद्रक्रनी मान्यता कया प्रकारनी थई ? ॥ ॥६ समभिरूढनय—साडी, कपडु, अंगवस्तादिक, स्त्रीना कामादिकनां, स्त्री लिंग छे.। तेथी साडी कहे, परंतु वस्त्रके, साडलो, न कहे.। अने बीजी ज्ञाननी व्याख्यामां—सम्यक्त्वसहित ज्ञान होय, अने परगुणथी विरक्तपणुं होय, तेवा ज्ञानने, ज्ञान माने ॥

॥ विचार—वीजी मान्यतामां, परगुणथी विरक्तपगुं एटले हुं ? गौतम स्वामी जेवाके, कोइ बीजा जेवा । केमके गौतम स्वामी पण, पथमनी अवस्थामां पररूप भगवानना गुणथी, विरक्त न थया हता. । वास्ते आ पण एक विचारवा जेवुं छे. । अने पेहली व्याख्यामां—साडी कहे, अने वस्त्रादिक न कहे, तेमां ढूंढकनी मान्यता कया प्रकारनी थइ । अने बन्ने व्याख्यानोनो मेल सो थयो ?॥

| ७ एवं भूतनय—इाणा जोखनारो माणत, लाभोजी, वेयोजी, त्रणोजी, शब्दोने पकडी राखे छे, पण दाणाने के त्राजवाने पकडतो नथी। ॥ अने बीजी ज्ञाननी व्याख्यागां—केवल ज्ञाननेज ज्ञान केहवाय। ॥

| विचार—शब्दोने पकडवातुं काम, शब्दनयतुं हतुं, ते एवं भूतनयमां, क्यांथी आवी गयुं। अने आ नयवालो, केवल ज्ञानने, 'ज्ञान 'कहे.। एवो लेख, ढूंढकोना वापदादा, कये ठेकाणे लखी गया छे.। तेनो पण विचार करवो नोइये.।।

॥ पाठकवर्ग । हुं हवे वधारे लखवानुं वंध करी, एटलुंज कहुं हुं के, अमारा ढूंढकोए, ज्यारथी परंपराना गुरुने छोडचा छे,त्यारथी
तेओने न तो "सम्यत्क " ना विषयनी खबर छे । न तो जैनोना "प्रमागा " ना विषयनुं भान छे । न तो "निच्चेषो"
ना विषयनुं ज्ञान छे न तो "द्रह्य, चेत्र, काल, अने भाव"
ना स्वरूपने जाणे छे । अने आ " नयोना " विषयनुं जे कांइ

ज्ञान थयेछुं छे तेनो पण विचार तमो करीने जुवो. तेथी अमोने पण संतोषज छे ॥

।। आ अमारा इंडको-केटलाएक बोल विचारना, थोकडा-ओनो, पोपटीओ पाठ, कंठे करी छे छे । अने पछी दुहा, छंदो, सवैयाः कांइ पुरान, कुराण, आदिना फकराओ, तेमज भोजा भगतनां भजनां, कोइ 'ज्ञानोवा ', कोइ जगोपर 'तुकोवा '। आदिना उपर चोटीया फकराओथी, अजान वर्गने आंजी नाखी, एवा तो गर्वमां गरकाव थइ जाय छे के जाणे, सर्व पंडितोना शि-रोमणि तो अमोज छीये. । एटले पछी न तो कोइ गुरुने समजे छे, अने न तो कोइ आगे जैन मार्गना तत्त्वने जुवे छे, मात्र तेवा बे चार मुढे मृढ भेगा थइ, जो मनमां आवे सोइ बके छे. । अने आपणे आप, सर्वज्ञना दीकरा बनीने, बधाए आचार्योने, दुषित करीने, जो मनमां आवे सोह लखी मारे छे. । तो पछी आवा महा मृहोने, जैन मार्गना महा गंभीर तत्त्वोना विषयतं ज्ञान, ते कये रस्तेथी प्राप्त थरो ! ते विषये अमो कांइ पण विरोप कळी शकता नथी.। परंत विचक्षण पुरुषो प्रति, अमारी छेवटनी एटलीज प्रार्थना छे के. निकृष्टकालना प्रभावथी, जैन मार्गना, महा गंभीर तत्त्व विषयोतं, संपूर्ण ज्ञान थवं ते तो महा दुस्कर छे, तोपण ते गंभीर तन्त्रोना. दिशा मात्रना अवलोकनने वास्ते, कोइ परंपराना सदगुरुनो आश्रय लइ, अने विनय सहित तत्वोने ग्रहण करी, अने ते तत्वोना विचारनी श्रेणीमां उतरी, अ।पणा जन्म जीवितव्यपणानान, सा-फल्यपणुं करवा चुकवं नहिः । एटछं कहीने हुं मारा लेखनी समाप्ति करुछं। ॥

।। इति श्री मद्धि जयानंद सूरीश्वर छछ शिष्येनाऽमरमुनिना दृंदक मान्यता विषयिक सप्त नय विचारः संकछितः ॥

।। जिन प्रतिमा उपर स्तवन चोपाइनी देशीमां॥

जिनवरहां नहीं रंग, तेहनों कदी न की जे संग. १ । जेहने नहीं बहाला बीतराग, ते मुक्तिनों न लहे ताग; । जेहने भगवंत हां नहीं भाव, तेहनी कुण सांभलशे राव. २ ॥ जेहने मितमाशु नहीं भेम तेहनुं मुखडुं जोइये केम, जेहने मितमाशुं नहीं प्रीत; तेतो पामे निहं समितित. ३ ॥ जेहने मितमाशुं लेही प्रीत; तेतो पामे निहं समितित. ३ ॥ जेहने मितमा हां छे वेर तेहनी कहो शी थाशे पेर,। जेहने जिन मितमा नहीं पूज्य, आगम बोले तेह अबूज्य. । ४ । नाम स्थापना द्रव्य ने भाव, प्रभुने पूजों सही मस्ताव; । जे नर पूजे जिननों विंब, ते लहे अविचल पद अविलंब. । ५ । पूजा छे मितिनों पंथ, नित नित भाषे इम भगवंत, सिह एक नर कि विन। निरधार मितमा छे त्रिभुवनमां सार. ६ ॥ सतर अष्टाणुं आषाढी बीज, उज्ज्वल की छुं छे बोधवीज; इम कहे उद्यरतन उवज्जाय, प्रेमे पूजों प्रभुना पाय.॥ ७ ॥ इति जिन मितमा स्तवनं.

श्री संप्रतिराजानुं स्तवन ॥ राग त्राशावरी ॥

धन धन संप्रति साचो राजा, जेणे कीधां उत्तम कामरे; । सवालाख प्रासाद करावी, कलियुग राष्ट्युं नामरे धन १। वीर संवत्सर संवत् बीजे, तेरोत्तरे रिववार रे; । माहा शुद्धि आठमी बिंब भरावी, सफल कियो अवताररे धन २॥ श्री पद्म प्रभ मूरति थापी, सकल तीरथ शणगाररे; । कलियुग कल्पतरु ए

१ एक नरकतुं स्थान छोडीने बाकी बीजी बधी जगीपर शास्वताऽ शास्वता जिन विंव बिराजमान छे अने तेनो पाठ पण सिद्धांतीमां जगी जगो पर छे.

प्रगत्यों, वंछित फल दाताररे. धन. ३॥ उपासरा व हजार कराव्या, दानशाला शय सातरे; । धर्म नणा आधार आरोपी, त्रिजग हुओ विख्यातरे. धन. ४॥ सवालाख प्राप्ताद कराव्या, छत्रीश सहस्स उद्धाररे; । सवा कोडी संख्याये प्रतिमा, धातु पंचाणुं हजाररे. धन. ५॥ एक प्राप्ताद नवो नीत नीपजे, तो मुख शुद्धिज होयरे; । एह अभिग्रह संपति कीधो, उत्तम करणी जोपरे. धन. ६॥ आर्य सुहस्ति गुरु उपदेशे, श्रावकनो आचाररे; । समिकत मूल बार वत पाली, कीधो जग उपगाररे. धन. ७॥ जिनशासन उद्योत करीने, पाली त्रण खंड राजरे; । ए संसार असार जाणीने, साध्यां आतम काजरे. धन. ॥ ८॥ गंगाणीनयरीमां प्रगट्या, श्री पश्चम देव रे; । विश्वध कानजी शिष्य कनकने. देज्यो तुम प्रय सेवरे. धन. ॥ ९॥

इति संप्रति राजानुं स्तवन संपूर्ण. ॥

॥ धर्मनो दखाजोः प्रकरण ५ क्रिं ॥ सम्यत्त्कना ६७ बोल. ॥

॥ आ ६७ बोलना विचारमां पण, स्थूल विषयोनीज विप-रीतता जणावीशुं, परंतु सूक्ष्मविषयोनी विपरीततानो विचार करीशुं नहीं ॥

॥ वाडीलाल. पृष्ट. ९२ थी. ॥ दश विनय. ॥ समार्कती जीव-१ अरिहंत, । २ सिद्ध, । ३ आचार्य, । ४ उपाध्याय, । ५ स्थिवर, । ६ कुल अथवा एक गुरुना किष्यो, । ७ गण अथवा घणा आचार्योना शिष्यो, । ८ संघ, । ९ साधर्मी, । १० किया-वंत, । ए दशनो विनय करे. ॥

विनय चार रीते थाय । बहु भक्तिभाव वताववाथी, । कीर्सि करवाथी, । मानदेवाथी, । अने त्रीश प्रकारनी आशातना टाळवाथी ।।

विचार—आ विषयमां वाडीलाल शाहने अमी एटलुंज पुछीये छे के, दशनो विनय करवी, ते कया सिद्धांतथी, अथबा कया तमारा मान्य करेला प्रकरण ग्रंथथी लखी छो ? ते ग्रंथनुं नाम, अने तेना कर्ती आचार्यनुं, नाम पण मगट करी बतावो ? कारण विचार करतां अमीने एम मालम पडे छे के, आ ६७ बोलहू-पनुं आखुं प्रकरण, तमोए मूर्तिपूजकोना ग्रंथथी चोरी लड़ने, उलट पालटपणे, मन कल्पित जूदी कल्पनाओं करीने गोठवी दीधी छे, तथी गुरु परंपरा गतना ज्ञानथी, विपरीतपणेज तमारो लेख थयेलो छे, अने तेंथीज अमो कही शकीये छीये के, तमोए मूर्त्तिपूजकोना ग्रंथोनी चोरी करीनेज छेख छखेछो छे.

प्रथम तीसरा सम्यक्त नामना प्रकरणमां पण, जे तमोए लख लख्यो हतो ते पण, मूर्तिपूजकोना ग्रंथनी चोरी करीनेज लख्यो हतो, अने आपणे आप शाहुकारनुं होल धारण करी, मूर्तिपूजकोने चोर ठराववा प्रयत्न कर्यो हतो, परंतु चोरोनुं जुठ क्यां तक चालशे के, ज्यां सुधी न्याय सामो आच्यो नथी त्यां तक, परंतु आगल वधारे चालो शकशे नहीज? ज्यारथी तमोए उपोद्धातमां, वीतरागनी नोंध, कहीने सिद्धांतनुं नाम आपतां भींतनी आड पकडी छे, त्यारथी अमो तो समजी गया छे के, आ ढूंढकपण एक जैन धर्मना तत्वोनो पाको गंठी छोडो छे, परंतु जैन धमना तत्वोने ग्रहण करी तेनो सार लेवा वालो नथी, केमके जे पुरुष सार लेवा वालो होय ते तो, ग्रंथना सार मात्रनेज ग्रहण करे, परंतु गुरु परंपरा गतना तत्वोने उलट पालटपणे कोइ दहाडो पण करे नहीं ? एम अमारु मानवुं छे, तथीज तत्वोना उलट पालटपणे करवा वालाओने गंठी छोडा-नीज उपमा दहुये छीये। ।।

हवे अही, 'दशनो 'विनय करवानो जे गुरु परंपराथी, हजा-रो आचार्योना मतथी पुस्तको उपर चढी चुक्यो छे तेनां नाम । नीचे लखीने बतावीओ छीये.।।

१ अरिहंतनो, । २ सिद्धनो, । ३ चैत्यनो, अर्थात् जिन प्रति-मानो. । ४ श्रुतनो, अर्थात् सिद्धांतोनो. । ५ धर्मनो क्षमा आदि-दश प्रकारने धारण करवा वालानो.

६ साधु वर्गनो,। ७ आचार्यनो,। ८ उपाध्यायनो,। ९ प्रवचननो अर्थात् संघनो. । १० सम्यक्त्वनोः अथवा सम्यक्त्व वालानो पणः अही जूबो प्रथम प्रवच सारो द्धारनी गाथाः श्रिरहंत, सिद्ध, चेइय सुएय धम्मेय साहुवग्गे य॥ त्रायरिउववजाए सुयपवयगा दंसगोवावि.॥

अर्थ. १ अरिहंत,। २ सिद्ध,। ३ मतिमा,। ४ श्रुत,।५ धर्मी,।६ साधुवर्ग,।७ आचार्य, ८ उपाध्याय,।९ प्रवचन अ-र्थात् संघ,।१० सम्यक्त्व.॥

आवी रीते दशनो विनय करवानो, सम्यक्त्व सप्तति नामना ग्रंथमां, । तेमज आत्मप्रबोध नामना ग्रंथमां, । तेमज उपदेश पासाद विगरे ग्रंथोमां, प्रगटपणे लखेलो छे, । छतां तमो 'प्रतिमाना 'विन-यने ठेकाणे 'स्थिविर, लखोछो.। अने 'धर्मना ' विनयने ठेकाणे 'कुल, अथवा एकगुरुना शिष्यो लखी बतावोछो, । तेनुं कारण हुं! ते कांइ समजायुं नहीं, अगर, तमारा छख्यामुजब कोइ सिद्धां-तादिकमां पाठ होयतो तेनो छेख सिद्धांतना नाम साथे प्रगट करो ? परंतु स्वछंदपणाथी छता अर्थनो लोप करी, उलटेपालट लखोछो तेतो, गंहीछोडापणाज करेाछो, एम उघाडेछोगे केहवाथी अचकवा-ना नथी । अने तमोए जे, त्रीश प्रकारनी आशातनाओं टालवाथी विनय करवानुं छर्खाबताव्युं ते पण, कया हिसावथी छर्खीबताव्युं ? केमके जो गुरुनी आशातनाओ विशेषप्रकारथी टालवानुं कहेताहशो तो ते, तेत्रीश आशातनाओं छे,। अने प्रतिमानी विशेषप्रकारथी कहेताहशो तो ते ८४ पकारनी आञ्चातना, शास्त्रकारोए वतावेळी छे । तो पछी त्रीश आशातनाओनो संबंध कया पकारथी लखीब-ताव्यो ? तेपण बरोबर समजायुं नही ? ॥

॥ पुनः वाडीलाल, पृष्ट. ९३ मां, लखे छे के,॥

त्रणश्रुद्धि—समिकिती जीव होय ते, मन, वचन, काया, ए त्रण योगने श्रुद्ध प्रवत्तीवे. ॥ ॥ विचार—आलेख पण महाप्रकाथी निरपेक्ष थइ उल-टावीनाख्यो छे,केमके,मवचन सारो द्वारादिकमां,१ जिन,२ जिनमत, अने जिनमतना ३ साधु, ए त्रणज सार छे, एम चिंतववुं, तेने त्रण शुद्धि कहेली छे.। तथाच गाथा. मुत्तूणाजिणां मुत्तूणा जिणा-मयं जिणमयिठिएमोत्तुं संसार कंत्तवारे चिंतज्जंतंजगं सेसं ॥ २ ॥

|| ऋर्य-१ वीतराग देव, जीवादि तत्वरूप २ जिनमत, अने १ सुद्ध साधु, ए त्रणने मुकीने बीजुं बधु असार छे, एम चिंतवे तेने त्रण शुद्धि कहेली छे. ।। १ ।। एज प्रमाणे आत्म प्रबोध, तेमज सम्यक्त्व सप्ततिनामा ग्रंथमां पण, विस्तार सहित वर्णन करेलुं छे, । तो पछी अमारा दूंढकभाइ मन, वचन, काया, ने शुद्ध पवर्त्ताववा रूप, नबीन प्रकारनी त्रण शुद्धिनुं वर्णन, कया ग्रंथथी खोलीने लाव्या ? ते बताववुं जोइये. ।।

- ॥ वाडीलाल-पृष्ट, ९८ मांः ॥ पंच भूषाा. ॥
- ? जैनमार्ग अने धर्मनी भक्ति करे, ज्ञानादिनी भक्ति करे. ॥
- २ अरिहंत देव (वर्त्तमानकाले श्री महाविदेह क्षेत्रे) विचरे छे तेमनी भक्ति करे, अर्थात् मन-वचनथी तेमना गुणग्राम करे, अने कायाथी नमस्कार करेगी
 - ३ साधु, साध्वी, तथा साधमीनी योग्य भाक्तिकरे.॥
- ४ धर्मथी अजाण प्राणीने, अने षद्दर्शनना अनुयायीओने, धर्म समजावे, चार जण वेटा होय त्यां युक्तिथी धर्म संबंधी बात छेडे, अने सौने धर्मरागी बनावे. ॥

५ धर्म पामेलो माणस धर्मथी डगतो होय तेने ज्ञानवडे अने जरुर पडे तो द्रव्यादिकनी सहाय दइने धर्ममां स्थिर करे. ॥

विचार—अमारा ढूंढकभाइये, पांच प्रकारना भूषणने, तदन उल्टावीने, आपणीज चातुरीनी चादर पाथरी, अजाण वर्गने भ्र-ममां नाखबा उपाय कयों छे. ॥ परंतु शास्त्रकारोना ए मत नथी, जुवो प्रवचन सारो द्धारमं

तथाच गाथा,

जिगा सासगो कुसलया, पभावगा। ययगासेवगा। थिरया भत्तीय गुगा सम्मत्त दीवया उत्तमा पंच. ॥ १॥

॥ अर्थ—जिन शासनने विषे कुशलता, अनेक मकारथी वीजाने प्रतिबोधी जिनशासनने विषे दृढ करे. ॥ १ ॥

एज प्रमाणे आपणी कुश्चलताथी जिनशासननी प्रभावना करे, अर्थात् सर्व मतोथी उन्नत्वपणे मुकवा प्रयत्न करे. ॥ २ ॥ इवे त्रिजुं भूषण तीर्थ सेवा, गाथाकारे आयतन शब्दथी प्रकृण करेली छे, । तेना वे भेद—द्रव्यथी शत्रुं जयादिक तीर्थोना मंदिरोनी सेवा, । अने भावथी ज्ञान, दर्शन, चारित्रना धारक साधुनी सेवा, । अर्थात् स्थावर जंगम तीर्थनी सेवा, । ए वने प्रकारना तीर्थनी, सेवा, भक्ति, रक्षण, आदि करवाथी सम्यनत्वनी उज्जवलता वधे छे. ॥ ३ ॥

हवे ४ थुं भूषण 'स्थैर्य 'मथम आप, पोते, कोइनो डगाच्यो जैनधर्मथी डगे नही, तेमज बीजो कोइ जैनधर्मथी डगतो होय तेने पण टेको आपी धर्ममां स्थिर पणे करी लेवे. ॥ ४॥ हवे पंचमुं भूषण, भक्ति, पवचननो विनय वैयावच रूपथी करवी ते ।। ९ ॥

ए पांचे सम्यक्त्वने दीपाववावालां भूषणस्त्रपे छे.॥ तेनां नाम, १ जिनशासने कुशलता, । २ प्रभावना, । ३ तीर्थ सेवा, । ४ स्थैये, । ९ भक्ति, ।

आ पांच प्रकारना नामथी, पांच प्रकारनां भ्रुषण,सम्यक्त्व स-प्ताते नामना ग्रंथमां, तेमज आत्म प्रबोध विगरे ग्रंथोमां, सविस्तर-पणे वर्णन करीने बतावेलां होवा छतां, तेनां नाम विगरे उलटावी, अमारा इंढकोए,मुख्यत्वे जे त्रिजुं तीर्थ सेवारूप भूषण हतु,तेने,कहा-डी नाखीने, बधाए भूषणोनो अर्थ आपणी मतिं कल्पनाथी जोडी कहाडयो छे, तेथीज अमो एमने पाका गंठी छोडानी उपमा दइये छीए, अगर जो एमना मान्य करेला सिद्धांतादिकमां, एमना लख्या मुजब पांच भूषणनी अर्थ, लखेली होय तो ते सिद्धांतना पाठनी साथे, सिद्धांतनुं नाम पण प्रगट करीने वतावे ? अमो तेने शिरसा वंद्य करी मस्तक उपर चढावी लइशुं १ परंतु कोइ अर्द्ध दग्धना हाथनो लेख हशे तो तेने तो धिकारज आपवो पडशे ? केमके आ-जकालना जन्मेला अमारा दूंढको, ज्यारे पूर्वना महान् महान् आ-चार्योना गंभीर लेखोने, मान्यपणे राखता नथी तो पछी, तेमनी मृदतापणे आजकालना अल्पमतिथी लखायेला तेमना लेखनो, आ-दर केवी रीते धर्मज्ञ पुरुषो करशे ? कोइ दिनपण तेमना मृढपणाना लेखनो आदर थइ शके नहीं ? एम सर्व कोइने कबुलज करवुं पडशे ?

॥ ढूंढक. पृष्ट. १०६ थी-आठ प्रभावकनो अर्थ, सर्व आचा-र्योथी निरपेक्ष थइ, वधो उलटावीनाख्यो छे, अने ६ ठा. विद्यावान प्रभावकनी टीपमां नीचे लखे छे के, कोइ कहे छे के, विद्या एटले चमत्कारी विद्या, देव देवीने साधवानी विद्या, पण में तेनो समा-वेश चोथाप्रकारमां करी दीधेलो होवाथी, विद्या एटले विविधज्ञान, ए अर्थज मने वधारे पसंद छे.॥

॥ आ लेखथी विचार करबानो ए छे के, आ अमारा ढूंढक भाइए, ज्यारथी आ चोपडीमां होल हुलवानो शरु कर्यो हे, त्यार-थी आपणे आप जैनतीर्थना अधिपातितुं (अर्थात साक्षातपणे तीर्थ प्रवर्त्ताववाने जाणे तीर्थकरपणाना अवतारतुं) डोल धारण करी, गणधर महाजाओथी निरपेक्ष थइ, चार निक्षेपना विषयमां आपणा मनमां जे आव्युं ते लखीवाल्युं, अने २५ बोलना विषयमां पण गणधर महाराजाओथी विपंरीत थइ, महा दूषणोना विचार कर्या-विना, आपणीज मतिनो खीचडो भेगो करी जाहेरपणामां, वेंचबाने तैयार थयाः । अने सर्व पूर्वधरादि महापुरुषोथी निरपेक्ष थइ, त्रिजा प्रकरणमां सम्यवत्वना विषयने समज्याविना, अडद मगनो खीचडो भेगो करी, आपणे आप शाहुकारीपणानी पेढीने खोली, सफेद, पीला, अने दिशा, वस्त्रवालाओने, दीपक समाकतमां बतावी, शाहु-कारीपणु बतावी दीयुं.। आते कया प्रकारवाली अमारा ढूंढकोनी धिठाइ ? ते कांइ समजातु नथी ? अने वली आ आठमभावकना विषयमांतो, सर्व महापुरुषोथी निरपेक्ष थइ, प्रगटपणे लखीने बतावे छे के ।।

कोइ कहे छे विद्या एटले चमत्कारी विद्या, पण में तेनो समा-वेश चोथा प्रकारमां करी दीधेलो होवाथी, विद्या एटले विविध ज्ञान, ए अर्थज मने वधारे पसंद छे.।

आ लेखथी वाचक वर्गने विचारं करवानो ए छे के, कोइ कहे छे, एम लखीने सर्व महापुरुषोने छोडी दीयेला होवाथी, अर्थात् सर्व ग्रंथोना लेखथी विपरीत थइ, आपणे आप मति कल्पनानो अ- र्थ करेलो पसंद पडवानुं कहे छे, तो जो कोइ धर्मक पुरुष हुन्ने ते तो आवा स्वछंदपणाना अनुचित लेखोथी दूरज रहेनो, एम अमारी भलामण छे, केमके समुद्र जेवी गंभीर बुद्धि वाला महापुरुषोथी ल-खायला लेखोनो अनादर करी, आज कालना जन्मेला अल्पमित-ओ वालाए, स्वछंदपणे लेख लख्या होय, तेना उपर आदर करी, आपणा कल्याणनी इच्छा राखवी, ते कोइ दहाडो पण प्राप्त थइ शकवानी नथी, एम खासपणे विचार करवानो छे।।

वली ढूंढक-पृष्ट. ११० मां लखे छे के, ॥
समिकत विना, धर्म ए नामनोज संभव नथी, ॥
चेतन ते प्रीछ्यो नहि, शुं थयो व्रत धार । साल

विहुगा चेत्रमां, वृथा बनावी वाड । १ ॥

विचार—कोइ पण पुरुष आ लेखनो विचार करतां मने जरुर पुछशे के, आ लेखमां ते तमो शुं खोट काडीने बताववाना छो १ परंतु अमोए उपरनो लेख जे लखीने बताव्यो छे, ते पुष्टि करवा माटे लखीने बताव्यो छे, परंतु खोटो ठराववा, लखीने बताव्यो नथी। केमके आलेख उपरथी विचार करवानो ए छेके,। समिकत विना, धर्म ए नामनोजसंभव नथी।। एटलुं तो अमारा ढूंढक भाइयो पण जरुर मान्य राखी, लखीने पण बतावे छे, त्यारे ज्यारथी विचारवानुं ए छे के आ जैनधमनी प्रवित्त चाली आवे छे, त्यारथीज ते सम्यक्त्व, सर्व प्रकारना धर्मनी प्राप्ति करवामां, मुख्यपणे, पाया रूप छे, एम आपण सर्वने, अवश्य मानवुंज पडशे १ केमके ते सम्यक्त्व विना, बीजा एक पण आत्मिक धर्मनी प्राप्ति, यथा योग्यपणे थइ शकती नथी, तेथी बीजी अनेक प्रकारनी क्रियाओ करवा छतां पण, जो सम्यक्त्व पाप्त न थयुं होय तो, ते सर्व क्रियाओ, स्वार्थ सिद्धि विनानी गणाय १

वास्ते सम्यक्त छे तेज एक धर्मनो दरवाजो छे, अने तेनुंज वर्णन, अमारा ढूंढकभाइये, आपणी चोपडीमां सावस्तर पणे, सर्व आचा-र्योथी निरपेक्ष थइ, उलट पालट करी, आपणी मात कल्पनाने आ-गळ करीने लखी बताव्युं.। आवा मुख्य विषयनो लेख लखतां ए-मने, कोइपण सिद्धांतादिकनो आधार न बतावतां, मात्र आपणीज मातेने आगल करी मुकी, तो हुं ? एमणेज आ धर्मनो दरवाजो खोलीने बताच्यो छे के ? कोइ पूर्वना महान् महान् आचार्यो आ धर्मना दरवाजो खोछीने बतावता गया छे ? आ वात शुं त्माने जाणवा योग्य नथी ? वास्तेज कहीये छीये के, जो एकाद महापुरुषतुं पण नाम आगल करी, आ सम्यक्तवना विषयने लखीने बतावता तो, अमोने पण फरी पुछवानी जरुर न पडती, अने त-मारो लेख पण मान्यतारूपे थइ पडतो, परंतु तमोए तो लेख लख-तां एके आचार्यनुं नाम ना आप्युं, तथी अमी एम कहीये छीये के, तमो ढुंढको सम्यक्त्वना स्पर्भ मात्रथी तो दूर थया छो तेमां तो, कांइ नवाइ जेवुंज नथी, परंतु सम्यक्त्वना भेदोना यथावत् ज्ञानप-णाथी पण दूर थयेला छो ? तेथीज उलट पालट पणे आपणी मित कल्पनाथी, विपरीत लेख लखीने बतावो छो, अने नतो कोइ सिद्धांतनी पण साक्षी लखी बतावो छो, तेमज नतो कोइ आचार्यनुं पण नाम छखीने बतावें। छो, तेमज नतो कोइ ग्रंथ मात्रनी पण सा-क्षी बतावो छो, वास्ते आवा पाया वगरना लेखने तो, कोइ तमारा जेवा जैन मतनीश्रद्धाथी दूर थयेला हशे तेज मानी लेशे १ परंतु खरा जैन धर्मनी प्राप्तिनी इच्छा वाला तो, कोइ दिन पण तमारा लेखनो आदर करसे नही ? ।। केमके जे सर्व जैन धर्मनी प्राप्तिनुं मुख्य साधन, अथवा सर्व प्रकारथी आधिक धर्मनी पाप्तिनुं मुख्य साधन ह्रप, सम्यन्क, छे तेनो विचार सर्व महापुरुषोथी निरपेक्ष थइ, तमारा जेवा आज कालना जन्मेला, स्वछंद पणाथी करीने बतावे ते तो, कोइ दिन पण योग्य रूपे गणायज नहीं ? एटलो सामान्य पणाथी विचार तो, जे मूर्खमां मूर्ख गणातो हत्रे, ते पण जरुर करक्षेज ?

ढूंढके—पृष्ट. ११२ थी, छ यत्ना (जयगा) नो अर्थ, सर्व महापुरुषोधी निरपेक्ष थइ, एकाद पण ग्रंथनो आधार लीधा वगर, आपणीज मितना गोला गर गडाव्या छे.। अने तदन विपरीतपणेज लखीने वतावे छे.। अने तेनी टीपमां लखीने बतावे छे के, "केटलाक 'आ छ यत्नानो 'तहन जूदोज अर्थ करे छे, समिकिती जीवना संबंधमां ते बोल न उतारतां मिध्यात्वीना संबंधमां उतारे छे, एटले मिध्यात्वीने आवकार विशेष—आवकार, दान, मदान, वंदन, अने गुणग्राम, न करवां । मारा समजवा प्रमाणे, धर्मबुद्धिथी मिध्यात्वीने, आबो, पधारो, एम न कहेवुं, अगर दान न देवुं, ते बराबर छे, पण घर आवेला हरकोइ माणसने बोलावनोज नहि, अगर हरकोइ धर्मना दुःखीने दान करवुं नहि, एबो कोइ दिवस जैन शास्त्रोनो उपदेश होयज नहि."

विचार-टीपमां तमीए कांइ वधारे बताव्युं होय तम नथी, भासकारोनो पण एज अभिमाय छे केमके तेओए पण धर्म बुद्धि-यीज करवानी मनाइ करेडी छे. ॥

॥ गाया ॥

सन्वेहिंपिजिशोहिं दुज्जयिजय रागदोस मोहेहिं सत्तार्गुकंपराठा दानं न कहंपि पिंड सिद्धं. १ अर्थ-दुःखंथी जीती शकाय एवा राग, द्वेष, मोह, ने जीती स्रीधा छे नेमणे, एवा सर्व तीर्थंकरोए, प्राणीओनी अनुकंपाने वास्ते, दान देवातुं कोइ जगो उपर पण निषेध करेलुं नयी.॥

हवे विचार करो के, अमारा ढूंढक भाइये, पोतानी टीपमां, वधारे शुं? कहीने बताव्युं, मात्र वधारे तो तेमणे तेज करीने बताव्युं छे के जे, छ यत्नानो अर्थ उलटावी, आपणी मित कल्पनानो अर्थ लखीने बताव्यो, अने कोइ पण प्रकारनो आधार लखीने बताव्यो नहीं. !!

अही शास्त्रकारोनो ' छ यत्नोनो ' अर्थ जे छे ते छखीने ब-तावीये छीए. ॥

॥ गाथा ॥

नो अन्नतिथ्यिए अन्नतिथ्य देवेय तह सदेवेवि । गिहिए कुतिथ्यिएहिं, वंदामि नवा नमंसामि. १ ॥ नेव अगालित्तो आलवेमि, नोसंलवेमि तह तेसिं । देमि न असगाईयं, पेसेमि न गंध पुष्फाइ. २ ॥

द्यर्थ—अन्यतीर्थिक, परिव्राजक, । अन्यतीर्थिक देव रुद्रादि, तेमज 'जिनमितमाने ' तेओ ग्रहण करीने बेटा होय तेने पण, बं-दना, १ तेमज नमस्कार २ करुनहिः ॥ १ ॥ हवे बीजी, तेमणा बोलाव्याविना बोलवुं नहिः ३ । बारंबार पण तेमणे बोलावुं नहिः ४ । अने धमबुद्धियी तेमणे अञ्चनादिक आपुं नहि, परंतु अनुकं-पाधी आपवानी मनाइ नहीः ५ । पुष्प गंधादिक पण तेमणा देवनी सेवामाटे भेज नहीः ६ ॥ २ ॥

।। " छ यत्नानां नाम " ।। १ परतीर्थिकादि वंदन, । २ नम-स्करण, । ३ आलापनं, । ४ संखपनं, । ९ अज्ञनादिदानं, । ६ पु-ष्पादिभेषणं. ।। ।। आ छ प्रकारनी यत्ना, प्रवचन सारोद्धारमां, तेमज सम्पन्क सप्ति नामाग्रंथमां, तेमज आत्मनबोधादि, अनेक ग्रंथोमां लखेली छे. ।। ते बधाए ग्रंथकारोथी निरंपेक्ष थइ, अमारा दृढक भाइ, नवीन प्रकारथी, स्वछंदपणे लखीने बतावे छे. ।।

जृवो पृष्ट ११२ थी. १ आलाप-समिकतीजीव बीजा समिकती जीवने बोलावानो विनय करे जेमके आवो पथारो. ॥

॥ २ संलाप-समिकती जीवने विशेषे आदर सहित बोलावे, कुश्रलक्षेप पुछे, इत्यादिः ॥

॥ ३ दान-समिकती जीवने अञ्च-जल मुखवास-धन आ-दितुं दान आपे. (आ श्रावके श्रावकनी वात छे, साधु-साधुने अगर साधु श्रावकने अगर श्रावक साधुने जुदा प्रकारतुं दान आपे, ज्ञान दान पण दानज छे.) ॥

- ॥ ४ प्रदान-विशेष दान आपे. ॥
- ।। ५ वंदन-समिकती जीवने वंदन नमस्कार करे.।।
- ॥ ६ गुणप्राम-समिकती जीवनी पुठपाछल तेनां वखाण करे, ॥

।। आ छ प्रकारनी यत्नातुं स्वरूप, अमारा दृंदक भाइ, कया ग्रंथथी, अथवा कया सिद्धांतथी, लखीने बतावे छे, तेतुं तो नाम निम्नान पण जणातुं नथी, । तो पछी जे सम्यन्कने, धर्मनातो एक मूल रूपे गणेलुं छे, । अने जे सम्यन्त्वने, धर्मनातो एक द्वाररूपे गणेलुं छे, । अने जे सम्यन्त्वने धर्मना एक पायारूपे गणेलुं छे, । अने जे सम्यन्त्वने, धर्मना एक आधार भूत गणेलुं छे. । अने जे सम्यन्त्वने, धर्मना एक खजाना रूप मानेलुं छे ।। एवा अमूल्य सम्यन्त्वने, धर्मना एक खजाना रूप मानेलुं छे ।। एवा अमूल्य सम्यन्त्व रतन रूपना अनेक भेदो, महापुरुषोए, सिद्धांतामां करीने बतावेला छे, ते भेदोने छोडीदइ, आजकालना जन्मेला अर्धदम्य पुरुषोए जे नवीन प्रकारथी करीने बतावेला होय, ते भेदोने कबूल

करवा ए हुं ? क्यांजनी थयेलुं छे एम गणाशे के ? तेनो क्यार पा-ठक वर्गज करीने बतावे, एटले अमारे पण बस छे. ॥ अने जे आ छ यत्नानो अर्थ ढूंढक भाइये छख्यो छे, ते एकपण ग्रंथमां लखेलो होय एम जणातु नथी, तेथीज अमो ए अर्थने नवीन प्रकारनो कहीये छीये।॥

॥ इवे अमो भव्य जीवोना उपकार माटे, फरीथी ६७ बोलतुं नाम, अने तेनो सामान्य मात्र अर्थ, जे सिद्धांत कारोए करेलो छे तेनो, पथम टुंकमां लेख आधीने, तेनीज निचे प्रांत पक्षरूपे, अ-मारा ढूंढक भाइनां लखेलां नाम, अने तेनो अर्थ पण लखीने बता-बीये छीए, के जेथी पाठक वर्णने सुगमताथी तेनी समन पढे. ॥

॥ सिद्धांतकार— ॥ चार सर्दह्राा ॥

१ परमार्थ संस्तवः, । २ परमार्थ ज्ञात सेवन, ३ व्यापम दः र्भन वर्जन, । ४ कुदर्शन वर्जन, एचार सदहगा जाणवीः ।।

्।। ढूंढक—॥ चार सर्देहणाः

१ परमार्थ संस्तव, । २ परमार्थ ज्ञात सेवन, । ३ व्यापक्ष दर्जन वर्जन, । ४ कुद्रीन वर्जन, ।

^{||} सिद्धांतकार-|| त्रण लिंग. || १ शुश्रूषा, । २ धर्मराग, । ३ वैया दृत्त्य, ॥

[।] ढूंढक—त्रम लिंग, १ शुश्रूषा, ! २ धर्मराग, । ३ वैया कृत्य, ॥

^{।।} अहीं सुधी अर्थमां विशेष फरक नहीं होवाथी, नाम मात्रज

लखीने बताव्यां छे, अर्थ छे ते सिद्धांतोथी जोइ लेबा. ॥ अहीं सुधी ६७ मांना ७ बोल थयाः ॥

॥ सिद्धांतकार-॥ दशप्रकारनो विनय.॥

- १ अरिहंत-तीर्थकरोनो विनय, ॥
- २ सिद्ध-अष्टकर्मथी रहितनो विनय, ॥
- ३ चैत्य-जिन प्रतिमानो विनय, ॥
- ४ श्रुत-आचारांगादि सिद्धांतादिकनो विनय,।
- ५ धर्म-क्षमादि यतिना दश धर्मनो विनय, 1
- ६ साधुवर्ग-साधुना समुहनो विनय, ॥
- ७ आचार्यनो विनय, ॥
- ८ उपाध्यायनो विनय, ॥
- ९ प्रवचन-संघनो विनय,॥
- १० सम्यन्कनो, अने सम्यन्कवालानो विनय,॥

॥ ढूंढक-पृष्ट ९२ मां

॥ दश्च विनयः ॥

१ अरिहंतनो,

६ कुल, अथवा एक गुरुना शिष्यो,॥

२ सिद्धनो,

७ गण, अथवा घणा आचार्योना शिष्यो, ।

३ आचार्य.

८ संघ,

४ उपाध्याय,

९ साधमी तथा

५ स्छिवर,

१० क्रियावंत.

ए दशनो विनय करे, एम छखी जैनमतना मुख्य रूप, अथवा सम्यक्त्वना मुख्य कारण रूप, तीसरा बोलथी जुदा पडया छे, तेनो पाठके विचार करवो.॥

॥ सिद्धातकार— ॥ त्रण गुद्धी. ॥

- १ जिनमत-तीर्थकरोए कहेला जीवादितस्व, ।
- २ जिनमत स्थित-शुद्ध साधुओ, ॥
- ३ जिन-वीतराग देव, ।

आ त्रण वस्तु विना, बधु जमत प्राये असार रूपज छे, एवो विचार करवाथी सम्यन्कनी शुद्धी थाय छे, तेथी ए त्रण शुद्धी कही छे. ॥

॥ ढ़ंढक-॥ त्रण शुद्धिः तदन विपरीत लखे छे, समिकती जीव होय ते १ मन २ वचन ३ काया ए त्रण योगने शुद्ध पवर्त्तावे.॥

- ॥ सिद्धातकार--पांच दूषसा ॥
- १ शंका, । २ कांक्षा, । २ विचिकित्सा, । ४ कु टाष्ट्र पशंसा, । ५ कु दृष्टि परिचय, ॥
 - ॥ ढूंढक-पांच दुषण रहित पणुं. ॥
- १ शंका, । २ कांक्षा, । ३ विचिकिस्सा, । ४ अन्य तीर्थिक मर्शासा, । ५ अन्य तीर्थिक परिचयः ॥

आ पांच दूषणनी व्याख्यामां, तात्पर्यश्री फरक विसेष नहीं होबाथी, नाम मात्र छखीने बताव्यां छे.॥

अही शुधी ६७ बोलमांथी २५ बोलनो विचार **वरी**ने बताव्यो छे.।।

सिद्धातकार-

पांच भूषगा.

- ? जिनशासनने विषे, कुशलवा अर्थात् चतुरः ॥
- २ प्रभावना-जिन शासनने, आपणी ज्ञानादिक शक्तिवडे करीने दीपावे, ते प्रभावना ॥

३ तीर्थसेवा—स्थावर तीर्थ, शतुं जयादि तीर्थीना मंदिरा नी सेवा, । जंगम तीर्थ, शुद्ध साधुओनी सेवा, एवे प्रकारनी तीर्थसेवा.।

४ स्थेर्य-आप जैन मार्गथी डगाव्यो डग नहीं, अने बीजोन पण डगवा दे नहीं, ते स्थेर्यः।

५ भक्ति-प्रवचननी वैयावच करवा रूप.

॥ ढृंढक— पांचभूषण.

- ? जैनमार्ग-अने धर्मनी भक्ति करे, ज्ञानादिकनी भक्ति करे.॥
- २ अरिहंत देव—(वर्त्तमानकाले श्रीमहावि देहसेत्रे) विचरे छे तेमनी भक्ति करे, अर्थात् मन वचनथी तेमना गुण ग्राम करे, अने कायाथी नमस्कार करे. ॥
 - ३ साध-साध्वी तथा साधमीनी योग्य भक्ति करे. ॥

४ धर्मथा अजाण प्राणीने, अने पदः र्शनना अनुयायीओने, धर्म समजाने, चारजण बेठा होय त्यां युक्तिथी धर्मसंबंधी वात छेडे अने सौने धर्मरागी बनावे ॥

५ धर्मपामेलो माणस धर्मथी डगतो होयं तेने, ज्ञानवडे अने ज-रुर पडेतो द्रव्यादिकनी स्हाय दइने धर्ममां स्थिर करे. ॥

आ पांच भूषणमां, नाम, अने अर्थ, बन्नेन फेरवीनाखी, केवल आपणी मति कल्पनाज खोटे खोटी सिद्धांताकारोथी निरपेक्ष थइने करेली छे, तेनो विचार अमो लखीआव्या छे. ॥

[॥] सिद्धांतकार-पांचलचग्ग.॥

[?] शम, । २ संवेग, । ३ निर्वेद, । ४ अनुकंपा, ५ आ स्तिक्य. ॥

ढूंढक-पांच संक्षण. ॥ १ शम, । २ संवेग, । ३ निवेद, । ४ अनुकंपा, ५ आस्थाः ॥

आ पांच लक्षणमां पण, वधारे फरकजेवुं नही जणाववाथी अमोए विवेचन कर्युं नथीः ॥

सिद्धांतकार— त्राठ प्रभावक. ॥

१ प्रवचनी, । २ धर्मकथी, । ३ वादी,। ४ नैमित्तक, । ५ त-पस्वी, । ६ विद्यावान् , । ७ अंजनादि सिद्ध, । ८ कवि ॥ ढूंढक-आठ प्रकारे प्रभावकः॥

१ प्रवचनी, । २ धर्मकथी, । ३ वादी, ४ नैमित्तिक, । ५ त-पस्वी, । ६ विद्यावान, । ७ मसिद्धन्नत, ८ काव्य शिक्त, ॥

आ आठ प्रकारना प्रभावकमां केटलेक ठेकाणे तो अर्थनो फ-रक कर्यों छे, अने सातमा प्रभावकमां तो नाम शुद्धां फेरवी नास्यं छे. ॥

सिद्धांतकार—

षट भावना. ॥

१ आ सम्यक्त-	चरित्र धर्मतुं मूल छे
२ आ सम्यक्क-	धर्मनुं द्वार छे. ॥
३ आ सम्यक्त-	धर्मना पायारूप छेः ॥
४ आ सम्यक्त-	धर्मने आधारभूत छे
५ आ सम्यक्त-	धर्मना भाजनरूप छे
६ आ सम्यक्त-	धर्मना खजानारूप छे. ॥
ढूंढक-पृष्ट १०९	थी-षर् भावनानो अर्थ एज प्रमाणे

लखे छे, तेथी फरी लखी बताबता नथी। ॥

सिद्धांतकार-

छ प्रकारनी यत्ना. ॥

- १ पर तीर्थिक साधु, अने तेमना देवने वंदनादि वर्जन. ॥
- २ तेमणे नमस्कारादि वर्जनः।
- ३ तेमनी साथे विना बोलावे आलाप वर्जनः।
- ४ तेमनी साथे विना बोलावे वारंवार संलाप करवानुं वर्जन.
- ५ धर्मबुद्धिथी अञ्चनादि प्रेषण वर्जनः।
- ६ धर्म बुद्धिथी पुष्पादि पेषण वर्जनः ॥

ढूंढक-छ यत्ना (जयणा)

- १ आ ल्लाप—समिकती जीव बीजा समिकती जीवने बोला-ववानो विनय करे, जेम के आवो, पधारोः ॥
- २ संलाप-समिकती जीवने विशेष आदर सहित बोलावे, कुश्चल क्षेम पुछे इत्यादि । ३ दान-समिकती जीवने, अश्न-जल, मुखवास, धन-आदिनुं दान आपे, । आ श्रावकने श्रावकनी बात छे, साध-साधुने, अगर साधु श्रावकने, अगर श्रावक साधुने, जुदा प्रकारनुं दान आपे, ज्ञान दानपण दानज छे. ॥
 - ४ प्रदान-विशेष दान आपे,।
 - ५ वंदन-समिकती जीवने वंदन-नमस्कार करे.।
 - ६ गुण ग्राम-समिकती जीवनी पुंठ पाछल तेनां वखाण करे.
- आ छ प्रकारनी यत्नामां तो, सर्व आचार्योथी अने सर्व जै-नना ग्रंथोथी निरपेक्ष थइ, नाम, अने तेनो अर्थ, तदन नवीन प्र-कार्यी ज करीने बताच्यो छे.॥

सिद्धातकार-

छ त्रागार. ||

१ राजा भियोग, । २ गणा भियोग, । ३ बला भियोग, । ४ सुराभियोग, । ५ कांतार द्वति, । ६ गुरु निग्रह, ।।

ढूंढक भाइ पण, एज नामधी लखीने वतावे छे, तेथी फरी लखता नथी, अर्थमां पण पाये फरक जेवुं नथी.

सिद्धांतकार-

षट् स्थान. ॥

- १ अस्तिजीव-एटले जीव छे.।
- २ ते जीव नित्यरूपं छे, तेनो नाश थवानो नथी.।
- ३ ते जीव, नवीन कर्मनो कत्तीपण छे।॥
- ४ ते जीव, करेंलां कर्मनो भोक्ता पण छे। ॥
- ५ ते जीवनो, कर्मथी छूटको थवाथी मोक्ष छे.।
- ६ अने मोक्षनो उपाय पण छे. ॥

आ छ प्रकारना स्थानमां, अमारा दृंढक भाइये, नाम, तथा अर्थमां पण, विशेष फरक करेलो नथी, तेथी अमो फरी लखी बतावता नथी। ॥

अहीं सुधी सर्व मर्लीने सम्यत्कना ६७ बोल पुरा थया छे.

। आ सम्यक्त्वना विषयमां, कोइ वधारे जाणवानो उद्यम करशे तेने, अमारा ढूंढक भाइयो एम केहशेके, एतो ग्रंथकारो छखे छे, अने ते ग्रंथोने आपणे मानता नथी, एम कहीने घोखामां नाखशे, तेमणे अमो एज कहीये छीए के, जो तमो ग्रंथकारोनो छेख मानता नथी तो भछे रहेवाद्यो अने तमाराज मानेछा सिद्धांतोमांथी, आधर्मना दरवाजाने खोछवानी कुंचीयो, अमोने बतावो ? एटछे अमारे पण बस छे, नाहितो अमो एज कहीशुं के, ज्यारथी तमारो ढूंढक पंथ ऊभो थयो छे, त्यारथीज तमारा वास्ते धर्मना दरवाजो

वंध थयेलो छे. । केमके ते धर्मना द्रवाजानी कुंचीयो, तमारा मानेला सिद्धांतोमां तो छेज नाहे. । अने ते मूर्तिपूजकोना घरनी कुंचीयो चोरी लइने, मरोडा मरोडी करी, उलट पालटपणे वंधवेस्ती कर्याविना, धर्मनो द्रवाजो खोलवानो प्रयत्न करोछो, तेथी तमो गंठीछोडा५ण करीने धर्मना द्रवाजामां जवरजस्तिपणे पेसवानो प्रयत्न करोछो. । परंतु तमारा वास्ते तो ते खरो धर्मनो द्रवाजो वंधज थयेलो छे, अने ते खरा धर्मना द्रवाजानी कुंचीयो पण तमारा हाथमां आवेली नथी, एम अमो खातरीवंध कहीये छे. । अगर जो तमारा मानेला सिद्धांतमां, तमारी लखेली धर्मना द्रवाजानी कुंचीयो, तमारी पासे होय तो ते सिद्धांतना पाठनीसाथे तेतं नाम पण प्रगट करीने वतावो ? अमो तमारा अनुयायीपणे वर्तन करवाने जरापण वार लगाडी हो नहि, तेम अद्धे द्रधना लेखने मानीहां पण नहि. ।।

इति ६७ बोलना तत्त्वाऽतत्त्वनो विचार संपूर्ण. ॥

इति श्रीमद्धि जयानंद सूर्भश्वर लघुशिष्येनाऽमरमुनिना ध-र्मना दरवाजा संवंधि सम्यक्त्वरूप सप्तषष्टी वोल्ल नाम्नःपंचम प्रकरणे तत्त्वाऽतत्त्व विचारःसंकलितः ॥

प्रकरण. ७ मुं. मिथ्यात्व.

॥ दूंढक-पृष्ट, १६९ मां-मिध्यात्वना नीचे समजावेला २९ भेद समजीने, तेना संघद्दों न थवा देवा साबचेती राखवी, एम कही. पृष्ट. १७१ मां (३) अभिनिवेशिकः ॥ नी व्याख्या करतां लखे छे के-श्री वीतराग देवनां वचनो उत्थापे-उत्सूत्र परु पणा करते ते मनुष्य अभिनिवेशिक मिध्या त्वी समजवाः इत्यादि ॥

। विचार—दूंढकभाइ, पृष्ट. १९५ मां, मिथ्यात्वना द-शमा भेदमां छखे छे के, (१०) वीतरागे कह्युं ते करतां अधिक परुपे ते दशमुं अधिक परुपणा मिथ्यात्वः।

एम मिथ्यात्वनो दशमो भेद छखी बताववा छतां, ॥

जैनना एके सिद्धांतमां, एकंदरना सर्वाला रूपथी, एमना कहेवा प्रमाणे नहि कहेला एवा, आ मिथ्यात्वना तो २५ भेद.।

^{*} आ चक्रनी टीपमां लखे छे के—(१) तिखुत्तीना पाठमां अने बीजी घणी जगाए 'चेइयं 'शब्द खुल्ला ज्ञानना अर्थमां वपरायेला छतां तेने 'मूर्ति, ना अर्थमां लइने, तथा, निक्षेप, ना तद्दन अवलो अर्थ लइने, कटलाक साधुए, पथरानी पूजा परुषी, अने प्राष्टमां प्रथी रच्या. ॥

^{।। (}२) युरोपियन पंडित 'हर्मनजेकोर्बाए ' आचारांग सूत्रने। अंग्रेजी तरजुमो कर्यो तेमां, जैन साधुने मांस खावुं कल्पे, एवो अर्थ कर्यो. आ बन्ने दृष्टांतमां फरक एटलोजके. पहला दृष्टांतमां जाणी बुझीने 'अ-पराध, थयो छे, अने बीजा दृष्टांतमां, गुरुगमना अमावे अज्ञान छे. । अंधकारमां कोइक दिवस दीपक आवशे, पण धोला फक्क अजवालामां बेटला की की वगरनी आंखवालाने, प्रचंद सूर्यपण शुं करी शकशे।

अने त्रिजा प्रकरणमां कहेला सम्यक्त्वना ९ भेदः ॥ अने चोथा प्रकरणमां भिन्न भिन्न विदक्षाथी विचार करवाना विषयोने, २५ इ-ष्टिना स्वरूपथी, अथवा २५ बोलना रूपथी, एक चीज उपर एकज वस्त्रते अने एकज प्रसंगयी लागु पाडीने बताव्या ते. ॥ तेमां पण जैननां मुख्यता रूप वे प्रमाणने छोडी, चार प्रमाण रूपथी व्याख्या करीने बतावी ते, तेमज नयोना विषयमां । निक्षेपोना विषयमां तमोए मनः कल्पनाथी लखीने बताव्युं ते ॥

आ उपर लखेला विषयोमां, जैन सिद्धांतीथी तद्दन विपरीत पणानुं आचरण करी, अने सर्व गणधरादि महापुरुषोधी निरपेक्ष थइ, जे मित कल्पनाथी स्वछंदपणे लेख लख्यों छे, तथी अधिक अथवा न्यून प्ररूपणा रूप मिथ्यावना पात्र वाडीलाल, अने वाडीलालने मार्ग बतावनार, बने छे के नही ? तेना विचार पाठक वर्ग करे ? अगर तमाज तमारी मेले विचार करीने जुवो ? एटले अमारे बस छे।।

।। तेमज सम्यक्त्वना ६७ बोलमां पण, सर्व जैन, रिद्धांतका-रोथी, विपरीतपणे आचरण करी, स्वछंदपणाथी, कोइ जमोपर तो तहन विपरीतार्थ, अने कोइ जगोपर उलट पालटपणानो अर्थ, मि-ध्यात्वना पात्ररूप बनीनेज करो छो ?॥

तेमज-पृष्ठ. २०२ मां, (२२) मा, अविनयने मिथ्यात्व ठ-राव्यो ते, अने. (२३) मा मांहे त्रीश आशातनाने मिथ्यात्व ठ-रावी ते,। आ आविनय, अने आशातनाने, कोइ सिद्धांतकारोए पण, मिथ्यात्व एवं नाम नहीं आपेत्यं छतां, तमो मिथ्यात्व एवं नाम आ-पीने, अधिकपणुंज करीने बतावो छो.।

।। अने. पृष्ठ. २०० मां. (१४) मा, दया धर्म ने अधर्म स-र्दहे ते मिथ्यात्व.। (१५) मा, हिंसा धर्मने धर्म सर्दहे ते मि- ध्यात्व. । (१६) मो २७ गुण सहित वर्त्तता साधुने, अज्ञानी अथवा मता ग्रहीपणाथी असाधु कहे, ते मिध्यात्व. । इत्यादि मिध्यात्वना जे बोलोने लख्या छे, तेमां २४ मा बोलमां, धर्म ने अध्ये सहहे, एम. । अने—(१५) मा बोलमां, अधर्मने धर्म सहहे, एम. । (१६) मा बोलमां, साधुने असाधुने कहे, एम. । ज्ञास्त्र करो ए लखेलुं छे छतां, तमोए—(१६) मामां, दया शद्ध. । अने (१५) मामां, दिसाशद्ध. । अने (१६) मामां, २७ गुण बिगेरेना शद्धों, आधिकपणे लखीने बताव्या, तेपण अधिक मरूपणा रूप मिध्यात्वपणानेज अंगीकार करो छो. । केमके तमारा लख्या मुजव कोइपण जैनशास्त्रमां लखेलुं नथीं. ॥

॥ अने-पृष्ठ. १७५ थी, संशयिक मिध्यात्वनुं वर्णन करतां, ।
पृष्ठ. १७६ मां, लख्युं छे के, संशयनो खुलासो न थाय तो पछी।
"तुमेव सच्चंजं जीगोहंपवेइयं." अर्थात् तमंज साचाछो
तमे कहुं ते सत्य छे, । ए श्री अचारांगजीनुं वाक्य छे, एम लखी
मननी समाधानी राखवानुं लख्युं छे, तेनो अर्थ पण नवीन प्रकारनो
ज करीने बताब्यो छे. तेम पाठ पण नवीन प्रकार जेवोज लागे छे,
जूबो ते बाक्य, अने तेनो खरो अर्थ, "तमेव सच्चं। जं जिगोहिं
पवेइयं. । " ह्याया। तदेव सत्यं यत्।जिनैः प्रवेदितं. अर्थः
ज्यां संशय पडे त्यां एम विचार करवानो छे के, तेज वात सत्य
छे, जे जिनेश्वर देवोए प्रवेदन करी छे, अर्थान् कहेली छे, एम
विचार करवानो अर्थ छे, परंत्, तमेज साचाछो, एवो अर्थ ते वाक्यनो नथी।॥

आ छेखो बताववानुं भयोजन ए छे के, तमारा ढूंढकोने, एक पण सिद्धांतना वाक्यनो अर्थ, यथा योग्य नहीं रूमजवा छतां पण, केटलां लांबां पगलां भरो छो ? ते तमारी पाकी धिटाइनुंज परिणा-म जणावो छो. ।।

हवे तमोए जे, नीचेनी टीपमां, आक्षेप कर्यो छे, तेनो किंचित् विचार करीने बतावीए छीए.

'तिखुत्तो ' ना पाटमां, तेमज बीजी घणी जगोए जे 'चेइय ' शब्द छे, तेनो अर्थ प्रतिमाज छे, अने एज अर्थ, ढूंढनी पार्वतीना लेखथी पण सिद्धज थाय छे. ॥ जूबो प्रथम सत्या-र्थ पृष्ठ १०० ओ. ११ मां, ढूंढनीज लखे छे के, टीका टब्बाकारोने चेइय शब्दका अर्थ, प्रतिमा लिखाभी है तो मृत्तिप्जक आचार्योने पक्षपातसें लिखा है.॥

आ छेखमां अमो एट हुंज पुछीये छीये के, टीकाकारो, अने टब्बाकारोए 'चेट्ट्य ' शब्दनो अर्थ "मूर्ति " करेछो छे छतां तमारा ढूंढको, कोइ पण प्रमाणिक ग्रंथना अक्षरोनी साक्षी आप्या विना, केवल आपणी मूढतापणे, ज्ञाननो अर्थ करीने वतावे छे, तेतो तमारा जेवा मूढ इशे तेज मानशे, परंतु चतुर हशे तेतो जरुर वि-चारज करशे, ॥

ते शिवाय सत्यार्थ पृष्ट. १४७ मां, ढूंढनीए, जे नंदिसूत्रना मूल पाठमां गणावेला, विवाह चूलिया सुत्रना, नवमापाहु डाना, आठमा उदेशानो, मूल पाठ लख्यो छे, तेथी पण मूर्तिपूजा, अना-दिपणाथी छे, एम साक्षात्पणे सिद्धज थाय छे. ।। परंतु 'चेइ्य' शब्दने मूर्तिना अर्थमां लड्ने. । तथा निक्षेपनो, तदन अवलो अर्थ लड्ने. । केटलाक साधुए, पथरानी पूजा परूपी नथी. । परंतु त-मारा ढूंढकोना हृदयमां, महा मूढतारूप, पलितनो प्रवेश थइ जवा-

थी, तमारां हृदयज, पथ्यर जेवां बनी गयेलां छे. । तेथी ते सूत्रो-ना पाठोनो, अर्थज अवलो जुबो छो.

॥ जूबो ते विवाह चूलियानो पाठ, अने तेनो अर्थ, सत्यार्थ. पृष्ठ १४७ थी,

यथा

| कइ विहाणं भंते मनुस्स लोए पिडमा पण्णांता
गोयमा अने गिवहा पण्णांता उसभादिय वद्धमाण परियंते, अतीत अणागए चौवीसंगाणं तित्थयर पिडिमा,
राय पिडमा, जक्ख पिडमा, भूत पिडमा, जाव धूमंक
उपिडमा, ॥ जिन पिडमाणं भंते वंदमाणे अचमाणे,
हंता गोयमा वंदमाणे अचमाणे इत्यादि. ॥

हवे ढूंढनीनो लखेलो अर्थ पण लखीनेबतावीय छीए ते नीचे प्रमाणे.

त्र्राय—हे भगवान्, मनुष्य लोकमें, कितने मकारकी पडिमा (मूर्ति) कही है, । गौतम अनेक मकारकी कही हैं । ऋषभादि महावीर (बद्धमान) पर्यंत २४ तीर्थकरोंकी, । अतीत अनागत चौवीस तीर्थकरोंकी पडिमा, । राजाओंकी पडिमा, । यक्षोंकी पडिमा, । यहांकी पडिमा, । क्रांकी पडिमा, । क्रांकी पडिमा, । हे भगवान् जिन पडिमाकी, वंदना करे, पूजा करे, हां गौतम, वंदे, पूजे, इत्यादिः

उपर रुखेला, विवाह चूलिया सूत्रना पाठनो अर्थ, दूंढ-नी एज उपर रुख्या मुजबज करेलो छे, अने पछी वीजा मतल्रबना वधारानो पाठ लखी, सम्हिया वगर, उंधा अर्थमां उत्तरी पढी छे.। तेनो खुलासो जुवो अमारा योजेला 'दूंढक हृदय नेत्रांजन पुस्तकथी.

विचार करो के, अतीत कालना तीर्थकरोनी प्रतिमाने पण, वंदना करे, पूजा करे एवं ख़ुद भगवान पोते, गौत स्वामीने कहे छे, तेथी अनादि कालनी जिनमतिमा छे एम सिद्ध थाय छे के नहीं ?।। वळी जोवातुं ए छे के, उवाईसूत्र तथा विपाकसूत्र,। अने अंतगढ सूत्र,। आदि सूत्रोंमां ज्यां यक्षोना मूर्त्ति मंदिरोतुं वर्णन चालेटुं छे, त्यां " पुष्रणाभद्द चेइये " आदिना पाठथीज वर्णन करेलुं छे, तेवी ज रीते ' ऋरिहंत चेइय ' पाठधी वर्णन छे अने तेनो अर्थ, मंदिर मूर्तिनो, टीकाकारोए, तेमज टब्बाकारोए, करेलो छे, । अने ढ़ंढनी पण सत्यार्थमां लखे छे के 'चेइय' शब्दनो अर्थ ' प्रतिमा ' टीका, टब्बाकारोए, पक्षपातथी करेलो छे. । एम लखी, उन्मत्त पणाने धारण करी, एक पण प्रमाणिक ग्रंथनी साक्षी आप्या विना, आधुनिक महा मुढोनां गंदां वचनथी आपना हर हडता जूटनी सिद्धाइ करवा मंडी पडी छे, परंतु गुरु परंपराथी आवेलो, अने हजारो आचार्योना एक मतथी. जैन मतनां हजारो सिद्धांतो पर चढी गयेलो होवाथी, ज्ञाननो अर्थ कोइ दिन पण करी ज्ञकायज नहीं, अने साक्षात् तीर्थिकरने वंदना करतां छतां पण जे 'चेइय शब्द वापरेलो छे, ते पण तीर्थकरोनी प्रतिमाने वंदन करवा रूपथी बीजा सर्व तीर्थकरोनो आदरज पदर्शित करेलो छे, अने एज वाक्य, जिन प्रतिमा जिन सारखी, एवा जैन सिद्धांतनी पण सिद्धिज करावे छे, परंतु ते तमारी मृढताथी तमो जोइ शकता नयी, तेथीज सिद्धांतकारोने दृथा निंदो छो. । आ विषयमां वधारे खुळासो जोवो होय तो जुवो, सम्यक्त्व सहयोद्धार, तथा अमारुं योजेऌं ढूंढक हृदय नेत्रांजन, अथवा आ तत्त्वाऽतत्त्वना निक्षेपना विषयमां विचारीने जुवोके तमारी केटली मुढता थयेली छे ते- थी तमारा पाटा ख़ुली जन्ने ? अगर जो कीकी वगरनी आंख्यो वाला थइ बेठशो तो, पछी कांइ पण जोइ शकवाना नथी ।। तेथी तमने हर कोइ एमज कहेशे के, पाकु अभिनिवेशिकपणुं लड़ बेठेला होवा छतां. पण आपणो दोष दृथापणे बीजा उपर आरोपीने. धोलाफक बनवाने चाहो छो, परंत एम, धोला फक बनी श्रकाय नहीं ? । बाकी अमा तो परंपराधी शृद्धपणे आवेलो, अने गुरु महा-राजनो बतावेलो, तत्वाऽतत्वनो मार्ग, तेने पूर्ण रीते नही पहोंचवा छतां पण, सारी रीते ते जैनना मार्गने, दिशावलोकनना स्वरूपथी जोइ, आनंद निमग्न थइ रहीये छीये, तेथी खीर समुद्रना दुध जेवा तत्वतं पान करवा वाला भव्य पुरुषोने, खारा समुद्रना पाणी रूप तमारा तुछ लेखथी, कोइ दिन पण तृप्ति थइ शकशे नहीं एम. खासपणाथी विचार करीने अने आवा अनुचितपणाना हेखो हख-वाथी दूर रही, तमो जे कांइ तमारु पोकल चलावता होय; तेने चाल वाद्यो, कोइ तमोने आडु आवे तेम नथी ? परंतु अनहद फाजलपणे ज़इ, जे ज़ुद्दा आक्षेपो करो छो तेथी कोइ रीते पण तमारा जुद्दा मतनी जींदगी, बधवां पामसे नही ? एटली हित सिक्षा लखीने आ ग्रंथना **लेखनी समाप्ति करुं छुं**. ।।

इतिश्री मद्विजयादानंद सूरीश्वररुष्ट्विशिष्येनाऽमरमुनिना धर्मना दरकाजा संबंधि मिथ्यात्वनाम्नः ससम प्रकरणस्यतन्त्वाऽतन्त्व विचारः समाप्तो जातः ॥

॥ श्रीः ॥

|| ढूंढकना दया नामना ध्रुवतारानुं स्वरूप ||

॥ इवे छेवटमां लखवातुं ए छे के, सम्यवत्व, अथवा धर्मनो द्रवाजो. लखवावाला लेखके, आपणा ग्रंथनी समाप्ति करतां, । पृष्ट, २२३ मां पण, एक एवं वाक्य लख्यं छे के, जाणे, आपणी मृदता रूपना पहाडथी, एक अनघड पथ्थरज फेकेलो न होय, एम लागे छे. । अने बारिक हिंधी विचारतां, वधा ग्रंथना वाक्यों पण प्रायं, अनघड पथ्थर रूपनांज छे. । परंतु वधा ग्रंथनां वाक्योंनो विचार, लखी शकाय नहीं, तथी आ समाप्तिना एकज वाक्योंनो विचार रूप दिशानुं अवलोकन करावी, अमो पण अमारा लेखनी समाप्तिनी साथ, आ ग्रंथनी पण समाप्तिज करीये छीए.

।। ते वाक्य नीचे प्रयाणे पृष्ट २२३ थी, ।

।। मोच नगरीए लइ जती, सम्यक्त्वनी सडके जतां नय—निचेपनी, भूल भूलामिणमां, जो कोइ माणस घुं-चाइ जाय तो, तेणो मात्र 'दया' नामना धूवतारा तरफ दृष्टि टेकववी, श्रने ए दीशा तरफज चाल्यां करवुं.। एथी वेहलो मोडो पण, ते, इक्तित स्थले पहोंचरो. पण जो तेटली दृष्टि पण न राखे तो, धृताराश्रो तेने श्राडा रस्ते दोरी, तेनुं सर्वस्व लूटी लइ, गत प्राण करी, तेने जंगलना गीध, श्रने कागडानो, भच्च बनावशे.।

॥ संपुर्णः ॥

॥ एमां विचार ए छे के-उपर लखेलो लेखकाे लेख, अ-भिनिवेश रूप, महा मिथ्यात्व भूतना आवेशयी, केवल मुढताथीज लखायेलो छे. । केमके, जैनधर्मना पायानुं जेटलुं मंडान छे, ते बधु ए दयामयज छे, वास्ते तेने माटे विशेषपणे कांइ पण लखवानी जरुरज नथी. । हा विशेषमां ए छखवाना जरुर छे के. नय-निक्षे-पनी, भूल भूलामणीमां घुचाइ जवावालाए, जे आचारांग सूत्रनो पाठ छे, तेनाज आधीन थइ, वीतराग देवना शुद्धमार्गनी सडकनो रस्तो छोडवो नहीं, पण तेनाजान पुरुषेति पुर्छीने, निर्णय करवो, तेम प्रयत्न करतां निर्णय न थाय तो पछी "तमे व सञ्चं जं-जिलाहिं प्रेड्स " अर्थात् तेज साचु छे, जे जिनेश्वर देवोए क-हेटुं छे. ! परंतु मारी समजमां हजी शुधी कांइ आवतुं नथी. । एवो विचार करी, जैनधर्मनां अनेक फांटामांना एकाट फांटामां रहीने पण, मध्यस्थ भाव अंगीकार करी छेवाना छे. । परंतु मूढ पुरुषोनां मृदता भरलां वचनोने हाथमें धरी, बांदरफाल भरी लेबी नहीं, के जेथी आपणो आत्मा अनंत मरणना भयमां आची पडे.। बास्ते खरेखरी धूवनो तारी तो एज छे के, । " तेज साचु है जे जिनेश्वर देवोए कहेलुं छे "। वाकी दया नामना तमारा कल्पित धृव तारा तरफज केवल दृष्टि टेक्बीने चालवावालाने तो, अवश्य कत्तेव्य रूप धर्मना कार्यमां पण, विपरीत विचारथी, मुजा-इने, आ भवना सार्थकथी, तेंमज परभवना सार्थकथी पण, भ्रष्टज थवानो प्रसंग आवे तेम छे, परंत लाभनो पसंग कदाापि नही मेलबी शके. । केमके, केटलांक धर्म कार्योमां पण, अदृष्टि गत सूक्ष्म जी-बोनी विराधना, द्रव्यरूप हिंसाना स्वरूपथी थवा छतां पण, वीत-रागनी आज्ञाथी वर्त्तन करतां, आ भव नो, तेमज परभवनो पण, अनेक प्रकारनो लाभज, तेमां जोवामां आवे छे, परंतु तेमां हानि किंचित् मात्र वास्तविक पणे जोवामां आवर्ता नथी। । वास्ते आ विचारमां " साधु स्त्राश्चित, " अने " श्रावक स्त्राश्चित " केटलांक दृष्टांतो आपीने, समजाति करी बतावीये छीये, ॥

।। १ जूबोके, दस्तने रोकवो नहीं, एवी भगवाननी आज्ञा छे, अने हाजतवाला साधुने, वर्षता मेघमां पण बहार भूभि जाबु पडे छे अने तेमां अदृष्टिगत असंख्याता अप्कायना जीवोनी विराधना त्रि-विधे त्रिविधेना पच्चखानवाला साधुथी पण थाय छे तोपण विराध कथतो नथी पण आराधकज गणेलो छे.।।

॥ इति प्रथमदृष्टांत ॥

।। २ साधुने, भगवाननी आज्ञाथी, आठ मासतक मर्यादा प्रमाणे विहार करवो, अने वचमां नदी आवे तो, विधिसहित ऊत-रवी, पण एक जगोपर बेसवुं नहीं।। हवे इहां दया नामना ध्र्व तारा तरफ, दृष्टि टेकीने चालवावालो एक साधु, भड़कीने, गुरुने पण केहवा लाग्यो के,। अरे गुरुजी, त्रिविधे त्रिविधेथी पच्चवान करीने पण, तमो, आ नदीने ऊतरी, छ कायनी विराधना केम करोलो ? अने संयमथी अष्ट केम थावोलो ? ।।

।। गुरुजी — अरे भाइ शिष्य, भगवाननी आज्ञा छे के, एक जगे।पर रेहवुं नहीं, वास्ते नदी ऊतरतां, संयमथी अष्ट थवातुं नथीं, पण, एक जगे।पर वास करवाथींज, संयमथी अष्ट थवाय छे, वास्ते ए गामने छोडीने बीजे गाम चाल. ॥

।। चेलो-एवी भगवाननी आज्ञा होयज केम ? अने होत तो दया नामना धूवतारा तरफज दृष्टि टेकीने चालवानु बतान्युं केम ?।। ॥ गुरुजी—अरे भाइ शिष्य, द्रव्य मात्रना स्वरूपथी हिंसा थती जणाय छे, पण, भगवाननी आज्ञाथी वर्त्तन करतां, भावहिं-साना पापना अधिकारी थता नथीं। केमके विहार करवामां लाभनो समावेश वधारे रहेलो छे, अने भगवाने पण ते आज्ञा फरमावेली छे.। इत्यादिक अनेक युक्तिथी समजूति करवा छतां पण, द्या नामना धूवताराना मूसलने पकडीने चालवावाला चेलाए, एकपण वात अंगीकार करी नहीं, अने छेवटे आ भवना हितथीं, तेमज परभवना हितथीं पण, श्रष्टुज थयों।!!

॥ इति द्वितीयदृष्टांत ॥

11 ३ एक जगोपर वे शिष्यनी साथे, चतुर्मास रहेला वृद्ध साधुए, वर्षता मेघमां, प्यालामां, लघुनीति करी एक शिष्यने, पर-ठवानुं व ह्युं, तो ते दया नामना धूवताराने वलगेला शिष्ये, जवाब दीधो के, हिंसा थाय तेवुं काम अमी करता नथी, छेवटमां बीजा शिष्ये परठव्युं, । आ वे शिष्योमां, धर्मी १ कयो ! अने अधर्मी १ कयो ! तेनो विचार करवानुं, वाचकवर्गनेज सोंपीदइये छीए. ॥

॥ इति तृतीयदृष्टांत ॥

॥ ४ एक साधु गोचरी गया छे, श्रावके गरम भात, दाल, दुध, विगरेनां ढांकनां ऊघाडी आपवा मांडग्रं, तो ते वाउकायनी हिंसाना भयथी मुखपर पाटा चढाववावालाए, लेवुं के नहि लेवुं. । केमके, मुखनी वराळ करतां, ते गरम भात आदिनी वराळ, घणीज आकरी होय छे, अने घणी दूर तक फेलाइजवाथी, वाऊकायनी

हिंसा वधारे थवानो संभव छे, । तेमज ते श्रावकने आपतां; दुर्ग-तिनो रस्तो मले के सुगातिनो, आ बधी वातनो पण विचार करवा-दुं, पाठकवर्गनेज सोंपीदउंछुं. ॥

॥ इति चतुर्थदृष्टांत ॥

।। पण विशेषमां एटलंतो जरुर कहुंछुं के गुरुपरंपराना सिद्धांतने छोडी, विचार विनानो, हठपणाथी पकडेलो, दया नामना ध्रवता-रानो रस्तो, जैनधमेथी अष्ठज करवावालो निवेडशे, परंतु जैनधमेनी पाप्ति कराववावालो तो नहीज थाय, । केमके उपर बतावेला चारे द्वष्टांतमां, व्यवहारनयनी अपेक्षाथी, अहिष्टगत सूक्ष्मजीवोनी विराधना, इव्यहिसाना स्वरूप मात्रथी जोवामां आवे छे, परंतु निश्चय नयनी अपेक्षाथी, ते वर्त्तनमां, आलोकमां, तेमज परलोकमां पण, हितनोज समावेश रहेलो छे. । तेथी भगवंते साधुनी द्या तेमज बीजा जीवोनी पण दया जाणीनेज, आज्ञा आपेली छे, । तेथी मुख्यत्वे करीने दयानोज मारग छे? पण ते हिंसानो मारग न गणाय, । परंतु जेओने नयोना स्वरूपनी बरोवर खबर न पडतां मुजामण थाय तो, तेमणे ते आचारांगना पाठनेज वलगी रहेवुं, एम रस्तो पकडाववाथी, तेओ शुद्ध जैनमार्गना रस्ताथी अष्ट न बने, । बाकी केवल दया नामना धुवतारानुं, मुसल पकडावतां, उंधेरस्ते पडेलाने पाछो, उंधेज रस्ते चढाववा जेवुं थाय छे. ॥

कोइ अजाण पुछशे के, ते चारे दृष्टांतमां, द्यानो मार्ग ते क्यांथी आव्यो ! उत्तरमां जणाववानुं एज छे के, लाभाऽलाभनो विचार करतां, भगवाननी आज्ञा द्या वगरनी छेन नहीं ।। केमके १ मथम द्रष्टांतमां, दस्त रोकवा वाला साधने, महा व्या-धिना संकटमांथी, आज्ञा आपीने भगवंते बचावेलो छे. ॥

२ अने बीजा दृष्णोथी ता साधुने, अने वीजा स्थलना लोकोने नित्यवासना महा दृष्णोथी ता साधुने, अने वीजा स्थलना लोकोने साधुना दर्शनथी, तेमज तेना उपदेशे धर्मनी प्राप्तिथी, अनंत जन्म-मरणना भयथी पण बचावी, स्वपरनी द्याज विचारी छे. ॥

आ दृष्टांतमां विशेष विचारवानुं ए छे के, जे साधुए, सूक्ष्म अने बादर, बंबे प्रकारना जीवोनी हिंसानां पच्यवान. त्रिविधेत्रि-विधे, (अर्थात् मन, वचन, अने कायाथी करु नही, करावं नही, करताने भलो पण जान नहीं एम) करेलां छे. । एवा महा त्यागी साधुने पण, नदी उतरतां, दव्यपणाथी सृक्ष्म 'छ ए, कायना जीवो-नी विराधना थवा छतां पण, भविष्यकाळमां अनेक पकारनो लाभ जाणीने, भगवंते रजाज आपेली छे. (तेनो पाठ, आचारांग सूत्रना मूलमांज छे, अने तेनो उतारो, सम्यन्क श्रह्णयोद्धारना पा-छला भागमां, आपेलो छे. । तेथी अमोए लखीने बताच्यो नथी.) ज्यारे एवा महा त्यागीने पण, नदी उत्तरवाथी, लाभज गणेलो छे, तो पछी, जे गृहस्थो केवल बादर जीवोनी हिंसानां पचलान करी, संसारना अनेक प्रकारना सुखमां मग्न थइ, रात, अने दिन, सर्व प्र-कारना महा शस्त्ररूप तो, 'त्र्रिग्निनो' आरंभ करी रह्या छे, तेमज मणोभर पाणीने ढोली 'ऋप्कायना जीवोनो' पण घाण कहाडी रह्या छे. तेमज 'हरिकायनो' पण नाना प्रकारथी भोग करी रह्या छे,। ते सिवाय घर, हाट विगरेने बंधावतां समारतां 'त्रसकायना जी-वोनो पण आरंभ करी रह्या छे,। तेमज अनेक प्रकारना वेपार करतां पण त्रस कायना जीवोनी विराधनानो अंतज जणातो नथी,। एवी रीते सदाकालपणे 'क्रकायना' महा कुटामां बेटेला छे, तेवा गृहस्थोने, किंचित मात्रना आरंभवाला ' जिनपूजनमां, महा मृहताने धारण करी, हिंसा थाय छे, हिंसा थाय छे, एवो जुट्टो पोकार करी, । आ भवनो, तेमज परभवनो, सर्व भकारथी निस्तार करवा वाली, अने श्वेतांवर, दिगंवरना, लाखो आचार्यना एक मतथी, जैननां लाखो पुस्तको उपर सास्वता, तेमज असास्वता, जिनविंबना स्वरूपधी चडी चुकेली, अने अन्यमतना पुराणग्रंथादिकथी, असास्वती मितमाओ साक्षीरूपे थयेली, अने जूनी जमीनथी साक्षात्पणे जिन मूर्तियो बहार आवी भव्य पुरुषोने दर्शन आपी रहेली, एवा अलोकिक चमत्कार वाला, वीतरागदेवनी भक्तिथी, अष्ट करी, केवल वीतराग देवनीज निंद्या करवा वाला बनाववा, ए केवा धर्मियो समजवा,? । तेनो विचार करवानुं वाचकवर्गने सोंपी, दर्शने हुं मारा चालता बीजा विषयना विचारने वलगी पहुं छं ।।

र गुरुना आधीनमां रहेवाथी शिष्यने, तत्त्वज्ञान मले, अने तत्त्वज्ञानथी मोक्षनी प्राप्ति थाय, । वास्ते गुरुनी आज्ञामां शिष्यने रहेवुं, एवी भगवाननी आज्ञा छे, ते पण ते शिष्यनी दयाने माटेज छे, अने जे सामान्य मात्रना कार्यमां, मूहपणानुं मूसलु पकडी, गुरु भक्तिथी अष्ठ थयेलो छे, ते बीजा कया गृह तत्वोनो, अधिकारी बनवानो छे.? । अने ते तत्त्व बिनानो, एके भवनुं सार्थकपणुं करी शिक्वानोज नथी, ।। विचारी जोतां एज गति, अमारा ढूंढक भाइ-ईयोनी प्रथमथी थयेली चाली आवे छे, अने ते आज सुधी पण, मूहपणानुं मुसल हाथमां धरी, आपणे आप सर्वज्ञ बनी, पूर्वना महान महान आचार्योने पण, सर्वथा पकारथी तुल गणी, तेमनी निंदा करवानेज मंडी पढे छे. । अने ते आजकालना जन्मेला, अने सर्व प्रकारनी लालचवाला, । सर्व प्रकारथी तुल, अने महा विकल्हप,

मुद्दपणाथी पकडी राखेळा आपणा मुसळ ज्ञाननो, पथारो पाथरी, लोकोने, मोक्षमां पहोंचाडवाने, तत्पर थइ जाय छे. ?। आते कया प्रकारनी महा मूढता समजवी ?। अने ते महा प्रकाशी विपरीतोना वचनमां, केटली शुद्धता, अने सरलता, तेमज गंभीरता, आवेली छे ते, अमारा योजेला नेत्रांजनथी, तेमज आ तत्त्वाऽतत्त्वना विचारथी, वाचकवर्ग पण समजी लेको, तेथी अमो इहांपर वधारे लख्वं वंध करीये छीये।।।

।। ४ गोचरीमां लघुता, अने संयम घातादिकना ४२ दोष टालीने, काल वस्तते, वासी, विदल, त्याजीने भिक्षा करवी, विकाले भिक्षा न मळवाथी, आर्तध्यान,। अने वासी, विदलथी, आष्म परात्म घातथी, बचावी, भगवंते, साधुनी दयाज विचारी छे,।

एवी रीते साधुना विषयमां, जे जे भगवंतनी आज्ञा छे, ते ते विहारादिक केटलिक आज्ञामां, नय निक्षेपादिकना विषयथी अजान, स्थूल दृष्टिवालाने, अदृष्टिगत सूक्ष्म जीवोनी विराधना, व्यवहारदेष्टिथी मालम पडे छे, । परंतु ज्ञानी गुरुनी सूक्ष्मदृष्टिने वलगीने चालवावालाने, नडतर आवती नथी, अगर जो गुंचवण आवी पडे तोपण, "तमेय सच्चं" ए आचारांगना वाक्यने वलगी रही, अने महापुरुषोना करेला विचारने अनुसरी, चालवावाला पुरुषोने शुद्ध सकडना रस्ता उपर फरीथी चढी आवी जवानो संभव छे, परंतु जेओ सर्व महान् आचार्योने तुल गणी, महा मूढताना मुसलने हाथमां धरी, केवल कुर्त्तकोनाज मुसलने कुटवावाला छे, तेओने कोण समजावसे?। अने क्यारे समजसे? तेनो विचार तो कोइ अतिशय ज्ञानीज कही वतावे.।।

॥ एटछुं कही, साधुना विषयनां दृष्टांतोना विचारनी समाप्ति

करी, सामान्यपणाथी केटलांक, श्रावकना विषयनां दृष्टांत बतावी, मारा लेखनी पण समाप्तिज करीशः।।

इति हिंसा अहिंसा विषये साधु संबंधिक दृष्टांतिक विचारः

हवे श्रावक संबंधिक हिंसा चाहिंसा विषये ह ष्टांतिक विचार लखीने बतावीये छीए. ॥

॥ जुवोके-मूर्तिपूजक, अने दृंढक, श्रावकना विषयमां, संसार मुखार्थ थता, अनेक प्रकारथी छकायना कुटाना विषयने छोडीने, केवल धर्मनेज लगतां,। १ द्या धर्माश्रित, अने २ भक्ति धर्माश्रित,। करवा पडता आरंभथी पण, धर्मनीज रक्षा थवाना संभवनां, साधारणपणानां, केटलांक दृष्टांतो आपीने, पेला द्या नामना ध्रुवताराने पकडाववावालाए, केवल वीतराग देवनी भव्य मूर्तिनी भक्तिथीं, भव्य पुरुषोने श्रष्ट करवाने, धुतारापणुं करेलुं छे, एम खातरी करावीने आपीशः अने तेनो लेख पण सर्वथा प्रकारथी जुटोज थयेलो छे, एवी पण खातरी भव्य पुरुषोने थइ जसेः।

॥ दृष्टांतोनी नोंध नीचे प्रमागो ॥

ा १ जूवोक अनाथ, छुलां, लंगडां, रोगी, पशु तेमज पंखीओ विगर भुख्यांने, हरिकायनो आरंभ न गणतां, लीलो चारो पण नाखीने, अने तृषा पीडितने अपकायनो आरंभ न गणतां, काचु पाणी पाइने, द्याथी धर्मनी प्राप्तिने माटे श्रावको, तेमनी रक्षाज करे छे, अने श्रावकोनो ते धर्मज छे, अने ते लाभा ज्लाभना कारणवालो भगवंतनी आज्ञाथीज कराय छे, एम कोण कबूल नही करे ?। केमके अन पुने, पाण पुने, इत्यादि नव मकारना दानथी, श्रावकोने पुण्यनी प्राप्ति थवानुं सिद्धांतमां कहेलुंज छे. तथी श्रावकोना ते कर्तव्यनुं सार्थक

पणुंज छे. परंतु निर्श्यकपणुं नथी. । अने वर्त्तमानमां पण द्यां नामना धुवताराने वलगीने चालवावाला ढूंढकमांथी पण ढूंढकरीने बहार पडेला, एक तेरा पंथना धिटाओ विना, सर्व श्रावकोने चालुं-पणे वर्त्तन करता पण जोइये छीये. ॥

॥ इति प्रथम दृष्टांत ॥

॥ २ एज प्रमाणे भूष, अने तृषाथी, पीडाता माणसने, अतु-कंपा [दया] धर्मथी, अप्कायादिकनी विराधनानो विचार न करतां, भविष्यमां लाभाऽलाभना मुद्दावाली, भगवंतनी आज्ञाने अनुसरी, श्रावको तेनो सर्व प्रकारथी संतोषज करे छे.

।। इति १ दयाधर्माश्रित द्वितीय दृष्टांत ॥

॥ आ सूचना मात्र, बन्ने दृष्टांतोना दिग्दर्शनथी, "१ दया श्रित " धर्मनुं स्वरूप बतावी, हवे "२ भक्ति धर्माश्रित" दृष्टांतोना दिग्दर्शनथी, धर्मनुंज स्वरूप प्रगट करीने बतावीए छीए.

1। १ एक साधर्मीभाइ, कारणवशर्था, भूख्यो, अने तरस्यो, रसोइनो वखत वीत्या पछी, श्रावकनुं घरजाणीने आव्यो छे। अथवा अनेक साधर्मी भाइयो आव्या छे,। तो ते वखते साधर्मीयोनी भक्ति कर्षी, एवी भगवंतनी आज्ञाने अनुसरी, अपकाय, अग्निकाय, इ-रिकाय, आदिकना आरंभने गौणपणे करी, अने स्वामिभक्तिने मुस्यपणे करी, ते आवेला श्रावकोने प्रथम जलपानादिकथी संतोष कराबी, पछी स्नानादिकनुं निमंत्रण करी, अने छकायना कुटाने

पण गोणपण राखी, सर्व मकारथी नवीन रसोइ करावी, धर्मी श्रावक तो तेमनी भक्तिज करशे, तेपण धर्मनीज खातर करसे, । केमके गमेतेवी श्रावक होय, अने गमेतेवी अवस्थामां पडेलो होय, तोपण ते अनुकंपानुं पात्र थतो ज नथी परंतु भक्तिनुंज पात्र गणेलो छे, ॥ इति भक्तिधर्म आश्रित प्रथम दृष्टांत ॥

॥ २ साधुजीने, वीजेगाम वंदना करवा, टोछं मेळवीने जतां, अथवा पोहचाडवाने जतां, अथवा गामनी नजीक आवेलाने लेवा जतां, अथवा मोटी तपस्या करेला साधने वंदना करवा जतां, अथवा संथारो करेलो होय ते साधुने वंदना करवा जतां, गाडी, घोडा, बैल, विगरेनो अनेक प्रकारनो आरंभ लक्षमां लीधा वगर आपणो तरवानो मार्ग छे, एम समजीने, श्रावको, साधुनी भक्तिज करे छे, । साधुनी भक्ति करवी एवी भगवंतनी आज्ञा छे, तेपण लाभाऽलाभना कारण-वालीज छे, तेथी ते श्रावकोने, भगवंतनी आज्ञा प्रमाणे वर्त्तन करतां, अने तेमां आरंभ थवा छतां पण, ते कल्याण मार्गनाज पात्र बने छे. । परंतु दुर्गतिना पात्र बनता नथी. । एजपमाणे जि-नमूर्तिना पूजनमां, किंचित्मात्रनो आरंभ थवा छतां पण, भगवंतनी भक्ति श्रावकोए, द्रव्य, अने भाव, बन्ने प्रकारथी करवी, एवी भग-वंसनी लाभाऽलाभवाली आज्ञापमाणे, भक्ति करवावाला श्रावको, कल्याण मार्गनाज पात्र बने छे, । बाकी जे बीजा अनेक प्रकारना, रागी, देषी, देवोनी, मान्यता राखे, शीतला पूजे, गनमोर करे, इत्यादिक अनेक प्रकारथी केवल संसारना सुखार्थ, सर्वकुछ करे.। अने आपणा तरणतारण वीतरागदेवनी मूर्ति देखीने, जेम देवा-**धिष्टित परशुरामनो कुहाडो, क्षत्रियोने देखीने, बलवा लागी जतो** इतो तेम, वीतराग देव उपर द्वेषाधिष्टित हदयवाला थइ, हृदयमां

बलवाने लागीजाय तेज दुर्गतिना पात्र परे । बाकी संसारी लालचिवनाना भगवाननी भक्ति करवावाला तो, दुर्गतिमां जायज नहीं. ।। इति भक्तिधर्म आश्चित दितीयदृष्टांत ॥

॥ ३ चतुर्मासमां, अथवा कोंइ वखते शेषकालमां, एक गाममां स्थिति करीने रहेला पाँडत साधुने, अथवा तपस्वी साधुने, तेमज संधारो करेला साधुनें, अनेक गामना श्रावकोनां टोळां ने टोळां, बंदना करवाने रस्ताना अनेक प्रकारना आरंभने विसारीयइः केवल भक्तिनी खातरज, आवता आपणे जोइये छीये। अने साधुजी रहेला छे ते गामना श्रावको, अनेक गामधी, भक्तिने माटे आवेला श्रावकोना, बैल, घोडा, आदिना खानपाननी तजवीज करता पण जोइये छीये.। तेमज ते आवेला श्रावकोना, खानपाननी तजवीजमां, अप्कायनी विराधना न गणतां, पांणीनीतो कडाओ ने कडाओ मांडी देखे, । अने अग्निकायनी विराधना न गणतां, मोटा मोटा चूळाने चेतावी मुके छे, । अने इरिकाय विगरेनां मोटां मोटां पोट-लांने तो गणेलेज कोण! एवी रीते, छए कायनी विराधनाने, किंचित्मात्र पण ध्यानमां न लावतां, सर्वे प्रकारना सगवडनी साथे, केवल धर्मना आधीन थइ, भक्तिने माटेज करता जोइये छीये.। अगर जो तमो एम कहेवाने मागता होय के, साधुर्जीनी भक्तिना वश थइ, ते गामना श्रावको, आवेला श्रावकोनी भक्ति करे छे, तो ते तमारी मरंजीनी वात छे.। अगर जो एम कहेवा मागता होय के, साधर्मी भाइ घरे आवे तो, साधर्मीए साधर्मी भाइनी भक्ति अवस्य करवी, तेथीज ते आवेला साधर्मी भाइयोनी अमोए पण भक्ति करेली छे,। ए वातनो विचार, तमारी खुशी उपर छोडीदइ, अमो-तो एटलुंज कहीये छीये के, केवल धर्मनेवास्ते, भक्तिना आधीन थइ,

आवेला श्रावकोनी समवड करेली छे.। ते सिवाय बीजो एके प्रकार केहवानी समवड नथी.।।

॥ इति भक्तिधर्म आश्रित तृतीयदृष्टांत ॥

॥ ४ अने एवीज रीते, उपर बतावेला विषय प्रमाणे, जे गा-ममां, द्रव्य निक्षेपना विषयवालो, "दीचा महोत्सव" थाय छे, त गामना श्रावको, अनेक प्रकारना आरंभने नही गणता हुवा, आवेला श्रावकोनी सगवड पण, केवल धर्मनेज आधीन थइ करता जोइए छीए, । अने एज प्रमाणे " साधुना मरूगा " बाद, द्रव्यनिक्षेपना विषयरूप शरीरनो, दाह करवाने, भक्तिने वश थइ भगवानना श्ररी-रनो दाह करवाने भेगा थयेला, देवताओनी परे आवेला श्रावको, साधनी भक्तिने माटे, अनेक मकारना दुसाला, ते मृतक शरीर उपर, वर्षावी, सेंकडो रूपैयानो खरच करता पण, आपणे जोइए छीए.। अने अनेक प्रकारना आरंभने नहीं गणतां, आवेला श्रावकोनी भ-क्तिपण स्थायिक गामना श्रावकोने करता जोइए छीए. । अने ते मृतक शरीरने, बहार लड़ जवाने, मोटो खरच करी विमान बनावता पण जोइये छीये । परंतु तमारा, अने ढूंढनी पार्वतीना ल्लामुजन, " द्रव्यनिक्षेप " सर्वथा प्रकारथी " अवश्य " रूपे निरर्थक होत तो, मुर्त्तिपूजकोनी परे, दीक्षा वखते अने ते मृतक शरीरनी पाछळ, आटलो बधो आरंभ करता नही ! परंत तमोने पण अमो करता जोइये छीये, तेज द्रव्यनिक्षेपना सार्थक-पणानो मजबूत पुरावो छे॥

इति भक्ति धर्म त्राश्रित चतुर्थ द्रष्टांत ॥

हते अमो वधारे दृष्टांतो न आपतां, आपेला दिग्दर्शनरूप हप्रांतोनो, तात्पर्य जणावीये छीये, एमां तात्पर्य ए छे के, पथम साधुना
कर्त्तव्यो संबंधि, दृष्टांत चार वताव्यां हतां, तेमां द्रव्यनयनी अपेक्षाथी, किंचित्सात्र सृक्ष्म जीवोनी विराधना, द्रव्य मात्रना स्वरूपथी, थवा छतां पण, भगवंतनी आज्ञा प्रमाणे साधु वर्तन करे छे
तेथी, ते विराधक थता नथी. । पण जैन मार्गना आराधकज गणेला
छे. । आ वातथी विचार करो के, सर्व प्रकारे निरारंभी साधुशी
पण आपना कर्त्तव्योमां थती सृक्ष्म जीवोनी विराधना, टाली सकाती
नथी, तोपण, भगवंतनी आज्ञा प्रमाणे वर्त्तन करवाथीज, संसारना
अघोर दुःखथी मृक्त थवानो संभव छे, परंतु मृद्रपणाथी कल्पेला,
दया नामना धुव ताराने, वलगीने चालवा बालानो तो, निस्तार, तीन कालमां पण थवानो संभव जणातो नथी. ॥

हवे जूबो के सदाकाळ आरंभमांज बेटेला, श्रावकाश्रित आपेला हिंहांतोना विचारथी, प्रथम " द्या धर्माश्रित " वे हृष्टांत आप्यां हतां, तेमां पश्च, पंखीनी, रक्षामां, लाभाऽलाभना विचारथी, आपेली भगवंतनी आज्ञाने बाजु उपर मुकीने, अने ढूंढकपांथी पण ढूंढीने वहार पडेला, तेरा पंथीनीतरां, तुच्छपणाना विचारथी ते जीवोना संबंधे, आरंभ भरेला आगल पाछळना विचारने मनमां लाववावाला, अने केवळ दया नामना धुवताराने हिंह टेकीने चालवावाला, ते श्रावको कयाधर्मना अधिकारी वने तेम छे ? तेनो विचार करी जो जो, । अमो तो एज कहीये छीये के, सिद्धांतकारोना विचारथी बहार, दया नामना धुवतारानुं मुसल पकडीन, जुठा विचारमां उत्तरी, उंधे रस्ते पडेला छे, तेज विचारा, जैनधर्मना धोरीमार्गथी चुकेला, संत पुरुषोना दयाना पात्र बनेला छे.। एज प्रमाणे पुरुषाश्रित

आपेला "द्याधर्म " ना इष्टांतमां विचारी जो जो.

।। हवे " भक्ति आश्रित " धर्मना संबंधे आपेला दृष्टांतमां, विचार करीने किंचित् वताबुं छुं.।।

॥ भूख्या, अने प्यासाः आवेला, श्रावकोना प्रथम दृष्टांतमां जुवो के, सिद्धांतनी दृष्टिने छोडी दृइ, मृह पणाथी कल्पेला, द्या नामना ध्रवतारा तरफ टाष्ट्र टेकीने, अने तेओना संबंधे थतो आ-रंभ, आपणा कल्पेला जुदा विचारथी मनमां लावीने, चालवावाला छे तेनाथी, ते आवेला साधर्मि भाइयोनी, भक्ति पण वनी सकसे नहीं । अगर कोई लाज काजना हिसावधी करसे तो ते. साधर्मी भाइनी भक्तिनो लाभ मेळवी पण सकसे नहीं, । केमके कोइ प्रले के तमो, आटलो वधो आरंभ करी, आ वधी खटपट, सेना वास्ते क-रोछो ? । तो तेओ केवळ धर्मनाज संबंधवाली, खटपट करता छता पण, मुढ पणाथी कल्पेला, दया नामना धुवतारानी दृष्टिने कानी थवाना भयथी, विचार मुढ थइ, एवो उत्तर आपी देछे के. ए तो अमारो संसार खातो छे. । एम कही थवावाला ध-र्मना लाभने पण गमावी दे छे.। परंतु एवं नथी कही सकता के, भगवंतनी आज्ञा प्रमाणे आ धर्मनां कर्त्तव्यो करी. अमो अनेक प्र कारना आरंभमां बेठा छता, अमारा श्रावक पणानी फरज वजावी अमारा जन्म जीवतन्यतुं साफाल्य पणुं करी लइए छीए. । एज अमो तेओनी मृढतानुं, प्रथम चिन्ह समजीये छीए ।केमके अनेक प्रका-रना आरंभमां सदा काळ बेठेलाने, परोपकारना अने भक्तिना काममां किंचित् मात्रना आरंभथी, संसार खातो केहवा तप्तर थर्व, ते केवं सानपत गणवुं ? अने ते काममां, संसार खातानो हुं संबंध छे ? ॥ तेमज अनेक प्रकारना आरंभवाला संघ कहाडीने, साधुनां दर्शन क-रवा जतां, संसार खातानो हां संबंध छे. ?। अने एज प्रमाणे सा-धुने लेवा जतां, दीक्षा महोत्सवमां भेळा थतां, तेमज संथारा करेला

साधुनां दर्शन करवा जतां, तेमज मृतक साधुना शरीरनो दाह क-रवाने भेळा थतां. संसार खातानो सो संबंध छे! केमके साधनी अने साधर्मि भाइयोनी, भक्ति श्रावकोए करवी, एवी भगवंतनी आज्ञातं ओलंघन करी, मृहताथी दया नामना ध्रुव ताराना मुसलने पकडी, ज्यां त्यां धर्मना कर्तव्यो करतां पण, संसार खातो, संसार खातो, संसार खातो, कही भिट्टाइज पगट करो छो ? ए तमारी वात विचारशक्ति पामेलानी पंक्तिवाली तो नहीज गणाय, एवी विचार तमारेज करवो पडशे. परंतु अमारे करवानी जरुर नहीं पडे. केम के अमो तो जे जे उपर बतावेळां कार्यो परापकारनी दृष्टिथी, अ-थवा धर्मनी दृथिष्टी, करीये छीये ते भगवंतनी आज्ञा प्रमाणे करतां, अमारा जन्म जीवतव्यनी साफल्यताने माटेज करीये छीये. । एज प्रमाणे वीतरागनी भव्य मुर्त्तिनी, द्रव्य, अने भावथी, श्रावको पूजा करे छे ते पण, लोभ अने लालचिना, जन्म जीवतव्यनी साफल्यताने माटेज करे छे । वास्ते अमो कोइ रीतथी पण ठगाता नथी. । परंतु तेमनी भक्तिथी विपरीत थयेला छे तेज ठगाय छे.। इवे अमो आ विषयने न लंबावतां इहांपर समाप्ति करी आ ग्रंथनी पण समाप्तिज करीये छीये. । इत्यरुंपलवितेन. ॥ इतिश्री मद्विजयानंद सुरीश्वर लघुशिष्येनाऽमरमुनिना दया नाम्नः

भ्रुव तारा विषये दर्शितो विचारः समाप्तो जातः

॥ दुहा. ॥

॥ कर्यो छे आ ग्रंथमां, समिकत तनो विचार।
वली प्रमाण ने नयतनो, दरसाव्यो छे सार ॥ १ ॥
निक्षेपाना विषयमां, विविध बोध विस्तार।
किथो युक्ति प्रयुक्तिथी, भविजन आनंदकार ॥ २ ॥
दृंढक सिद्धांत कारना, समिकत सडसठ बोल ।
लखी बताव्या छे सही, तेनो करज्यो तोल ॥ ३ ॥
जिन मूर्तिना भक्तने, मूढ कहे मिध्यात्व ॥

निश्लेपाना अर्थमां, करीने खोटो ममत्व ॥ ४ ॥ तारो ध्रव आज्ञातनो, तेमां दया समाय ॥ मन कल्पित तारा थकी, धर्मधी श्रष्ट थवाय ॥ ५ ॥ जैन तत्त्वरूप नगर छे. द्वार छे तेनां चार । मुक्यां गृढ गृंथन करी, तेने ए अनुयोग द्वार ।। ६ ।। तेना अनुभव सारधी, ग्रंथ ते जानो उदार । परंपराना गुरु विना, न छहे तेनो सार ॥ ७ ॥ तेथी जगमां विस्तर्यो, गुरु महिमा विस्तार । गुरु दीवो गुरु देवता, गुरु विन घोर अंधार ॥ ८ ॥ अनुभवनाहि प्रमाणथी, कहे तेजानी सार ॥ अनुभव विन जे उचरे. तेतो जानो गमार ९ ॥ गृढ घणा जैन तत्त्व छे, दीठा प्रत्यक्ष जोय ॥ परंपराना गुरु विना, मारग न रुहे कोय ॥ १०॥ नम् गुरु ज्ञानी सदा, सूरी श्री विजयानंद ॥ तत्त्वामृतना पानथी, पाम्या परमानंद ॥ ११ ॥ तस्व नथी हुं जानतो, जान न कोइ विचार । गुरु वचन अवलंदीने, लख्या बोल बे चार ॥ १२ ॥ अमर जैनना तत्त्व छे, दोष रहित साक्षात । तत्त्वग्रही अमर थज्यो, छोडी पक्षनी वात ॥ १२ ॥ औगणीशोने चोसठी, विक्रम शाल रसाल । पुरण करी हर्षित थयो, विजयानंदनो बाह्र ॥ १४ ॥ आमलनेरा गामथी, उद्यम किथी एह। घुळीयामां पुरो कियो, ग्रंथ ए आनी नेह ॥ १५ ॥

अगाउथी चोपडीयोनी खरीदी करीने आश्रय आपनार उदार शहस्थोना नाम.

१००)	सा. दलपतदास नारायण के जेमणे आजे ब	
	थयां सर्वथा प्रकारथी चतुर्थ ब्रह्म व्रत धारण	
	छे तेमणे साधु साध्वीने भेट आपवा माटे र	
	छे. ठाम ठेकाणुं चोकस लखवाथी मोव	
	आवशे शहर डभोइनि	गसी.
(o)	साः बाल्जसा स्यामचंदः 🔻 💢 ढंढेरा तरे	ध्याम.
90)	सा. करणीराम गुलावचंद. इस्ते जोगीलालज	î.
,	स्नानदेश धू	
? ⊊)	सा. दानमल नथमलजी.	, ,
३५)	सा. मेघजी लालजी. मुंबइ म	ांडवी.
	१०) कंपनी खाते.	*
	- ९) साधु साध्वी माटे.	
२५)	सा. सोभाग्यचंद फतेचंदः अमर	ावती.
१५)	सा. दलीचंद कनकमल. दक्षिण अहमद	्नगर.
₹)	सा. व्रजलाल रायजी.	हभाइ.
६)	सा. चुनीलाल कस्तुर जीनवाला.	"
२)	सा. गुलाबचंद हरिलाल ढोलारीया.	"
१)	साः हरगोविंद वेणीदासः	15
२)	साः अमीचंद वेणीदासः	>5
२)	साः नाथाभाइ बीरचंदः	37
२)	सा. धनराज मतापमल जेतानावालाः फतेपुर	ताछुका

२)	सा नायाभाँई बेचर अमदावादी	जलगाम.
२)	सा, नेमचंद तलकचंद.	डभोइ.
२)	सा. गुलाबचंद रुपचंद.	,,
٦)	सा. करमचंद मोतीचंद.	"
२)	सा. मगनलाल मोइन्छाल.	"
()	सा. बाप्रभाइ लखमीचंद ढोलारीयाः	,,
१)	सा पीतांबर धरमचंदः)7
?)	साः छोटालाल वीरचंदः	, ,,
?)	साः पीतांबर बापूभाइः	19
?)	सा. गगनलाल जीवचंद	

सूचना—नर्वान लेखोनां दश बार फारमो वधी जवाथी किंमत आढ आना राखवी पढी छे, पण खचना प्रमाणथी ओछी ज राखेली छे.